राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
हिन्दुस्तान एक्सप्रेस
हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह
मध्यप्रदेश राजस्थान हरियाणा छत्तीसगढ़ महाराष्ट्र से प्रकाशित

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17
5 डी गुकेश कैंडिडेट्स चेस टूर्नामेंट जीतने वाले सबसे युवा खिलाड़ी
सम्पादकीय बेलगाम हथियार...
एपल 3 साल में 5 लाख भारतीयों को देगा नौकरी 5

वर्ष 11 अंक 57 E-mail: dholpur@hotmail.com जयपुर, मंगलवार 23 अप्रैल 2024 ई-पेपर के लिए लॉगऑन करें -www.hindustanexpress.online मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

सूरत में भाजपा बिना लड़े ही जीती कांग्रेस उम्मीदवार का नामांकन रद्द

8 अन्य प्रत्याशियों ने भी नाम वापस लिया

आर.एन.एस.

सूरत। लोकसभा चुनाव में भाजपा का खाता खुल गया है। गुजरात की सूरत लोकसभा सीट से सोमवार को भाजपा उम्मीदवार मुकेश दलाल निर्विरोध चुने गए। दरअसल यहां से कांग्रेस कैंडिडेट नीलेश कुंभाणी का पर्चा रद्द हो गया था। उनके पर्चे में गवाहों के नाम और हस्ताक्षर में गड़बड़ी थी। इस सीट पर भाजपा और कांग्रेस समेत 10 प्रत्याशी मैदान में थे। रविवार को 7 निर्दलीय कैंडिडेट ने अपना नामांकन वापस ले लिया था। बीएसपी कैंडिडेट प्यारे लाल भारती ही बचे थे, जिन्होंने सोमवार को पर्चा वापस ले लिया। इस तरह मुकेश दलाल निर्विरोध चुने गए।

कांग्रेस बोली- कानूनी लड़ाई लड़ेंगे

गुजरात कांग्रेस अध्यक्ष शक्ति सिंह गोहिल ने कहा, हमारी लीगल टीम सभी पहलुओं की पड़ताल कर रही है। कानूनी टीम इस बात पर विचार कर रही है कि पहले हाईकोर्ट में याचिका दायर की जाए या और फिर सीधे सुप्रीम कोर्ट से गुहार लगाई जाए। मुकेश निर्विरोध निर्वाचित होने वाले बीजेपी के पहले सांसद बने हैं। वहीं, गुजरात के चुनावी इतिहास में भी यह पहला मौका है, जब कोई सांसद बिना चुनाव लड़े ही जीत गया हो।

बीजेपी के पूर्व डिप्टी मेयर दिनेश जोधानी ने चुनाव आयोग से शिकायत की थी कि कांग्रेसी कैंडिडेट नीलेश कुंभाणी के पर्चे में प्रस्तावकों के फर्जी हस्ताक्षर करवाए गए हैं। डीईओ सौरभ पारधी ने 21 अप्रैल को इस मामले में स्पष्टीकरण मांगते हुए कुंभाणी को रविवार सुबह 11 बजे तक का समय दिया था। नामांकन पत्र रद्द करने को लेकर रविवार को कलेक्टर और चुनाव अधिकार के समक्ष सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान फॉर्म पर हस्ताक्षर करने वाले चारों प्रस्तावक भी नदारद थे। इसके चलते आखिरकार चुनाव अधिकारी ने नीलेश कुंभाणी का फॉर्म रद्द कर दिया।

ये सत्ता में आए तो लोगों के घर, गाड़ियां सोना कब्जे में लेकर बांट देंगे - पीएम मोदी

आर.एन.एस.

अलीगढ़। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को अलीगढ़ में जनसभा की। उन्होंने कहा, पिछली बार जब अलीगढ़ आया था, तब अनुरोध किया था कि सपा और कांग्रेस के परिवारवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण की फैक्ट्री में अलीगढ़ का ताला लगा दीजिए। आपने ऐसा मजबूत ताला लगाया कि दोनों शहजादों को आज तक इसकी चाबी नहीं मिल रही।

पीएम ने कहा, इंडी गठबंधन की नजर आपकी संपत्ति पर है। नौकरी-पेशा वाले लोगों ने अपने बच्चों के भविष्य के लिए जो एफडी करवाई है, वे लोग उसकी भी जांच कराने की बात कर रहे हैं। कांग्रेस इसका सर्वे कराएगी। फिर सरकार के नाम पर कब्जा करेगी। यह आपकी संपत्ति को छीनकर बांटने की बात कर रही है। कांग्रेस यहां तक जाएगी कि आपके गांव में पैतृक घर है, तो यह लोग उसे दो घर बताकर छीन लेंगे। कांग्रेस के लोग कहेंगे कि आपके पास गांव में तो एक घर पहले से ही है। इनकी यह सोच माओवादियों और कम्युनिस्टो की है। कांग्रेस और इंडी गठबंधन इसे भारत में लागू करना चाहती है। आपकी संपत्ति पर कांग्रेस अपना पंजा मारना चाहती है।

आपका स्त्री धन लूटना चाहती है। माताओं-बहनों का मंगलसूत्र अब सलामत नहीं रहेगा। यही कांग्रेस ने कहा है। इन परिवारवादी लोगों ने देश को लूटकर अपना इतना साम्राज्य बना लिया है कि देश को कुछ नहीं दिया है। अब इनकी नजर देश के लोगों की संपत्ति पर है। जनता के धन को लूटना, देश को लूटना ही कांग्रेस अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझती है।

अलीगढ़ लोकसभा सीट से भाजपा के प्रत्याशी सतीश गौतम और हाथरस से अनूप वाल्मीकि के समर्थन में पीएम मोदी ने 42 मिनट तक सभा को संबोधित किया। मोदी ने मंच से 'राधे-राधे' से संबोधन की शुरुआत की और बोलने के लिए जनता से इजाजत मांगी।

हाईकोर्ट ने बंगाल में 24 हजार शिक्षकों की नियुक्ति रद्द करने के दिये आदेश

फैसला गैरकानूनी, सुप्रीम कोर्ट जाएंगे - ममता बनर्जी

आर.एन.एस.

कोलकाता। कलकत्ता हाईकोर्ट ने सोमवार को 2016 में हुई शिक्षक भर्ती रद्द कर दी। इसके अलावा अवैध नियुक्ति पर काम कर रहे शिक्षकों से 7-8 साल के दौरान मिली सैलरी भी वापस लेने के निर्देश दिए। जस्टिस देवांग्शु बसाक और जस्टिस शब्बर रसीदी की बेंच ने कहा- कैंसर पीड़ित सोमा दास की नौकरी सुरक्षित रहेगी। पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग नई नियुक्ति प्रक्रिया शुरू करे।

हाईकोर्ट के आदेश को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने गैरकानूनी बताया है। उन्होंने कहा- हम उन लोगों के साथ खड़े रहेंगे जिनकी नौकरियां चली गईं।

भाजपा नेता न्यायपालिका के फैसलों को प्रभावित कर रहे हैं। इस फैसले के खिलाफ हम सुप्रीम कोर्ट जाएंगे। पश्चिम बंगाल सरकार ने 2014 में डब्लूबीएसएससी के जरिए सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों के लिए टीचिंग और नॉन टीचिंग स्टाफ भर्ती किया था। तब 24, 640 रिक्त पदों के लिए 23 लाख से अधिक लोगों ने भर्ती परीक्षा दी थी।

इस भर्ती में 5 से 15 लाख रुपए तक की घूस लेने का आरोप हैं। मामले में कलकत्ता हाईकोर्ट में कई शिकायतें मिली थीं। भर्ती में अनियमितताओं के मामले में सीबीआई ने राज्य के पूर्व शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी, उनकी करीबी मॉडल अर्पिता मुखर्जी और एसएससी के कुछ अधिकारियों को गिरफ्तार किया था।

मालदीव में भारत विरोधी मुइज्जू जीते संसदीय चुनाव

आर.एन.एस.

माले। मालदीव में इंडिया आउट कैंपेन चलाने वाले राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू की पार्टी संसदीय चुनाव में जीत की तरफ बढ़ रही है। शुरुआती रुझानों में कल (21 अप्रैल) 93 सीटों पर हुए चुनाव में अब तक 86 सीटों के नतीजे आ गए हैं। इनमें से 66 सीटों पर मुइज्जू की पीपुल्स नेशनल कांग्रेस जीती है। किसी भी पार्टी को बहुमत के लिए 47 से ज्यादा सीटों की जरूरत थी। नतीजों की आधिकारिक घोषणा में एक हफ्ते का समय लगेगा। मालदीव की संसद का कार्यकाल मई में शुरू होगा। न्यूज एजेंसी ृक्क के मुताबिक मुइज्जू की जीत भारत के लिए बड़ा झटका है। भारत और चीन की इस चुनाव पर कड़ी निगाह थी। दोनों रणनीतिक रूप से अहम मालदीव में अपनी पकड़ मजबूत करना चाहते हैं। मुइज्जू की पार्टी की जीत के बाद अब मालदीव में आने वाले 5 साल तक चीन समर्थक सरकार रहेगी।

पश्चिम बंगाल में सीएए लागू होने से कोई नहीं रोक सकता - राजनाथ सिंह

आर.एन.एस.

मालदा। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भाजपा अपने वादों को पूरा करती है और कहा कि पश्चिम बंगाल में सीएए के कार्यान्वयन को कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने कहा कि नागरिकता (संशोधन) अधिनियम 2019 किसी की नागरिकता छीनने के लिए नहीं है, बल्कि धार्मिक आधार पर पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से विस्थापित लोगों को भारतीय नागरिकता देने का कानून है।

मालदा उत्तर निर्वाचन क्षेत्र से भाजपा उम्मीदवार खगेन मुर्मू के समर्थन में एक रैली को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, ÷कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस या वामपंथी दल चुनाव के दौरान ऐसे वादे करते हैं जो पूरे नहीं होते हैं, लेकिन भाजपा अपने वादों को पूरा करती है।÷ उन्होंने जोर देकर कहा कि शेष भारत के साथ-साथ पश्चिम बंगाल में भी सीएए के कार्यान्वयन को कोई नहीं रोक सकता। सिंह ने कहा, ममता दीदी कहती हैं कि वह अपने राज्य में सीएए की अनुमति नहीं देंगी। वह पश्चिम बंगाल के लोगों को धोखा देने की कोशिश क्यों कर रही हैं। केंद्र ने 31 दिसंबर, 2014 से पहले भारत आए पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से बिना दस्तावेज वाले गैर-मुस्लिम प्रवासियों के लिए तेजी से नागरिकता प्रदान करने के लिए संसद द्वारा कानून पारित किए जाने के चार साल बाद मार्च में सीएए लागू किया था और नियमों को अधिसूचित किया था।

सिंह ने कहा कि पिछली सरकारों के विपरीत, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में भारत के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाता है। उन्होंने कहा, जब हम अंतरराष्ट्रीय मंच पर कुछ कहते हैं, तो उसे सम्मान के साथ सुना जाता है। उन्होंने कहा कि मोदी की प्रतिज्ञा 2047 तक भारत को एक विकसित देश बनाने की है।

राखी सावंत को अश्लील वीडियो मामले में करना होगा सरेंडर - सुप्रीम कोर्ट

आर.एन.एस.

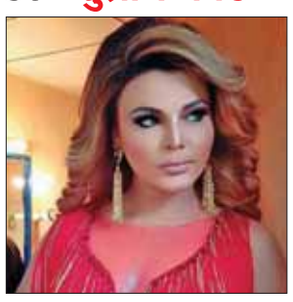

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेस राखी सावंत को सुप्रीम कोर्ट से बड़ा झटका लगा है। सुप्रीम कोर्ट ने राखी सावंत की ओर से दाखिल की गई अग्रिम जमानत याचिका पर सुनवाई से साफ इंकार कर दिया है। कोर्ट ने उन्हें 4 हफ्ते में निचली अदालत में सरेंडर करने को कहा है। दरअसल, बॉम्बे हाईकोर्ट से राखी को कोई राहत नहीं मिलने पर उन्होंने हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट से भी उन्हें झटका लगा है। एक तरफ जहां कोर्ट ने अग्रिम जमानत की मांग वाली याचिका खारिज कर दी है तो वहीं दूसरी ओर राखी सावंत को 4 हफ्तों में निचली अदालत में सरेंडर होने को भी कहा गया है। अब 4 हफ्ते के भीतर राखी को निचली अदालत मे सरेंडर करना होगा। अगर वो ऐसा नहीं करती हैं तो उनके साथ मुश्किलें और भी बढ़

सकती हैं।

क्या है मामला?

राखी पर उनके एक्स पति आदिल का कथित अश्लील वीडियो लीक करने का इल्जाम है। आदिल ने अपना वीडियो लीक करने का आरोप लगाकर राखी के खिलाफ एक स्न्नढ्ढक्र दर्ज करवाई थी। आदिल की शिकायत पर राखी पर ढ्ढक्क्ट की धारा 500, धारा 34 और धारा 67 ए (इलेक्ट्रॉनिक रूप में स्पष्ट अश्लील सामग्री प्रकाशित करना) के तहत मुकदमा दर्ज हुआ है।

निजी चिकित्सक से नियमित मुलाकात की केजरीवाल की मांग खारिज

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। दिल्ली के चीफ मिनिस्टर अरविंद केजरीवाल को राजधानी की राउज एवेन्यू कोर्ट से तगड़ा झटका लगा है. सीएम की अपने प्राइवेट डॉक्टर से शुगर की बीमारी को लेकर नियमित तौर पर कंसल्ट करने की याचिका को कोर्ट ने खारिज कर दिया है. अरविंद केजरीवाल की तरफ से नियमित इंसुलिन दिए जाने का अनुरोध किया गया था. इसपर जज ने कहा, 'एम्स के विशेषज्ञ डॉक्टरों की देखरेख में इसके लिए एक मेडिकल बोर्ड बनाया जाए जो इसपर फैसला लेगा।'

अरविंद केजरीवाल ने बीते दिनों राउज एवेन्यू कोर्ट का रुख किया था.

याचिका लगाकर दिल्ली के सीएम ने कहा था कि उन्हें शुगर की बीमारी है. गिरफ्तारी से पहले वो अपने प्राइवेट डॉक्टर से इसका इलाज करवा रहे हैं. सीएम का कहना था कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उन्हें अपने डॉक्टर से नियमित तौर पर कंसल्ट करने की इजाजत दी जाए. ईडी की तरफ से इसका विरोध किया गया था. ईडी का कहना था कि अरविंद केजरीवाल बेल प्राप्त करने के लिए भूमिका बना रहे हैं।

अहमदाबाद में एक साथ 35 लोग संन्यासी बने

आर.एन.एस.

अहमदाबाद। गुजरात के अहमदाबाद में जैन समुदाय ने एक विशाल समारोह का आयोजन किया। इसमें रिकॉर्ड 35 लोगों दीक्षा लेकर संन्यास की राह पर निकल पड़े। इनमें 10 बच्चे भी शामिल हैं। वहीं, दीक्षा लेने वालों में गुजरात के दिग्गज कारोबारी भावेश भंडारी भी शामिल हैं, जिन्होंने दीक्षा लेने के लिए अपनी करीब 500 करोड़ की संपत्ति दान की है।

जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर परमात्मा महावीर स्वामी के 2550 वर्ष के निर्वाण उत्सव के मौके पर अहमदाबाद के साबरमती तट पर 5 दिवसाय भव्य दीक्षा समारोह आयोजित किया गया। आज समारोह

का आखिरी दिन है। मुमुक्षुओं में गुजरात के नामी बिजनेसमैन भावेश भाई भंडारी और उनकी पत्नी भी शामिल हैं। भावेश भाई और उनकी पत्नी ने अपने बच्चों से प्रेरित होकर ही दीक्षा लेने का फैसला किया। भावेश भाई के बच्चों ने साल 2022 में ही दीक्षा ले ली थी। भावेश भाई ने दीक्षा लेने के लिए अपनी करीब 500 करोड़ की संपत्ति दान की है। इन 35 लोगों में दस की उम्र 18 साल से कम है। इनमें भी सबसे छोटा 11 साल का लड़का है। भिक्षुक बनने वाले किशोरों में सूरत के 13 वर्षीय हेत शाह भी हैं।

चीन में रिकॉर्ड बारिश और बाढ़ की चेतावनी!

आर.एन.एस.

शंघाई। चीन में आज (22 अप्रैल) भारी बारिश और बाढ़ आने की संभावना है। इसका असर दिखने भी लगा है। दक्षिण चीन के कई शहरों में 16 अप्रैल से हो रही तेज बारिश के चलते पानी भर गया है। 44 से ज्यादा नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। सिंगापुर की नेशनल न्यूज एजेंसी के मुताबिक बाढ़ के कारण अब तक 11 से ज्यादा लोग लापता हैं। वहीं भूस्खलन की घटनाओं में अब तक 6 लोग घायल हो चुके हैं। हालांकि, किसी के हताहत होने की अभी कोई खबर नहीं है।

लोकल प्रशासन लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए लगातार रेस्क्यू मिशन चला रहा है। अब तक 80 हजार से ज्यादा लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया जा चुका है। इमरजेंसी सेवाएं अलर्ट मोड पर हैं। बाढ़ के चलते अब तक 165 करोड़ रुपए का नुकसान हो चुका है।

इजराइल के मिलिट्री इंटेलिजेंस चीफ ने इस्तीफा दिया

हमास के हमले को नाकाम न कर पाने की जिम्मेदारी ली

आर.एन.एस.

जेरूशेलम। इजराइली सेना के खुफिया विभाग के चीफ मेजर जनरल अहरोन हलीवा ने इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने 7 अक्टूबर को हुए हमास के हमले को नाकाम न कर पाने की जिम्मेदारी लेते हुए अपना पद छोड़ा है। वे पहले सीनियर ऑफिसर हैं, जिन्होंने हमले को नाकाम न कर पाने की जिम्मेदारी लेते हुए पद से इस्तीफा दिया है। सेना ने अहरोन हलीवा के इस्तीफे को स्वीकार कर लिया है।

मेजर हलीवा ने सेना को दिए इस्तीफे में लिखा है, 7 अक्टूबर 2023 को हमास ने इजराइल पर घातक हमला किया था। उस हमले का पता लगाने में मेरे नेतृत्व में काम कर रही टीम नाकाम रही। तभी से मैं सीने में दर्द लेकर जी रहा हूं। इसलिए मैंने

फैसला किया है कि मैं अपने पद से इस्तीफा दूंगा। हमास ने 7 अक्टूबर को इजराइल पर 5 हजार से ज्यादा मिसाइल्स और ड्रोन्स से हमला किया था। इस हमले में इजराइल के मुताबिक 1 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। वहीं हमास ने 250 से ज्यादा लोगों को बंदी बना लिया था। यह हमला पिछले कुछ इजराइल पर अब तक हुए सबसे बड़े हमलों से एक था, जिसे रोकने में इजराइली सेना नाकाम रही थी।

सीरिया में अमेरिकी फौज के ठिकानों पर हमले

निनेवेह। इजराइल- ईरान में चल रहे तनाव के बीच रविवार रात सीरिया में अमेरिकी फौज के ठिकानों पर हमले हुए हैं। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक ये हमला इराक से किया गया। इराक की सिक्योरिटी फोर्सेस के मुताबिक अमेरिका के मिलिट्री बेस पर निनेवेह इलाके से 5 रॉकेट दागे गए फिलहाल हमला करने वालों को पकड़ने के लिए सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के मुताबिक हमले का आरोप इराक में ईरान समर्थित समूह कातिब हिजबुल्लाह पर है, जो इराक से अमेरिकी फौज को बाहर करना चाहता है।

हाल ही में इराक के प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया अल सुदानी अमेरिका के दौरे पर गए थे। इस दौरान उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति से मांग की थी कि वो इराक से अपनी फौज को निकाल लें। इराक के मिलिट्री अधिकारियों के मुताबिक, सीरिया से इराक के शहर जुम्मार में एक छोटे ट्रक से रॉकेट लॉन्च किए गए। इस दौरान जिस ट्रक पर रॉकेट लॉन्चर रखा हुआ था ।

सुप्रीम कोर्ट ने 30 हफ्ते की गर्भवती को गर्भपात की इजाजत दी

नाबालिग दुष्कर्म पीड़िता की अर्जी पर कोर्ट का आदेश

आर.एन.एस.

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने 14 साल की रेप विक्टिम को करीब 30 हफ्ते की प्रेग्नेंसी में अबॉर्शन कराने की इजाजत दे दी है। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार (22 अप्रैल) को मुंबई के लोकमान्य तिलक अस्पताल को तत्काल अबॉर्शन के लिए इंतजाम करने का आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने 19 अप्रैल को इस मामले में अर्जेंट सुनवाई की थी, जिसमें कोर्ट ने लड़की का मेडिकल कराने का आदेश दिया था। आज सुबह 10.30 बजे अस्पताल ने सुप्रीम कोर्ट में अपनी रिपोर्ट दाखिल की।

चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस जेबी पारदीवाला की बेंच ने आदेश सुनाते हुए कहा- हम अबॉर्शन की इजाजत इसलिए दे रहे हैं, क्योंकि यह असाधारण मामला है। हर घंटा विक्टिम के लिए अहम है। बेंच ने कहा- मेडिकल रिपोर्ट में साफ कहा गया है कि प्रेग्नेंसी जारी रखने से विक्टिम की मेंटल और फिजिकल हेल्थ पर असर पड़ेगा। हालांकि, रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि अबॉर्शन कराने में थोड़ा रिस्क तो है, लेकिन प्रेग्नेंसी जारी रखने में और भी बड़ा रिस्क है।

दरअसल, नाबालिग की मां ने पहले बॉम्बे हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। 4 अप्रैल को बॉम्बे हाईकोर्ट ने नाबालिग को अबॉर्शन की इजाजत नहीं दी। इसके बाद लड़की की मां ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका डाली थी। सुप्रीम कोर्ट ने 19 अप्रैल को हाईकोर्ट के फैसले को खारिज करते हुए नाबालिग का मेडिकल चेकअप कराने का आदेश दिया था।

अक्षेंद्र वेलफेयर सोसायटी का परिंदों के लिए परिंडा अभियान

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। अक्षेंद्र वेलफेयर सोसायटी द्वारा रावत एजुकेशनल ग्रुप के सहयोग से परिंदों के लिए परिंडे अभियान का प्रारंभ पूरे हर्षोल्लास से किया गया। रावत पब्लिक स्कूल प्रताप नगर के 100 से अधिक विद्यार्थियो ने विद्यालय के समीप पार्क में परिंडे लगाए,पौधे लगाए एवम पक्षियों को दाना दिया। वर्ल्ड अर्थ डे पर आयोजित इस कार्यक्रम में अर्थ को सेव करने एवम पर्यावरण सुरक्षा की शपथ ली गई। कार्यक्रम में अक्षेंद्र वेलफेयर सोसायटी के 100 से अधिक मेंबर्स भी शामिल हुए। रावत एजुकेशनल ग्रुप के चेयरमैन एवम अक्षेंद्र वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष श्री बी एस रावत ने सभी को इस पवन कार्य में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रसिद्ध समाजसेवी एवम स्किल डेवलपमेंट स्पेशलिस्ट मधुसूदन दाधीच ने भी अभियान में अधिक अधिक भागीदारी की अपील की। रावत एजुकेशनल ग्रुप के निदेशक एवम अक्षेंद्र वेलफेयर सोसायटी के सचिव नरेंद्र सिंह रावत ने बताया कि अक्षेंद्र वेलफेयर सोसायटी द्वारा प्रतिवर्ष परिंदों के लिए परिंडा अभियान चलाया जाता है। गत वर्ष भी 21000 परिण्डो के अभियान को सफलता पूर्वक चलाया गया था। उन्होंने बताया इस वर्ष भी संस्था के 500 से अधिक कार्यकर्ता अभियान को सफल बनाने का मास्टर प्लान बना चुके हैं। आज के कार्यक्रम में अक्षेंद्र वेलफेयर सोसायटी के एक्टिव मेंबर धर्मेंद्र ज्ञानानी, के एल भूरानी,मधु भूरानी,अमित शर्मा ने आमजन से भी अपील की कि अधिक से अधिक संख्या में वो इस कार्यक्रम में सहयोग दे। कार्यक्रम के अंत में रावत पब्लिक स्कूल,प्रताप नगर को प्राचार्या मैत्रेयी शुक्ला ने बच्चों को अधिक से अधिक परिंडे लगाने के लिए प्रोत्साहित किया।

देश में घरेलू एलपीजी गैस सिलेंडर का बड़े स्तर पर अवैध इस्तेमाल

ग्राहक दक्षता कल्याण फाउंडेशन ने जताई कार्यवाही की जरुरत

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। शहर में कमर्शियल गैस सिलेंडर की जगह पे 60% घरेलू गैस सिलेंडर का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है। होटल व रेस्टोरेंट जैसे खाद्य कारखानों में कराए गए सर्वे रिपोर्ट को रसद विभाग के अधिकारियों को भेजी गई मगर उसे पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। ग्राहक दक्षता कल्याण फाउंडेशन की ओर से पिंकसिटी प्रेस क्लब में सोमवार को आयोजित प्रेस वार्ता में घरेलू एलपीजी उपभोक्ताओं को अपने अधिकारों के लिए जागरूक किया गया। फाउंडेशन के कार्यकारी संचालक शुभम रंगारी ने बताया कि घरेलू सिलेंडर में से कमर्शियल गैस सिलेंडर में बांसुरी के माध्यम से गैस रिफिल की जाती है। इसमें ब्लास्ट होने का खतरा बहुत अधिक होता है। इसमें जनहानि के साथ-साथ सरकारी कर की भी हानि होती है। घरेलू एलपीजी पर 5त्न जीएसटी लगती है, वहीं कमर्शियल पर 18त्न जीएसटी लगती है। अवैध रूप से रिफिल करके सरकार को 13% जीएसटी की हानि हो रही है। घरेलू एलपीजी उपभोक्ताओं के अधिकारों की जागृति के लिए फाउंडेशन कार्यक्रम हमेशा कार्यरत है । सरकारी आंकड़ों के अनुसार एक परिवार में करीब 5 से 6 गैस सिलेंडर का इस्तेमाल प्रति वर्ष होता है। जब इस डेटा की सत्यता जांचने के लिए जांच की गई और उज्ज्वला योजना के उपभोक्ताओं का सर्वेक्षण किया गया, तो उस सर्वेक्षण में औसतन 80 प्रतिशत नागरिकों ने कहा कि वे 3 से 4 गैस सिलेंडर का उपयोग करते है। 15 प्रतिशत नागरिक मात्र 6 से 8 गैस सिलेंडर का उपयोग करते है । गैस के दाम बढ़ने से 5 फीसदी लोग 2 से 3 सिलेंडर ही इस्तेमाल कर रहे हैं। लेकिन, उस ग्राहक के बाकी गैस सिलेंडर वितरक ऑटो बुकिंग कर कालाबाजारी कर रहे हैं और इस अवैध बिक्री से मोटी रकम कमा रहे हैं। वे इस व्यवसाय को एकाधिकार के रूप में चला रहे हैं। यह देश के लिए हानिकारक है। विभागीय प्रमुख संघ के चित्रांशी सिह ने बताया कि देश में एलपीजी सिलेंडर की उचित बिक्री के उद्देश से केंद्र सरकार ने हाल ही में कुछ कदम उठाए है, लेकिन इसकी गती काफी धीमी है। सिलेंडर प्रबंधन के मामले में, क्यूआर कोड-आधारित ट्रैक एड ट्रेस को समाधानों में से एक के रूप में पहचाना जाता है। क्यूआर कोड-आधारित प्रणाली की अवधारणा का प्रमाण प्राप्त करने के लिए, ओएमसीएस ने विभिन्न प्रमुख तकनीकी संस्थानों, परीक्षण संस्थानों और क्यूआर के साथ परामर्श किया है। मोबाइल हैंडसेट और क्यूआर कोड स्कैनर के जरिए कोड स्कैनर के मुद्दे पर विशेषज्ञों की राय ली गई है। इस प्रेस वार्ता में शुभम रंगारी कार्यकारी संचालक राज्य प्रमुख यश देशपांडे, अक्षय कुमार मिश्रा, विनय पांडे और विभाग प्रमुख चित्रांश सिह मुख्य रूप से उपस्थित थे !

आरटीई पुर्नभरण राशि के लिए शासन सचिव को ज्ञापन सौंपा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। स्वयंसेवी शिक्षण संस्थान संरक्षण समिति जयपुर का प्रतिनिधिमंडल ने अध्यक्ष भूपराम शर्मा के नेतृत्व में शासन सचिव (स्कूल शिक्षा) श्री कृष्ण कुणाल से बकाया आर टी ई की पुनर्भरण राशि के अति शीघ्र भुगतान तथा प्री प्राइमरी कक्षाओं में प्रवेश तथा सरकार द्वारा पुनर्भरण राशि का भुगतान न करने की समस्या से अवगत कराया। माननीय सचिव महोदय ने पुनर्भरण राशि के भुगतान में बिलंब को स्वीकार किया तथा बताया कि अति शीघ्र भुगतान करवाया जायेगा और भविष्य इस प्रकार की समस्या नहीं आने दी जाएगी।

सत्र 2023-2024 से निशुल्क प्रवेशित प्री प्राइमरी कक्षाओं की पुनर्भरण राशि के भुगतान के बारे में कहा यदि किसी भी राज्य में प्री प्राइमरी कक्षाओं की पुनर्भरण राशि का भुगतान हो रहा है तो उसका प्रमाण शीघ्र उपलब्ध करवाओ जिससे मैं आपका पक्ष सरकार के समक्ष रखूंगा और आपको भुगतान करवाने का प्रयास करूंगा।

विश्व पृथ्वी दिवस का सफल आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। एमपीएस इंटरनेशनल विद्यालय में विश्व पृथ्वी दिवस का आयोजन किया गया प्रार्थना सभा में कक्षा प्रथम व द्वितीय के छात्रों ने नृत्य व कविताएँ प्रस्तुत की और कक्षा 8 के विद्यार्थियों ने पृथ्वी के पंच तत्वों का महत्व बताते हुए नृत्य नाटिका प्रस्तुत की । छोटे-छोटे बच्चों द्वारा पृथ्वी को बचाने के संदर्भ में जागरूकता लाने के लिए रैली निकाली गई । विद्यालय में कक्षानुसार विविध गतिविधियों जैसे पोस्टर बनाओ ,घोंसला बनाओ, बर्ड फीडर, बेस्ट ऑउट ऑफ वेस्ट, आदि का सफल आयोजन किया गया । विद्यार्थियों द्वारा सॉफ्ट बोर्ड सजाओ प्रतियोगिता के अंतर्गत रंग-बिरंगे बोर्ड सजाते हुए पृथ्वी बचाओ का संदेश दिया गया । विद्यालय उप - प्राचार्या ने पृथ्वी संरक्षण का संदेश देते हुए विद्यालय को भी प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए प्लास्टिक की बोतलों और लंच बॉक्स को स्टेनलेस स्टील से बदलने एवं किताबों कॉपियों को ढकने के लिए प्लास्टिक कवर के बजाय कागज और शीट का उपयोग करने साथ ही प्लास्टिक की खपत को कम करने के लिए नवीन समाधान खोजने में विद्यार्थियों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया ।

जीएसएलसी- वर्ष 2023-24 के लिए एडुलेजेंड अवॉर्ड से सम्मानित

शिक्षा के क्षेत्र में अपने अनुकरणीय योगदान के लिए डॉ जयश्री पेरीवाल सम्मानित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। ग्लोबल स्कूल लीडर्स कंसोर्टियम द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान के लिए डॉ. जयश्री पेरीवाल को होटल लीला एंबियंस, गुडगांव में जीएसएलसी-वर्ष 2023-24 के लिए एडुलेजेंड अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह अवॉर्ड एम्बेसेडर डॉ. दीपक वोहरा, भारत और अफ्रीका में मेड इन भारत के विशेष सलाहकार, प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के विशेष सलाहकार और संस्थापक और सीईओ ग्लोबल स्कूल लीडर्स कंसोर्टियम, श्री पंकज शर्मा द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर डॉ जयश्री ने कहा यह अवॉर्ड पाकर मैं बहुत ही सम्मानित महसूस कर रही हूं। शिक्षा के माध्यम से हम स्वयं के साथ-साथ देश की प्रगति और विकास में अहम भूमिका निभा सकते हैं। एक शिक्षाविद के रूप में हमारा प्रयास रहा है कि प्रत्येक बच्चे को किताबी शिक्षा के साथ-साथ बाहरी दुनिया का भी ज्ञान प्राप्त हो। उन्हें जीवन में इतना सक्षम बनाना है कि वे जिस भी क्षेत्र में कदम रखें, वहां आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े और सफलता हासिल करें। मैं अपने स्टूडेंट्स को उनके लक्ष्य हासिल करने के लिए सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर हूं।

गौरतलब है कि डॉ जयश्री जयपुर के जयश्री पेरीवाल इंटरनेशनल स्कूल (जेपीआईएस) की चेयरपर्सन हैं। इसके अतिरिक्त, वे जयपुर शहर के दस स्कूलों की संस्थापक, निदेशक और प्रिंसिपल भी हैं। पूरे प्रदेश की शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने और एक नए मुकाम तक पहुंचाने में डॉ. पेरीवाल का सराहनीय योगदान रहा है।

श्रील प्रभुपाद आश्रय समारोह का आयोजन

सैकड़ों भक्तों ने श्रील प्रभुपाद की शरण ग्रहण की

कोटपूतली । हरे कृष्ण मूवमेंट जयपुर द्वारा हरे कृष्ण सांस्कृतिक केंद्र, हरे कृष्ण मार्ग, जगतपुरा जयपुर के सुधर्मा हॉल में सोमवार को श्रील प्रभुपाद आश्रय समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सैकड़ों भक्तों ने भगवान श्री कृष्ण के शुद्ध भक्त एवं प्रतिनिधि, ब्रह्म मध्य गौड़ीय परम्परा के वर्तमान आचार्य और विश्वव्यापी हरे कृष्ण आंदोलन के संस्थापक श्रील प्रभुपाद की शरण ग्रहण की। भक्तों ने भक्ति से भरे हृदय से विभिन्न स्तरों पर अपनी प्रतिबद्धता की प्रतिज्ञा की जो कृष्ण भक्ति के मार्ग के प्रति उनके समर्पण का प्रतीक है। उल्लेखनीय है कि विगत रविवार को राजधानी जयपुर के जगतपुरा स्थित श्री कृष्ण बलराम मंदिर में श्रील प्रभुपाद आश्रय समारोह का आयोजन किया गया था। जिसमें भक्ति मार्ग की परीक्षा एवं इंटरव्यू पास कर चुके 370 लोगों ने इस मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा ली थी।

12 सीटों पर वोटिंग घटने से दिग्गज टेंशन में, 32 विधानसभा-क्षेत्रों में 20 प्रतिशत से ज्यादा घटा मतदान

इसमें 19 भाजपा और 11 कांग्रेस के पास

कोटपूतली । राजस्थान में लोकसभा की 12 सीटों (श्रीगंगानगर, बीकानेर, चूरू, नागौर, झुंझुनूं, सीकर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, अलवर, भरतपुर, दौसा, करौली-धौलपुर) पर हुए कम मतदान ने बीजेपी-कांग्रेस के दिग्गजों की चिंता बढ़ा दी है। 12 लोकसभा सीटों में आने वाली 96 विधानसभा सीटों पर वोटिंग 17 प्रतिषत कम हुई है। इनमें से 32 विधानसभा सीट ऐसी है, जहां मतदान विधानसभा चुनाव के मुकाबले 20 फीसदी से ज्यादा घटा है। इसमें 19 सीट भाजपा, 11 कांग्रेस और 2 अन्य के पास है। इनमें बालकनाथ की तिजारा, देवी सिंह भाटी की कोलायत जैसी हाईप्रोफाइल सीट भी शामिल हैं। एक हकीकत यह भी है कि जहां से दिग्गजों ने बंपर वोट हासिल किए थे, वहां कम वोटिंग से उनकी मुश्किलें बढ़ गई हैं। नागौर लोकसभा सीट में ज्योति मिर्धा नागौर विधानसभा सीट से चुनाव लड़ी थीं, उससे कम मतदान हनुमान बेनीवाल की सीट खींवसर पर हुआ है। हॉट सीट चूरू के तारानगर विधानसभा क्षेत्र से बीजेपी के दिग्गज राजेंद्र राठौड़ चुनाव हारे थे, वहां सबसे ज्यादा वोटिंग हुई है। हालांकि ओवरऑल वोटिंग प्रतिशत गिरा है। ऐसा ही हाल, सीएम भजनलाल शर्मा, डिप्टी सीएम दीया कुमारी, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली, कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, सरकार के मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़, संजय शर्मा, झाबरसिंह खर्रा से लेकर वरिष्ठ विधायकों की सीटों पर भी देखने को मिल रहा है।

पहले चरण के मतदान प्रतिशत के आंकडे

जयपुर ग्रामीण की आठ विधानसभा सीटों में उद्योग मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड की सीट झोटवाड़ा में विधानसभा चुनावों की तुलना में सबसे कम 11.93 प्रतिषत वोटिंग गिरी है, जबकि सचिन पायलट समर्थक कांग्रेस विधायक मनीष यादव की सीट शाहपुरा में सबसे ज्यादा 25.84 प्रतिषत की गिरावट आई है। शाहपुरा सीट पर विधानसभा चुनावों में रिकॉर्ड 83.83 प्रतिषत वोट पड़े थे, जो अब घटकर 57.99 प्रतिषत रह गए। झोटवाड़ा में विधानसभा चुनाव में 71.51 प्रतिषत वोट पड़े थे, जो अब 59.59 प्रतिषत पर आ गए। जयपुर ग्रामीण लोकसभा की आठ में से 5 सीटों पर बीजेपी और तीन पर कांग्रेस के विधायक हैं। बीजेपी विधायक की बानसूर सीट पर तो आधे वोट भी नहीं पड़े। यहां 49.10 प्रतिषत वोट पड़े, जबकि विधानसभा चुनाव में यहां 71.24 प्रतिषत वोटिंग हुई थी। कोटपूतली और विराटनगर में भी बीजेपी विधायक हैं। इन सीटों पर भी 53 प्रतिषत के आसपास वोटिंग हुई है।

बेटा-बेटी एक समान होने का समाज में दिया संदेश, बेटियों को घोड़ी पर बैठाकर निकाली बिंदौरी

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

चौमूं। उपखंड क्षेत्र के गोविंदगढ़ इलाके के मलिकपुर गांव में दो बेटियों को घोड़ी पर बैठाकर विवाह बिंदौरी निकाली गई। वही सामाजिक सरोकार और अच्छी पहल का मैसेज देने के लिए इस पहल की शुरुआत की गई। और इसी को लेकर मलिकपुर निवासी गणपत लाल जाट ने अपनी दोनों पौत्री व पुलिस एएसआई रामलाल जाट ने बेटा बेटी एक होने का समाज में संदेश देते हुए अपनी दोनों पुत्रियों की शादी समारोह में घोड़ी पर बैठाकर विवाह बिंदौरी निकाली गई। यह बिंदौरी शहर के लक्ष्मीनाथ महाराज के मंदिर से रवाना होकर निवास स्थान तक पहुंची। वहीं गांव में पुलिसकर्मी एएसआई रामलाल जाट के इस सराहनीय पहल की लोगों ने काफी प्रशंसा की। इस मौके पर एएसआई रामलाल जाट ने कहा कि

समाज में बेटा-बेटी में कोई फर्क ना समझे। इसी उद्देश्य को लेकर यह विवाह बिंदौरी निकाली गई है। और इसके माध्यम से ही समाज में एक अच्छा संदेश जाएगा। इस दौरान परिवार के मौजूद लोगों ने विवाह बिंदौरी का पुष्पवर्षा के साथ स्वागत किया।

हनुमान जन्मोत्सव पर चित्रा नक्षत्र का संयोग मंगलकारी आज

कोटपूतली क्षेत्र के हनुमान मंदिरों में सुंदरकांड और हनुमान चालीसा के पाठ होंगे

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

कोटपूतली । मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के परम भक्त और पवनपुत्र हनुमानजी की जयंती इस बार विशेष संयोगों के साथ मनाई जाएगी। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक, हर साल चैत्र माह की पूर्णिमा तिथि के दिन हनुमान जयंती मनाई जाती है। संकटमोचन हनुमानजी की जयंती 23 अप्रैल मंगलवार को मनाई जाएगी। जिलेभर के हनुमान मंदिरों में संगीतमयी सुंदरकांड और हनुमान चालीसा के पाठ होंगे। खास बात यह है कि इस बार हनुमान जयंती मंगलवार के दिन आ रही है और मंगलवार बजरंगबली का प्रिय दिन होता है, इसलिए जयंती का महत्व कई गुना बढ़ गया है। वहीं, ग्रह योगों के कारण भी अद्भुत संयोग बन रहा है, जिसकी वजह से हनुमान जयंती बहुत खास रहेगी। हनुमान जयंती पर जिलेभर के हनुमान मंदिरों में धार्मिक कार्यक्रम होंगे। पंडित लक्ष्मीनारायण शर्मा ने बताया कि हनुमान जयंती की सुबह जल्दी स्नान करके केसरिया या लाल रंग के कपड़े पहनें। यदि व्रत रख रहे हैं, तो बजरंगबली का स्मरण करते हुए व्रत का संकल्प लें। इसके बाद हनुमानजी के मंदिर जाकर उनकी प्रतिमा पर सिंदूर लगाएं। उन्हें विधि-विधान से पूजा सामग्री अर्पित करें, हनुमान चालीसा पढ़ें, बजरंग बाण का पाठ करें। आखिर में आरती अवश्य करें, बजरंगबली की पूजाघर पर भी तस्वीर स्थापित करके कर सकते हैं। हनुमान जयंती के दिन हनुमानजी के मंत्रों का जाप करना बहुत लाभ देगा।

इस साल हनुमान जयंती के दिन चित्रा नक्षत्र और वज्र योग है। इस साल चैत्र शुक्ल पूर्णिमा तिथि का प्रारंभ 23 अप्रैल दिन मंगलवार को तड़के 3 बजकर 25 मिनट पर होगा। जिसकी समाप्ति 24 अप्रैल दिन बुधवार को सुबह 5 बजकर 18 मिनट पर होगा। उदयातिथि के अनुसार हनुमान जयंती 23 अप्रैल मंगलवार को ही मनाई जाएगी।

चित्रा नक्षत्र के स्वामी मंगल

पंडित अनुज शास्त्री ने बताया कि वज्र योग 23 की सुबह से लेकर 24 अप्रैल को सुबह 4 बजकर 57 मिनट तक रहेगा। चित्रा नक्षत्र भी इसी दिन सुबह से लेकर रात 10 बजकर 32 मिनट तक है, उसके बाद स्वाति नक्षत्र शुरू हो जाएगा। चित्रा नक्षत्र के स्वामी मंगल हैं और हनुमानजी का प्रिय दिन भी मंगलवार है। वहीं, दूसरी ओर वज्र योग साहस, बल और पराक्रम का परिचायक है। ऐसे में मंगलवार के दिन, चित्रा नक्षत्र और वज्र योग में हनुमानजी का जन्मोत्सव मनाना बड़ा ही शुभ होगा।

जयपुर कॉर्पोरेट प्रीमियर लीग में एल्गो रॉयल्स ने जीता प्लैटिनम कप

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। जयपुर कॉर्पोरेट क्रिकेट एसोसिएशन की ओर से आयोजित जयपुर कॉर्पोरेट प्रीमियर लीग और कॉर्पोरेट का विश्व कप क्रिकेट चैम्पियनशिप के फाइनल मैच पीएस एरेना में खेले गए। मैच विनर्स को चीफ गेस्ट आईपीएस अंशुमन भोमिया और गेस्ट ऑफ ऑनर इंटरनेशनल क्रिकेट प्लेयर पंकज सिंह ने मेडल्स और ट्रॉफी दी। कॉर्पोरेट का विश्व कप के फाइनल मुकाबले में डॉयचे बैंक ने हीरो सीआइटी को 10 विकेट से हराया। मैच में कप्तान रविंद्र जांगिड को मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया। वहीं जयपुर कॉर्पोरेट प्रीमियर लीग में प्लैटिनम कप के बेहद रोमांचक फाइनल में एल्गो रॉयल्स ने अल्फा वारियर्स को 2 विकेट से हराया। कप्तान गौरांग अग्रवाल ने बताया कि राहुल चौधरी मैन ऑफ द मैच रहे। दूसरे फाइनल गोल्ड कप में सिटी थंडर ने बिगी ईगल्स को 68 रन से हराया। मैच में नजीम मैंसुरी को मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला। सिल्वर कप के फाइनल मुकाबले में स्मैशर्स टीम ने दी वारियर्स टीम को 31 रन से हराया। आरिफ अहमद को मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया। जयपुर कॉर्पोरेट प्रीमियर लीग की फेयर प्ले ट्राफी इस बार वृंदा क्रिकेट क्लब ने जीती।

108 कुंडी रुद्र महामृत्युंजय महायज्ञ में दी आहुति

365 दिनों तक हुआ आयोजन, पूजा-अर्चना के साथ होगा सत्संग

कोटपूतली । कोटपूतली क्षेत्र के बाबा बालनाथ आश्रम बावडी मंदिर प्रांगण मे बाबा बस्तीनाथ महाराज के सान्निध्य में एक वर्ष तक चलने वाले 108 कुंडीय रुद्र महामृत्युंजय महायज्ञ के अंतर्गत 72 यज्ञों की श्रृंखला मे द्वितीय यज्ञ की पूर्णाहुति बाबा श्री की कृपा से संपन्न हुई। 108 कुंडीय रुद्र महायज्ञ में सभी यजमानो ने द्वितीय यज्ञ मे बड़े ही उत्साह के साथ पूजन, हवन व पूर्णाहुति के साथ देश की समृद्धि एवं शांति के लिए श्रद्धालुओं ने अमन चैन की दुआ व खुशहाली की कामना की। यज्ञाचार्य पंडित कमलेश शास्त्री ने यज्ञ कुंडों पर बैठे यजमानों व हज़ारों श्रद्धालुओ से वैदिक मंत्रोच्चार के साथ समिधा, गोघृत एवं सुगंधित हवन सामग्री से भगवान महामृत्युंजय देव की प्रसनन्ता हेतु शिवनामावली के साथ आवाहित देव मंडलों हेतु आहुतियां दिलवाई। हवन का दशांश, तर्पण, मार्जन के पश्चात क्षेत्रपाल बलिदान कर्म के साथ आरती की गई। इस दौरान बाबा श्री ने पर्यावरण शुद्धि के लिए यजमानो को पीपल के पेड़ वितरित किए। इस दौरान यज्ञशाला वेद मंत्रो व परिक्रमा में लगते बाबा बालकनाथ के जयकारो एवं हवन कुंडों से उठती सुवास से पूरा वातावरण धर्ममय बना हुआ है। कई जनप्रतिनिधि भी यज्ञ स्थल पर पहुंचे और हवन कुंड में आहुतियां दी और महाराज से आशीर्वाद लिया। यज्ञाचार्य पंडित कमलेश शास्त्री ने यज्ञ कुंडों पर बैठे यजमानों से वैदिक मंत्रोच्चार के साथ समिधा, गोघृत एवं सुगंधित हवन सामग्री से आहुतियां दिलवाई। यज्ञ में आहुतियां देने से पहले बाबा बस्तीनाथ ने कहा कि आज हवन कुंड पर बुराइयों का त्याग करने का संकल्प करें। बाबा बस्तीनाथ ने बताया कि सनातन संस्कृति की रक्षा, विष्व कल्याण एवं महामारी के प्रकोप से बचने के लिए निस्वार्थ भावना से एक साल तक महामृत्युंजय रुद्र महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ की पूर्णाहुति एक साल बाद के 11 अप्रैल 2025 को होगी। प्रतिदिन हवन के साथ पूजा-अर्चना, सत्संग-प्रवचन के कार्यक्रम होंगे।

पदयात्रा में गूंजे बालाजी के जयकारे

कोटपूतली । ग्राम रामसिंहपुरा में जीण माता मन्दिर से मंगलवार को झीड़ावाले बालाजी बजरंगपुरा आंतेला के लिए अखण्ड ज्योति के साथ तृतीय पदयात्रा को सुबेसिंह भगत ने रवाना किया। पदयात्रा से पूर्व झांकी व ध्वजों की पूजा-अर्चना कर आरती उतारी गई। बालाजी की शोभायात्रा डीजे के साथ गांव के मुख्य मार्गों से होकर रवाना हुई। पदयात्री कोटपूतली, पावटा से होते हुए आंतेला के झीड़ावाले बालाजी मंदिर में पहुंचकर ध्वज चढ़ाएगे। इस मौके पर भगत सुबेसिंह कसाना, जगदीश दादरवाल, हंसराज दायमा, रोहिताश, खेमचंद, शीशराम, अशोक, विजेन्द्र, सुभाष, भानू, मोनू सहित अनेक श्रद्धालु मौजूद उपस्थित रहे।

खेत में कार्य करते वक्त कृषक की मृत्यु

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

कोटपूतली । ग्राम भौनावास में एक खेत में कृषि कार्य कर रहे कृषक की मृत्यु का मामला सामने आया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रार्थी सूरज सिंह पुत्र मुंशी सिंह राजपूत निवासी ग्राम भौनावास ने प्रागपुरा थाने में दर्ज करवाया कि परिवादी के ताऊ प्रताप सिंह पुत्र सोहन सिंह विगत 19 अप्रैल को दोपहर करीब 3-4 बजे एक खेत में कार्य कर रहे थे। तभी अचानक बेहोश हो गये। उसी समय पीड़ित प्रताप सिंह को पावटा सीएचसी में ले जाया गया। जहाँ चिकित्सक ने सीने का दर्द बताते हुये जयपुर रैफर कर दिया। इसी दौरान रास्ते में दर्द के तेज हो जाने पर निम्स अस्पताल चंदवाजी में भर्ती करवाया गया। जहाँ उपचार के दौरान प्रताप सिंह की मृत्यु हो गई। मृतक के तीन लडक़ी व एक लडक़ा है। पुलिस ने परिवाद मृग दर्ज कर लिया है।

जयपुर : बच्चों ने पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रतिज्ञा ली

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। द पैलेस स्कूल में सोमवार को अर्थ डे का उत्सव मनाया गया। इस उत्सव में स 1 से 12 तक के बच्चों ने इन उत्सव में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। इस मौके पर स्कूल की प्रिंसिपल ने बच्चों को पृथ्वी दिवस के महत्व को समझाया। इस मौके पर स्कूल की प्रिंसिपल ने बच्चों को पृथ्वी दिवस के महत्व को समझाया। उन्हें संसाधनों के सही उपयोग की बात कही। उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ बचाने का संकल्प भी किया। स्कूल प्रिंसिपल उर्वशी वॉरमैन ने बच्चों से पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रतिज्ञा भी ली। इस मौके पर, बच्चों को प्लास्टिक के दुष्प्रभाव और पेड़-पौधों के महत्व के बारे में शिक्षा दी गई। प्रमुख शिक्षकों ने उन्हें पेड़ लगाने के लिए प्रोत्साहित किया और उनका सहयोग मांगा। इस समारोह में, बच्चों ने अपने बनाए हुए पोस्टर्स और कविताओं के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। इस रूप में, द पैलेस स्कूल ने अर्थ डे के अवसर पर एक शिक्षाप्रद और सामाजिक समारोह का आयोजन किया, जो बच्चों को पर्यावरण और सामाजिक जागरूकता के प्रति जागरूक करता है।

पुस्तक पाठक संगम द्वारा महावीर जयंती पर परिचर्चा आयोजित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। पुस्तक पाठक संगम की ओर से भगवान महावीर के 2650वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जयपुर के गायत्री नगर, दुर्गापुरा स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में शाम को पाठकों के संगम के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम डॉ. धर्मचन्द्र जैन द्वारा लिखित पुस्तक ÷तीर्थंकर महावीर÷ पर चर्चा केंद्रित रही। भारत के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर जन-जन के हैं। महावीर भगवान के जन्म से लेकर निर्वाण तक की यात्रा पर सभी उपस्थित पाठकों ने चर्चा की। डॉ. महावीर ने भगवान महावीर के कल्याणकारी संदेशों, जिसमें प्रमुख जो सुना नहीं उसे सुनो, जो सुना उसे स्मरण रखो, नए दोष कर्मों को रोको, पुराने पाप कर्मों को नष्ट करे, सम्यक् ज्ञान की शिक्षा प्रदान करो, जिसका कोई नहीं, उसके बनो, ग्लानि रहित सेवा भाव अपनाओ निष्पक्ष रहो। इन संदेशों को मनोज कुमार ने भी बताते हुये महावीर के सिद्धान्तों को वर्तमान जीवन शैली में सरलता से अपनाने पर बातचीत की। महावीर ने भेदों से ऊपर उठकर संघ बनाया, जिसमें समानता थी।

अंत मे डा. सतेन्द्र जैन ने भगवान महावीर के द्वारा चार दानों- अभयदान, आहारदान, औषधिदान और ज्ञानदान की महिमा बताई। पुस्तक पाठक संगम (बुक रीडर्स क्लब) की संचालिका डॉ. दर्शना ने कहा रीडर्स क्लब का उद्देश्य समाज और विशेषकर युवाओं में स्वाध्याय को बढ़ावा देना है, जिससे अपने-अपने क्षेत्र में सामाजिक मूल्यों को जीवित रखते हुए कार्य किया जा सके। कार्यक्रम का संचालन कुणाल ने किया। डॉ. दर्शना ने मंदिर कमेटी और पाठकों का आभार व्यक्त किया।

ट्रेन के आगे कूदी 21 वर्षीय विवाहिता ने की आत्महत्या

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

अलवर। पति और ससुराल वालों द्वारा दहेज में कार की मांग और प्रताड़ना से परेशान विवाहित ने ट्रेन के आगे कूदकर अपनी जान दे दी। ऐसा मृतका के नाना ने आरोप लगाया है। सोनम के नाना रिटायर्ड पुलिसकर्मी अमीलला ने बताया कि पिछले महीने 4 मार्च को नातिन सोनम की बड़ी धूमधाम से कंपाउंडर मनोज कुमार से शादी की थी। शादी में ऐसी कोई कमी नहीं थी कि ससुराल वाले आरोप लगा सके। लेकिन शादी के बाद से ही सोनम परेशान रहने लगी। कई बार उसने बताया कि उसका पति दहेज में कार की मांग करता है और उस पर शक करता है। देर रात घर आता है और दोनों में मनमुटाव रहता है। साथ ही पति व ससुराल पक्ष के लोग भी दहेज को लेकर ताने मारते हैं, उसे परेशान करते हैं। इससे परेशान होकर सोनम ने ट्रेन के आगे कूद कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। मृतका के नाना अमीलाल ने कहा की सोनम का पति पटना में सरकारी अस्पताल में कंपाउंडर है, जो देर रात तक भी घर नहीं आता था। जिसको लेकर सोनम ने सास कमली से भी शिकायत की थी लेकिन दोनों मां बेटे ने एक नहीं सुनी और फोर व्हीलर कर की डिमांड करते रहे।

मानसिक रूप से प्रताड़ना करते रहे जो सारी बातें मुझे सोनम ने कल ही बताई थी। फिर बाद में मैंने सनम के ससुराल वालों से बातचीत की थी जिस पर भी कोई समझाइश नहीं निकली। आज मैं लोकसभा चुनाव में ड्यूटी के लिए झालावाड़ गया तो फोन आया कि सोनम ने ट्रेन के आगे कूद कर आत्महत्या कर ली है। वहीं, अमीलाल ने बताया कि सोनम के पिता की बचपन में ही मौत हो चुकी थी। इसके बाद में दोनों बच्चों को मैं अपने पास में ही रखता था। मेने हीं पढ़ाया लिखाया था। मैंने ही धूमधाम से शादी की थी। सोनम की थर्ड ईयर की बीएससी नर्सिंग चल रही थी।

हैरिटेज निगम की पॉलिथीन के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई में 159 चालान काटे

स्वास्थ्य दस्ते ने व्यापारियों से 1 लाख 28 हजार 200 रूपये कैरिंग चार्ज किया वसूला

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। स्वच्छ सर्वेक्षण -2024 मे शहर स्वच्छता के सभी मानदण्डों पर खरा उतरे इस हेतु हैरिटेज निगममध्येनजर जयपुर शहर को स्वच्छता की रोज कुछ न कुछ स्वच्छता हेतु गतिविधि कर रहा वहीं सिंगल यूज प्लास्टिक विक्रेताओं पर भी निरन्तर कार्रवाई कर रहा है। आयुक्त अभिषेक सुराणा ने बताया कि स्वास्थ्य दस्ते ने उपायुक्त स्वास्थ्य सोहन सिंह नरूका के निर्देशन में पॉलिथीन के विरूद्ध कार्रवाई करते हुये 159 चालान काटे एवं व्यापारियों से 1 लाख 28 हजार 200 रूपये कैरिंग चार्ज वसूल किया एवं भविष्य में व्यापारियों को पॉलिथीन उत्पाद का वितरण नहीं किये जाने के लिये सूचित किया गया।

लोकसभा चुनाव-2024 : दूसरे चरण के लिए अब तक 37,723 मतदाताओं ने की होम वोटिंग

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। लोकसभा आम चुनाव-2024 में 85 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ठ मतदाता तथा 40 प्रतिशत से अधिक दिव्यांगता वाले मतदाता भारत निर्वाचन आयोग की पहल पर पहली बार घर से ही उत्साहपूर्वक मतदान कर रहे हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने बताया कि लोकसभा आम चुनाव-2024 के अंतर्गत प्रदेश में 85 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ठ मतदाता तथा दिव्यांग मतदाताओं को घर से ही मतदान करने की सुविधा का विकल्प दिया गया है। प्रदेश में अब तक दोनों चरणों में रिकॉर्ड 97.64 प्रतिशत मतदान हुआ है। पंजीकृत कुल बुजुर्गों में से 97.57 प्रतिशत मतदान किया है। दिव्यांगों का मतदान प्रतिशत भी 97 फीसदी से अधिक है। गुप्ता ने बताया कि सभी 25 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में अब तक 73,248 वोटर्स द्वारा मतदान किया जा चुका है। इनमें 56,284 बुजुर्ग तथा 16,964 दिव्यांग मतदाता शामिल हैं। 1050 मतदाताओं की मृत्यु होने तथा 1770 मतदाताओं के अनुपस्थित होने की वजह से मतदान नहीं कर सके। गुप्ता ने बताया कि द्वितीय चरण के 13 लोकसभा क्षेत्रों में होम वोटिंग के लिए पंजीकृत मतदाताओं में से 97.03 प्रतिशत ने मतदान किया है। अब तक कुल 37,723 मतदाताओं ने घर से मतदान किया है। इनमें 29715 बुजुर्ग, 8008 दिव्यांग, 632 की मृत्यु जबकि 1156 घर पर नहीं मिले। 14 अप्रैल से 21 अप्रैल तक द्वितीय चरण के 13 लोकसभा क्षेत्रों के लिए होम वोटिंग की गयी। अनुपस्थित रहने की स्थिति में 22 एवं 23 अप्रैल को मतदान का अवसर दुबारा दिया जा रहा है। गुप्ता ने बताया कि प्रथम चरण के 12 लोकसभा क्षेत्रों में होम वोटिंग के तहत 98.30 प्रतिशत मतदान हुआ है। कुल 35,525 मतदाताओं ने घर से मतदान किया। इनमें 26,569 बुजुर्ग जबिक 8,956 दिव्यांग मतदाता है, साथ ही 418 वोटर्स की मृत्यु हो गयी तथा 614 मतदाता घर पर नहीं मिले।

भारत निर्वाचन आयोग ने दूसरे चरण के जिला निर्वाचन अधिकारियों एवं पुलिस अधीक्षकों को दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। भारत निर्वाचन आयोग के उप निर्वाचन आयुक्त मनोज कुमार साहू ने सोमवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से दूसरे चरण के सभी जिला कलक्टर और पुलिस अधीक्षकों के साथ बैठक कर लोकसभा आम चुनाव-2024 की तैयारियों की लोकसभा क्षेत्रवार समीक्षा की। मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के उच्चाधिकारियों ने बैठक में लोकसभा चुनाव के लिए ईवीएम से जुडें समस्त प्रोटोकॉल का विशेष तौर पर रिप्लेसमेंट की स्थिति में एसओपी का ध्यान रखने पर बल दिया। राजनैतिक दलों को ईवीएम कमिशनिंग की सूचना देने एवं उनकी सभी जिज्ञासाओं का तर्कपूर्ण जवाब दिए जाने के निर्देश दिए। आवश्यकतानुसार समय-समय पर राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों एवं प्रत्याशियों के साथ बैठक करने का भी सुझाव दिया। साहू ने विधानसभा चुनाव-2023 के समय राजस्थान द्वारा मतदान दिवस एवं इससे पूर्व के 72 घंटों के समय की गयी संपूर्ण व्यवस्थाओं की सराहना की एवं साथ ही सुझाव दिया कि इस बार भी इस एसओपी का विशेष ध्यान रखा जाना है एवं मतदान दिवस को त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित कराने के लिए पहले से ही तंत्र विकसित किया जाना है।

लोकसभा चुनावों के समय गर्मी के मौसम को देखते हुए मतदान दल के सदस्यों के साथ-साथ मतदाताओं के लिए छाया, पेयजल एवं लू से बचाव के उपाय सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने सभी रिटर्निंग अधिकारियों एवं जिला पुलिस अधीक्षकों से उनके जिले में लॉजिस्टिक अरेंजमेंट, बैलेट पेपर प्रिंटिंग, ईटीबीपीएस की स्थिति, होम वोटिंग, प्रशिक्षण, मतदान दल रवानगी व्यवस्था, आदर्श आचार संहिता, सी-विजिल, शिकायत, जब्ती की स्थिति एवं एमसीएमसी की कार्य प्रक्रिया की वस्तुस्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त की।

बैठक में मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रवीण गुप्ता ने आयोग के उच्चाधिकारियों को प्रदेश में उत्साहपूर्वक चल रही होम वोटिंग, केन्द्रीय पर्यवेक्षकों के साथ समन्वय के बारे में जानकारी प्रदान की साथ ही बताया कि इस बार मतदाता सूचना पर्ची को विशेष कैंप्स का आयोजन कर बीएलओ के माध्यम से वितरित करवाया गया है। पोस्टल बैलेट की आवश्यकता, कम्युनिकेशन प्लान, निर्वाचन संपन्न कराने वाले अधिकारियों-कर्मचारियों के प्रशिक्षण, कानून-व्यवस्था की स्थिति और स्वीप गतिविधियों की भी समीक्षा की। बैठक में राज्य के स्टेट पुलिस नोडल अधिकारीगण एवं निर्वाचन विभाग के अधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

जयपुर हैरिटेज : विश्व पृथ्वी दिवस पर पृथ्वी को कचरा मुक्त बनाने की लगभग 250 विधार्थियों ने शपथ ली

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। नगर निगम जयपुर हैरिटेज ने सोमवार को विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर आदर्श नगर जोन में वार्ड नं. 78 स्थित राजकीय बालिका विद्यालय एवं वार्ड नं. 78 स्थित आर के मोदी इन्टरनेशनल स्कूल में छात्र-छात्राओं के साथ एक स्वच्छता जागरूकता मुहिम चलाई गई। इसमें दोनों विधालयों के लगभग 250 विधार्थियों ने भाग लिया। इस मुहिम के अंतर्गत छात्र-छात्राओं को सिखाया गया कि वे सूखा और गीला कचरा अलग-अलग चयनित पात्रों में डालें ओर गीले कचरे से खाद बनाये और सूखे कचरे को नगर निगम के सेंटर में दें। इस मौके पर उपायुक्त सरोज ढ़ाका, जिला परियोजना अधिकारी अमित शर्मा और पीआईयू की टीम मौजूद थी। विश्व पृथ्वी दिवस के अंतर्गत अतिरिक्त आयुक्त रौनक बैरागी व उपायुक्त स्वास्थ्य सोहन सिंह नरूका ने नगर निगम जयपुर हैरिटेज ने महीने भर चलने वाले प्लास्टिक संग्रह अभियान के लिये स्वच्छता रथों को रवाना किया जिन पर ''हर कदम पर्यावरण की ओर, हर कोशिश हरियाली की ओर'' के संदेश लिखे हुए थे, को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस महत्वपूर्ण मौके पर अधिकारियों ने सभी को इस खूबसूरत पृथ्वी ग्रह को बचाने के लिये प्लास्टिक के उपयोग से परहेज करने और पर्यावरण पर होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाने की अपील की। इसके अलावा उन्होनें टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल विकल्पों को अपनाने के लिये प्रेरित किया। स्वच्छता वाहनों के इस अभियान के साथ नगर निगम जयपुर हैरिटेज प्लास्टिक कचरे के संग्रह और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के प्रति जागरूकता बढ़ा रहा हैं। पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में ही वार्ड नं. 44 के शांति नगर पार्क में महिलाओं के लिये एक विशेष जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में महिलाओं को स्वच्छता और सुरक्षा के महत्व के बारे में बताया गया साथ ही सैनेटरी कचरे के सुरक्षित निपटान पर विशेष ध्यान दिया गया।

ज्वैलर्स से सोने-चांदी की लूट का खुलासा मुख्य आरोपी सहित चार आरोपी गिरफ्तार

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

उदयपुर। उदयपुर जिले के थाना प्रतापनगर पुलिस ने शनिवार को हाईवे पर ज्वैलर्स व्यापारी से हुई लूट का खुलासा कर आरोपी सुनिल डांगी पुत्र पुष्कर लाल (22), रोशन गायरी पुत्र रूपलाल (20) निवासी भल्लो का गुडा थाना कुराबड, सुरेश उर्फ सुरी उर्फ सुर्या डांगी पुत्र उदय लाल (21) निवासी विजयपुरा थाना वल्लभनगर एवं श्याम उर्फ शेरा गुर्जर पुत्र लच्छी राम (29) निवासी बडगांव थाना वल्लभनगर हाल थाना प्रतापनगर जिला उदयपुर को बापर्दा गिरफ्तार कर लूटे गये जेवर एवं नगदी बरामद कर ली है। एसपी योगेश यादव ने बताया कि घटना के संबंध में लकड़वास निवासी ज्वैलर रोशन लाल सोनी ने रिपोर्ट दी कि ढिकली चारभुजा मन्दिर के पास उसकी ज्वैलर की शॉप है। दुकान बंद कर सारे जेवर एक बैग मे भरकर बाइक से अपने घर लकडवास जा रहा था। करीब 7 बजे सुखानाका पुलिया से पहले 02 मोटरसाईकिल पर आये चार युवक मारपीट कर चाकू दिखा बैग छीन कर भाग गए। घटना की गंभीरता को देखते हुए एसपी गोयल द्वारा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा व सीओ छगन पुरोहित के सुपरविजन एवं एसएचओ भरत योगी के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा घटना स्थल के आस पास के सीसीटीवी फुटेज चैक किये गये। साथ ही इस प्रकार की वारदात करने वाले आदतन अपराधियों को थाने पर लाकर पूछताछ की। सीसीटीवी फुटेज के विश्लेषण, तकनीकी रूप से आसूचना एवं हैड कांस्टेबल विक्रम सिंह, कांस्टेबल अखिलेश्वर कुमार, राजुराम, उपेन्द्र सिंह की हयुमन इन्टीलेजेस के आधार पर टीम ने आरोपी सुनिल डांगी, रोशन गायरी, सुरेश उर्फ सुरी उर्फ सुर्या डांगी व श्याम उर्फ शेरा गुर्जर को डिटेन कर पूछताछ के बाद बापर्दा गिरफ्तार किया गया है। अभियुक्तों की निशानदेही से करीब 4.62 किलोग्राम सोने-चांदी के आभूषण व नगदी बरामद की गयी।

सतरंगी सप्ताह के पांचवें दिन मतदाता रैली एवं फ्लैश मोब का आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

भीलवाड़ा। सेठ मुरलीधर मानसिंहका राजकीय कन्या महाविद्यालय में आज सतरंगी सप्ताह के पांचवें दिन मतदाता रैली एवं फ्लैश मोब का आयोजन प्राचार्य डॉ सावन कुमार जांगिड़ की अध्यक्षता में किया गया। निर्वाचन साक्षरता क्लब नोडल डॉ शोभा गौतम ने बताया की रैली का प्रारंभ प्रातः 8:30 बजे महाविद्यालय से प्राचार्य डॉ सावन कुमार जांगिड़ ने जिला प्रशासन की स्वीप टीम की उपस्थिति में हरी झंडी दिखाकर किया। रैली बडला चोराहा से होते हुए शास्त्री नगर आयकर कार्यालय तक निकाली गई। रैली का थीम पीला तथा स्लोगन' मताधिकार का प्रयोग करेंगे, वोट करेंगे वोट करेंगे' रखा गया। रैली के दौरान छात्राओं ने बडला चौराहा एवं शास्त्री नगर चौराहे पर फ्लैश मोब का प्रदर्शन करते हुए आम जन से वार्तालाप किया तथा उन्हें मतदान के लिए प्रेरित किया। रैली का संचालन ईएलसी नोडल डॉ शोभा गौतम द्वारा किया गया। इस दौरान एनएसएस अधिकारी डॉ के.के.मीणा तथा अंजली अग्रवाल, एनसीसी प्रभारी डॉ प्रगति पांडे,वर्षा सिखवाल, सुखपाल सिंह राठौड़,सतीश कुमार शर्मा,जिला ईएलसी नोडल डॉ ज्ञानचंद भारती, निधि वर्मा, रिद्धि बरवड़ तथा जिला प्रशासन की स्वीप टीम के तेजकरण बहेड़िया, सुनीता नानकानी, आयुष सैनी, सुनीता जैन, मंजू छीपा, स्वीप आईकॉन आरू नामा उपस्थित थें।

अनाधिकृत निजी अस्पतालों पर कसेगा शिकंजा चिकित्सा विभाग चलाएगा ऑपरेशन ब्लैक थण्डर

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग प्रदेश में अनाधिकृत रूप से संचालित निजी अस्पतालों के विरूद्ध कार्यवाही के लिए ऑपरेशन ब्लैक थण्डर चलाएगा। इसके लिए संभाग स्तर पर समस्त संयुक्त निदेशक, जोन को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है। साथ ही, जिला स्तर पर इस ऑपरेशन के लिए कमेटी गठित की जाएगी। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की अतिरिक्त मुख्य शुभ्रा सिंह ने बताया कि विभाग को प्रदेश में ऐसे अनाधिकृत निजी अस्पताल संचालित होने की शिकायतें प्राप्त हुई थीं, जिनमें एक भी एलोपैथिक चिकित्सक नहीं है और मनमाने ढंग से इनका संचालन कर आमजन के जीवन के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। चिकित्सा विभाग ऐसे अस्पतालों के विरूद्ध कठोर कार्रवाई अमल में लाएगा। इसके लिए प्रदेशभर में ऑपरेशन ब्लैक थण्डर चलाया जाएगा। सिंह ने बताया कि इस ऑपरेशन के लिए संभाग स्तर पर समस्त संयुक्त निदेशक जोन को नोडल अधिकारी बनाया गया है। साथ ही, अनाधिकृत रूप से संचालित ऐसे अस्पतालों के निरीक्षण के लिए जिला स्तर पर कमेटियों का गठन किया जा रहा है। इस कमेटी में संबंधित जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी एवं जिला औषधि अधिकारी शामिल होंगे। निदेशक जनस्वास्थ्य, डॉ. रवि प्रकाश माथुर ने बताया कि यह कमेटी संबंधित जिले में अनाधिकृत रूप से संचालित निजी अस्पतालों का निरीक्षण करेगी। अगर कोई अस्पताल बिना एलोपैथिक चिकित्सक के चलते पाया जाता है या वहां अन्य नियमों का उल्लंघन पाया जाता है तो उनके विरूद्ध आईपीसी एवं आईएमए की विभिन्न धाराओं में कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। कमेटी हर माह इस संबंध में संबंधित संयुक्त निदेशक को रिपोर्ट भेजेगी। संयुक्त निदेशक जोन हर माह की 5 तारीख तक यह सूचना चिकित्सा एवं स्वास्थ्य निदेशालय को भिजवाएंगे।

ड्राईविंग लाईसेन्स एवं वाहन पंजीयन प्रमाण पत्र की फीस रिफंड हेतु आवेदन प्रारम्भ

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। जिला परिवहन अधिकारी देवानंद ने बताया कि परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग द्वारा 1 अप्रैल 2024 से नये ड्राईविंग लाईसेन्स एवं वाहन पंजीयन प्रमाण पत्र तथा इनसे सम्बन्धित सेवायें यथा नवीनीकरण, फाइनेन्सर हाइपोथिकेशन, स्मार्ट कार्ड के स्थान पर ई-डी.एल एवं ई-आर.सी. के रूप में इलेक्ट्रॉनिकली जारी किये जाने के निर्देश प्रदान किये गये हैं। जिन आवेदकों ने 31 मार्च 2024 तक ड्राईविंग लाईसेन्स एवं पंजीयन प्रमाण पत्र हेतु कार्यालय में आवेदन कर फीस जमा कर चुके हैं परन्तु उन्हें कार्यालय द्वारा वाहन पंजीयन प्रमाण पत्र एवं ड्राईविंग लाईसेन्स के स्मार्ट कार्ड जारी नहीं हो पाये हैं ऐसे आवेदकों को स्मार्ट कार्ड की फीस की राशि 200 रुपये परिवहन विभाग द्वारा रिफंड की जानी है।

रिफण्ड हेतु आवेदक को कार्यालय में स्वयं के आधार कार्ड, पैन कार्ड एवं बैंक पासबुक या कैंसिल चैक की छायाप्रति जमा कराकर आवेदन 30 अप्रैल 2024 तक किया जाना आवश्यक है। आवेदन परिवहन कार्यालय धौलपुर में पंजीयन शाखा एवं लाइसेंस शाखा में जमा कराये जायेंगे।

रजौराकलां में होगा क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

सैंपऊ। सैंपऊ उपखंड के गांव राजौरा कला में क्रिकेट का आयोजन किया जा रहा है।

जिसमें प्रथम पुरस्कार 51000 रूपये और द्वितीय पुरस्कार 21000 रूपये और तृतीय पुरस्कार स्मार्ट घड़ी रखी गई है। टूर्नामेंट में राजौराकला से कमेटी मेंबर दीपक शर्मा, पंकज लोधी, कृष्णा किरार गीतम किरार, नारद किरार रिंकू लोधी को बनाया गया है। यह जानकारी कमेटी के सदस्य दीपक शर्मा ने दी। क्रिकेट टूर्नामेंट का अयोजन पच्चीस अप्रैल से किया जायेगा। जिसमें प्रत्येक टीम से एंट्री फीस दो हजार पांच सौ रूपए रखी गई है।

सीएमए जयपुर चैप्टर की ओर से कराया गया क्रिकेट टूर्नामेंट

जयपुर। दी इन्स्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट अकाउन्टेन्ट्स ऑफ इंडिया के जयपुर चैप्टर द्वारा शकुन प्लेफिट, मानसरोवर जयपुर के बॉक्स क्रिकेट मैदान पर सीएमए प्रीमीयर लीग 2024 का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 50 सीएमए मैम्बर्स व क्वालीफाइ सीएमए मैम्बर्स ने भाग लिया। प्रोग्राम का उद्घाटन विनीत सक्सेना, रणजी क्रिकेट प्लेयर व क्रिकेट कोच द्वारा किया गया। प्रोग्राम के प्रारम्भ में चैप्टर के चैयरमेन सीएमए हरेन्द्र कुमार पारीक ने मुख्य अतिथि, मैम्बर्स व खिलाडियों का अभिनंदन किया। प्रतियोगिता में कुल 6 क्वालिफाई मैच खेले गए। जिसमें टॉप दो टीमों के बीच फाइनल मैच खेला गया जिसमें टीम अचिवर्स ने टीम चेलेंजर्स को 6 विकेट से हराया।

संपादकीय

बेलगाम हथियार

पंजाब व हरियाणा हाईकोर्ट की इस चिंता से सहमत हुआ जा सकता है कि समारोहों और अपराध में लाइसेंसी हथियारों का खूब इस्तेमाल हो रहा है। तंत्र की लापरवाही से उपजे हालात से खिन्न न्यायाधीश को कहना पड़ा कि पंजाब में लाइसेंसी हथियार जारी करने की कोई गाइड लाइन है? दरअसल, कोर्ट की पहल पर 13 नवंबर, 2022 को पंजाब सरकार द्वारा जारी आदेश में सार्वजनिक स्थानों तथा सोशल मीडिया पर फायर आर्म्स के उपयोग व प्रदर्शन पर रोक लगा दी गई थी। लेकिन इसके बावजूद कई जगहों पर सोशल मीडिया पर हथियारों के प्रदर्शन के मामले प्रकाश में आए थे। इतना ही नहीं शादी-विवाह व निजी कार्यक्रमों में 'हर्ष फायरिंग' के मामले भी अक्सर देखे जाते रहे हैं। निश्चित रूप से आग्नेय हथियारों का अविवेकशील उपयोग कभी भी दुर्घटनाओं को जन्म दे सकता है। वहीं हथियारों के उपयोग में सावधानी न बरते जाने से सार्वजनिक स्थलों में दुर्घटना की गुंजाइश लगातार बनी रहती है। लेकिन कोर्ट के आदेश व सरकार के प्रयासों के बावजूद इन परिस्थितियों पर अंकुश नहीं लग रहा है। जिसके चलते कोर्ट को सख्त टिप्पणी करने को मजबूर होना पड़ा है। इस बाबत हाईकोर्ट ने पंजाब के डीजीपी से सवाल किये कि क्या आर्म्ड लाइसेंस जारी करने मे शस्त्र अधिनियम 1959 के तहत कोई प्रोटोकॉल, दिशा-निर्देश या मानदंड निर्धारित हैं? पिछले पांच वर्ष में कितने आर्म्ड लाइसेंस जारी किये गये हैं? साथ ही स्पष्ट किया जाना चाहिए कि ये हथियार किस मकसद से जारी किये गए हैं?

दरअसल, यह विडंबना ही है कि शासन-प्रशासन के स्तर पर ऐसे गंभीर व संवेदनशील मुद्दों पर पहल होनी चाहिए, उसकी याद हाईकोर्ट को दिलानी पड़ रही है। सत्ताधीश लोकलुभावन राजनीति के चलते समाज के अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों को नजरअंदाज करते हैं। यही वजह है कि हाईकोर्ट को पूछना पड़ा कि 13 नवंबर, 2022 से प्रत्येक जिले में फायर आर्म्स के प्रदर्शन की जांच के लिये कितनी अचानक विजिट की गई? दरअसल, इस मुश्किल वक्त में जब लोग छोटी-छोटी बात पर आवेशित होकर हथियार निकाल लेते हैं, हथियारों का नियमन बेहद संवेदनशील ढंग से किया जाना चाहिए। वहीं दूसरी ओर हथियारों के लाइसेंस जारी करवाने के खेल में जो बिचौलियों की भूमिका होती है, उसे खत्म करने की दिशा में गंभीर प्रयास किये जाने चाहिए। साथ ही उन विभागीय काली भेड़ों की भी जांच हो जो लेनदेन करके अपात्र व्यक्तियों व संदिग्ध चरित्र के व्यक्तियों को लाइसेंस दिलाने में कामयाब हो जाते हैं। साथ ही सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील सीमावर्ती पंजाब में अवैध हथियारों की बरामदगी के लिये विशेष अभियान चलाया जाना चाहिए। जो समाज व कानून व्यवस्था के लिये बेहद घातक साबित हो रहे हैं। पड़ोसी देश से ड्रोन के जरिये हथियार गिराने के अनेक मामलों के बाद हमें खतरनाक मंसूबों के प्रति सतर्क रहना जरूरी है। इस गंभीर स्थिति की निगरानी के लिये पुलिस व सीमा सुरक्षा बलों को अवैध हथियारों की बरामदगी के लिये सघन अभियान चलाने की जरूरत है।

डबल कमाई पर संतान की सोच रास न आई

पिछले दिनों एक मार्केटिंग फर्म ने सर्वे के दौरान बताया था कि भारत में डिंक यानी डबल इनकम ग्रुप की संख्या हर साल तीस प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। महिलाएं कम बच्चों को जन्म दे रही हैं। भारत में प्रजनन दर भी तेजी से घट रही है। साल 1950 में यह 6.2 थी जो अब घटकर 2 रह गई है। इसका एक बड़ा कारण महिलाओं का घर से निकलना है। फिर परिवार नियोजन के साधनों ने दम्पतियों को यह सुविधा प्रदान की है कि वे माता-पिता बनें या न बनें या कब बनें।

यह पांच साल पहले की बात होगी। एक मित्र जिससे बहुत दिनों बाद बात हो रही थी, उससे घर-परिवार के बारे में भी बातें होने लगीं। होते-होते बात बच्चों और उनके परिवार पर आई, तो मित्र ने कहा कि उसके लड़के और बहू ने फैसला किया है कि वे बच्चे नहीं चाहते। 'ऐसा क्यों' पूछने पर उसने कहा कि वे कहते हैं कि वैसे ही देश की आबादी बहुत है। फिर बच्चे की जिम्मेदारी कौन उठाए। जीवन भर की जिम्मेदारी उठाने से बेहतर है कि कोई जिम्मेदारी न उठाई जाए और बच्चे पैदा न किए जाएं।

कुछ दिन पहले एक बहुत बड़े बहुराष्ट्रीय निगम में काम करने वाली परिचित लड़की से फोन पर बात हो रही थी। उसकी शादी को बारह साल हो गए मगर उसका कहना है कि उन्हें बच्चा नहीं चाहिए। डिंक इनकम ग्रुप यानी जहां पति-पत्नी दोनों कमाते हैं, वहां ये चलन बढ़ता जा रहा है। ये लोग खुद को चाइल्ड फ्री कहलाना पसंद करते हैं। अपने निर्णय पर इन्हें कोई पछतावा भी नहीं है। इनका मानना है कि बच्चे को पालना एक महंगा सौदा है। वह सही स्कूल में पढ़े, उसका ठीक से विकास हो इस पर भी बहुत परिश्रम करना पड़ता है। कई लोग अपने इस तरह के जीवन को बढ़ा-चढ़ाकर प्रसारित-प्रचारित भी करते हैं।

एक जोड़े ने सोशल मीडिया पर बताया था कि उनके बच्चे नहीं हैं, मगर उन्होंने छह डॉग पाल रखे हैं। वे उनकी देखभाल करते हैं। ये जोड़े अपने पैसे को अपनी जिंदगी की खुशियों पर खर्च करना चाहते हैं। खूब घूमना-फिरना चाहते हैं। जहां मर्जी आए, जब मर्जी हो उस काम को करने की आजादी है। सिर पर यह भार नहीं है कि पीछे से कोई बच्चा इंतजार कर रहा होगा, इसलिए घर लौटना है। ऐसी जिंदगी बहुत तनाव मुक्त होती है और हमेशा आजादी का अहसास कराती है।

ऐसे लोग अपने मन बहलाव के लिए श्वान पालते हैं, बिल्ली पालते हैं। यह लेखिका स्विट्ज़रलैंड में भी एक ऐसी महिला से मिली थी, जो छप्पन साल की थी। मगर उसने बच्चे न पैदा करने का निर्णय लिया था। उसने पांच बिल्लियों को पाल रखा था। वह इन बिल्लियों को डॉक्टर के पास ले जाने से लेकर उन्हें नहलाना-धुलाना, शैंपू करना, उनके बाल कटवाना, यहां तक कि वे अकेला महसूस न करें इसका इंतजाम तक करती थी। शायद यही कारण है कि भारत में बहुत सी कम्पनियां अब अपने-अपने पालतुओं को दफ्तर लाने की अनुमति दे रही हैं। हां, इन्हें लाने से आपके काम में कोई बाधा नहीं पड़नी चाहिए और ये किसी को नुकसान भी न पहुंचाएं।

इन दिनों यह बात भी देखने में आती है कि लड़कियां ज्यादा पैसे कमा रही हैं। इनमें से कइयों का कहना है कि उनके अंदर मां बनने की कोई प्राकृतिक इच्छा नहीं है। एक लड़की जो आये दिन विदेश जाती है, उसका कहना है कि न शादी से पहले व न शादी के बाद वह मां बनना चाहती थी। उसने भी एक डॉगी पाल रखा है लेकिन उसका कहना है कि मैं उसकी मां नहीं हूं। मैं किसी की मां नहीं बनना चाहती। लड़कियां जरूरी तौर पर मां बनें, यह बात अब पुरानी हो चली है।

ये युवा पर्यावरण के बारे में सोचते हैं। संगीत और बहुत से शेरो-शायरी को भी पसंद करते हैं। इनका यह भी कहना है कि वे इसलिए भी बच्चे पैदा नहीं करना बेहतर समझते हैं क्योंकि कोई आनुवंशिक बीमारी उन्हें नहीं सौंपना चाहते। इनमें से अधिकांश यह भी मानते हैं कि वे अपने कामकाज में इतने व्यस्त हैं कि बच्चे पालने का समय ही नहीं है। एक जोड़े ने यह भी बताया कि कोविड के दौरान उन्हें महसूस हुआ कि जिंदगी का कोई भरोसा नहीं। पता नहीं कब तक कौन है। इसके अलावा न नौकरियों का भरोसा है। ऐसे में बच्चे की जिम्मेदारी लेना ठीक नहीं है। इस जोड़े के पास एक कुत्ता और एक बिल्ली है। ये जब भी अपनी कार से लम्बी यात्राएं करते हैं, अपने पालतुओं को साथ ले जाते हैं।

पिछले दिनों एक मार्केटिंग फर्म ने सर्वे के दौरान बताया था कि भारत में डिंक यानी डबल इनकम ग्रुप की संख्या हर साल तीस प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। महिलाएं कम बच्चों को जन्म दे रही हैं। भारत में प्रजनन दर भी तेजी से घट रही है। साल 1950 में यह 6.2 थी जो अब घटकर 2 रह गई है। इसका एक बड़ा कारण महिलाओं का घर से निकलना है। फिर परिवार नियोजन के साधनों ने दम्पतियों को यह सुविधा प्रदान की है कि वे माता-पिता बनें या न बनें या कब बनें। बहुत से ऐसे जोड़े भी हैं जो कहते हैं कि बच्चे को दुनिया में लाकर अगर जिम्मेदारी ही पूरी करनी है तो क्यों न दूसरी जिम्मेदारियां निभाएं, जैसे कि बुजुर्गों की देखभाल करें। दिव्यांगों की मदद करें। पेड़ लगाएं और पर्यावरण को बचाएं। बच्चे नहीं हैं, इस बात का इन्हें गर्व है।

ऊपर जिन लोगों का जिक्र है ऐसे सब लोगों की बातें सुनकर यह लगता है कि शायद इन्हें इस बात का अहसास नहीं है कि नौकरियां हमेशा नहीं रहेंगी। एक दिन ऐसा आएगा कि जब रिटायर्ड जीवन बिताना होगा। शरीर में भी तब तक इतनी ताकत नहीं बचेगी कि रोज कहीं घूमने जा सकें, दोस्तों के साथ पार्टियां कर सकें। यहां तक कि अकेले अपने बल पर अपने पालतुओं की देखभाल भी कर सकें। तब क्या होगा। बीती हुई उम्र वापस नहीं आएगी। रिटायर्ड जीवन की बदली परिस्थितियों के चलते आने वाली चुनौतियों की बात सुनकर इनमें से बहुत से कहते हैं कि उन्हें इस बात का अहसास है कि बुढ़ापे में उनका क्या होगा। कौन उनकी देखभाल करेगा। कुछ ये भी कहते हैं कि कौन बच्चे आजकल माता-पिता की देखभाल कर पाते हैं। करना भी चाहें, तो उनके पास समय नहीं है। लेकिन जब ये इन परिस्थितियों में आएंगे उससे पहले ही ये अपने स्वास्थ्य को लेकर काफी सजग हैं, जिससे कि किसी गम्भीर बीमारी के होने से पहले ही उसका इलाज करा सकें। इसके अलावा बचत भी इस तरह से कर रहे हैं कि जिस तरह की जीवनशैली अब है, उसमें जब रिटायर हो जाएं, कोई आय न भी रहे तो भी बदलाव न आए। लेकिन यह भी सोचने की बात है कि क्या सिर्फ स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होने भर से सारी समस्याएं हल हो जाती हैं। जिसे ह्यूमन रिसोर्स कहते हैं , उसकी जरूरत तो पल-पल पड़ती है। और ये बात भी सच है कि दोस्त चाहे जितने अच्छे हों, वक्त पर आपके लिए दौड़ते भी हों, मगर वे परिवार की जगह नहीं ले सकते।

कई बार यह जो खाओ-पिओ मौज उड़ाओ की संस्कृति है, यह हमें बहुत स्वार्थी भी बनाती है। हम अपने अलावा किसी और के बारे में सोच नहीं पाते। हमारी आजादी और आनंद में कोई खलल न पड़े, इसके लिए बच्चे नहीं चाहिए। यह कैसा आनंद है जो बच्चे की जिम्मेदारी को इतना बड़ा बोझ मान रहा है कि बच्चे चाहिए ही नहीं। वे दुनिया में आएं ही नहीं। परिवार पर इन दिनों जो संकट आए हुए हैं, डिंक जोड़ों के ये निर्णय उसी संकट की ओर इशारा कर रहे हैं।

आज का इतिहास

- स्वीडन और पोलैंड के बीच 1660 में ओलिवा समझौते पर सहमति बनी।
- ब्रिटिश सम्राट चार्ल्स द्वितीय का 1661 में लंदन में राज्याभिषेक।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के गवर्नर जनरल गिल्बर्ट एलियट मिंटो का 1751 में जन्म हुआ।
- ब्रिटिश कमांडर कर्नल चैपमेन ने 1774 में रोहिला सेना को हराकर रोहिलाखंड पर कब्जा किया।
- सन 1891 में रुस की राजधानी मास्को से यहूदियों को निकाला गया।
- जर्मनी, डेनमार्क, ब्रिटेन, स्वीडन, हालैंड और फ्रांस के बीच 1908 में उत्तरी अटलांटिक संगठन संधि पर हस्ताक्षर किये गये।
- यूरोपीय देश पोलैंड ने 1935 में संविधान अपनाया।
- सोवियत यूनियन ने 1981 में अंडरग्राउंड न्यूक्लियर टेस्ट किया।
- वैज्ञानिकों ने 1984 में एड्स के वायरस के बारे में पता लगाया।
- कोल्ड ड्रिंक्स कंपनी कोकाकोला ने 99 साल बाजार में रहने के बाद 1985 में एक नए फार्मूले के साथ नया कोक मार्केट में लाया।
- नामीबिया 1990 में सं.रा. संघ का 160वां सदस्य बना।
- चेचेन्या के अलगाववादी नेता दुदायेव का 1996 को हुए एक हवाई हमले में मौत हो गयी थी।
- सन 2005 में यूट्यूब पर पहला वीडियो अपलोड हुआ।
- रूस के पूर्व राष्ट्रपति बोरिस निकोलाइएविच ऐल्तसिन का 2007 में निधन।
- वेस्टइंडीज के विस्फोटक बल्लेबाज क्रिस गेल ने 2013 में क्रिकेट इतिहास का सबसे तेज शतक मात्र 30 गेंदों में जड़ा।
- लोकतांत्रिक गणराज्य कांगो में 2014 में हुई एक भीषण ट्रेन दुर्घटना में तक़रीबन 60 लोगों की जान गयी और 80 से अधिक लोग घायल हो गए।
- सिखों के दूसरे धर्मगुरु अंगद का 1504 में जन्म।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के गवर्नर जनरल गिल्बर्ट एलियट मिंटो का 1751 को जन्म हुआ।
- प्रख्यात भारतीय विदुषी महिला और समाज सुधारक पंडिता रमाबाई का 1858 को जन्म हुआ।
- हिन्दी प्रसिद्ध साहित्यकार जी.पी. श्रीवास्तव का 1889 को जन्म हुआ।
- सुरबहार वाद्ययंत्र बजाने वाली एकमात्र महिला अन्नपूर्णा देवी का 1927 को जन्म हुआ।
- अंग्रेजी साहित्य के महान कवि और नाटककार विलियम शेक्सपियर की मृत्यु 1616 को हो गई थी।
- राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक, प्रखर चिंतक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी माधवराव सप्रे का 1926 को निधन हुआ था।
- मशहूर गजल गायक बड़े गुलाम अली खान का 1968 को निधन हुआ था।
- हिन्दी और ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि और लेखक धीरेन्द्र वर्मा का 1973 को निधन हुआ था।
- प्रसिद्ध भारतीय फिल्म निर्माता-निर्देशक भारत रत्न से सम्मानित सत्यजीत राय का 1992 को निधन हुआ था।

किताबों में विज्ञान की सांस मानवता की आस

प्रारंभ से अभी तक विश्व में अनेक आविष्कार हुए हैं। उन आविष्कारों ने न केवल मानव का अपितु पूरे ब्रह्मांड का कायापलट कर दिया है। अनेक अति महत्वपूर्ण आविष्कारों में से एक आविष्कार है कलम और पुस्तक। कलम की धार जहां सबसे अधिक तीव्र मानी जाती है, वहीं पुस्तक का स्वर सबसे अधिक तीखा। वे हमसे और आपसे बातें भी करती हैं। पुस्तकों की आवाज़ वहां तक पहुंचती है, जहां तक कोई आवाज़ नहीं पहुंच पाती। आदित्य रहबर ने अपनी कविता 'किताबें' में लिखा है कि–

पुस्तकें व्यक्ति के अंतर्मन और व्यक्तित्व को पूरी तरह संवार देती हैं। पढ़ना एक छेनी की तरह है। छेनी का प्रयोग पत्थर की आकृति को संवारने में किया जाता है। अगर छेनी का प्रयोग न किया जाए तो पत्थर किसी कलाकृति और आकृति में न ढल पाए। उसी तरह यदि पुस्तकें न होतीं तो व्यक्ति का व्यक्तित्व खुरदरा ही रहता। पुस्तकें पढ़ने से व्यक्ति का खुरदरा व्यक्तित्व चिकना होता है। अबिगैल वैन बुरेन से गंभीर पाठक अवश्य परिचित होंगे। उन्हें 'प्रिय एब्बी' के नाम से भी जाना जाता है। वे एक मार्गदर्शन प्रदान करने वाला कॉलम लिखा करती थीं। उनका यह मार्गदर्शन वाला कॉलम 50 से भी अधिक वर्षों से चल रहा है। उनके उस कॉलम को पढ़कर अनेक लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है। एक बार उनसे कहा गया कि यदि आपको युवाओं को कोई सलाह देने के लिए कहा जाए तो आप उन्हें क्या सलाह देंगी? इस पर वे मुस्कराते हुए बोलीं, 'यदि मैं युवाओं को सलाह दूंगी तो यह है पढ़ो, पढ़ो, पढ़ो! पढ़कर आप वास्तविक और काल्पनिक संसारों के लिए द्वार खोल देंगे। जानकारी के लिए पढ़ें, आनंद के लिए पढ़ें। हमारे पुस्तकालय ज्ञान तथा आनंद से भरे हुए हैं और यह सब यहां पर मौजूद हैं। जो व्यक्ति पढ़ता नहीं है, वह उस व्यक्ति से बेहतर स्थिति में नहीं है, जो पढ़ नहीं सकता।' पुस्तकें जीवन का ऐसा हथियार हैं जो मुसीबत और समस्याओं के सामने सर्वोत्तम हथियार साबित होती हैं। पुस्तकें बोलती हैं क्योंकि

इनको पढ़ने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व में गजब का सकारात्मक परिवर्तन आ जाता है। पुस्तकों से बातें करने वाला व्यक्ति समाज को ऐसे मार्ग पर ले जाता है जहां पर समाज सुखद परिवर्तनों से चौंक उठता है।

यशोदा, उत्तर प्रदेश स्थित कौशांबी गांव से है। उनका परिवेश पूरी तरह से हिन्दी था। उन्होंने 12वीं कक्षा हिन्दी माध्यम से पास की थी। बचपन से ही यशोदा को पढ़ने का बहुत शौक था। किताबों के इस शौक ने यशोदा को न केवल मुसीबतों से उभारा, बल्कि उसके अंदर एक ऐसा हुनर भी उत्पन्न किया जिससे गांव वाले दांतों तले अंगुली दबाते रह गए।

लगभग 28 वर्षीय यशोदा विवाहित है। पहले यशोदा ग्रामीण बहुओं की तरह रहकर अपने सास-ससुर की सेवा करती थी। एक दिन उनके पति राधे सड़क दुर्घटना के शिकार हो गए। वे दिहाड़ी मजदूर थे। उनके बिस्तर में पड़ने से रोजी-रोटी की दिक्कतें बढ़ गईं। घर का गुजारा चलाना मुश्किल हो गया। अब परिवार क्या करे? ऐसे में यशोदा ने पुस्तकों के माध्यम से स्वयं को निखारा। उसने बहुत सोचा-विचारा कि आखिर अपने पुस्तक प्रेम से वह कैसे रोजगार की तलाश पूर्ण करे?

एक दिन उसने अपने आसपास देखा तो पाया कि वहां की बालिकाएं और युवा अंग्रेजी से बहुत झिझकते थे। बस यशोदा को राह मिल गई और वे इस राह पर चल पड़ी। किसी को कुछ सिखाने से पहले उसमें स्वयं प्रवीण होना अनिवार्य है। ऐसे में यशोदा ने कमर कस ली। उन्होंने अंग्रेजी की पुस्तकें एवं समाचार-पत्र पढ़ने आरंभ कर दिए। अनेक पुस्तकें ऑनलाइन ऑर्डर कर उनको पढ़ा। पुस्तकें पढ़ने के बाद उन्होंने अंग्रेजी बोलने और लिखने का अभ्यास किया। अंग्रेजी बोलने वाले वीडियो लगातार सुने। जब उन्हें लगा कि अब वे अपने कार्य में कुशल हो गई हैं तो उन्होंने गांव की बच्चियों और विद्यार्थियों को अंग्रेजी की कक्षाएं देनी आरंभ कर दीं। उन्होंने अपना अंग्रेजी सिखाने का यूट्यूब चैनल भी खोल लिया। कुछ ही समय बाद उनका गांव प्रसिद्ध हो गया। जब लोगों ने यह देखा कि एक ग्रामीण बहू घूंघट में अंग्रेजी बोलती है तो सभी ने दांतों तले अंगुली दबा ली। यशोदा का कहना है कि, 'यदि पुस्तकें मेरी मित्र नहीं होतीं तो मैं कभी भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाती। आज मैं जो कुछ भी हूं वह सिर्फ पुस्तकों के कारण हूं।'

यशोदा के गांव में अब सभी शिक्षा और पुस्तकों के महत्व को समझ गए हैं।

लैकोरडेयर का कहना है कि, 'जीवन को सुखी बनाने के लिए केवल तीन चीजें आवश्यक हैं– ईश्वर की कृपा, पुस्तकें और एक मित्र।' जो व्यक्ति पुस्तकों की आवाज सुनता है, उनको गुनता है उस पर ईश्वर की कृपा स्वयंमेव ही हो जाती है। इसके साथ ही उसके अच्छे मित्र भी बन जाते हैं क्योंकि ज्ञानवान और विवेक व्यक्ति का साथ सभी पसंद करते हैं।

पुस्तकें बोलती हैं, बातें करती हैं और राह दिखाती हैं। यदि आपने अभी तक पुस्तकों से बातें करना आरंभ नहीं किया है तो देर मत कीजिए। आज और अभी किसी भी पुस्तक को उठाइए, उसे खोलिए और पढ़ना आरंभ कर दीजिए। पुस्तक पढ़ने के बाद आप पाएंगे कि आपके ज्ञान चक्षु पूरी तरह खुल गए हैं।

लोकतंत्र अभी और परिपक्व हो

70 के दशक में हुए जयप्रकाश आन्दोलन के बाद से किसी भी राजनैतिक दल ने आम मतदाताओं को लोकतंत्र के इस महापर्व के लिए प्रशिक्षित नहीं किया है। जबकि अगर ऐसा किया होता तो इन दलों को चुनाव के पहले मतदाताओं को खैरात बांटने और उनके सामने लम्बे-चौड़े झूठे वायदे करने की नौबत नहीं आती।

अभी आम चुनाव का प्रथम चरण ही पूरा हुआ है, पर ऐसा नहीं लगता कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनाव जैसी कोई महत्वपूर्ण घटना घट रही है। चारों ओर एक अजीब सन्नाटा है। न तो गांव, कस्बों और शहरों में राजनैतिक दलों के होर्डिंग और पोस्टर दिखाई दे रहे हैं और न ही लाऊडस्पीकर पर वोट मांगने वालों का शोर सुनाई दे रहा है, चाय के ढाबों और पान की दुकानों पर अक्सर जमा होने वाली भीड़ भी खामोश है। जबकि पहले चुनावों में ये शहर के वो स्थान होते थे जहां से मतदाताओं की नब्ज पकड़ना आसान होता था।

आज मतदाता खामोश है। इसका क्या कारण हो सकता है। या तो मतदाता तय कर चुके हैं कि उन्हें किसे वोट देना है, पर अपने मन की बात को जुबान पर नहीं लाना चाहते। लेकिन एक तो जनता की बात नेता तक पहुंचती है, दूसरा ऐसे संवादों से जनता जागरूक होती है। अलबत्ता शासन में जो दल बैठा होता है वो कभी नहीं चाहता कि उसकी नीतियों पर खुली चर्चा हो। इससे माहौल बिगड़ने का खतरा रहता है। हर शासक यही चाहता है कि उसकी उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ाकर मतदाता के सामने पेश किया जाए।

सब मानते हैं कि किसी भी देश में लोकतान्त्रिक व्यवस्था ही सबसे अच्छी होती है क्योंकि इसमें समाज के हर वर्ग को अपनी सरकार चुनने का मौका मिलता है। इस शासन प्रणाली के अन्तर्गत आम आदमी को अपनी इच्छा से चुनाव में खड़े हुए किसी भी प्रत्याशी को वोट देकर अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है। इस तरह चुने गए प्रतिनिधियों से विधायिका बनती है। एक अच्छा लोकतन्त्र वह है जिसमें राजनीतिक और सामाजिक न्याय के साथ-साथ आर्थिक न्याय की व्यवस्था भी है। देश में यह शासन प्रणाली लोगों को सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करती है।

आज भारत में जो परिस्थिति है उसमें जनता भ्रमित है। उसे अपनी बुनियादी समस्याओं की चिंता है। क्षेत्रीय दलों के नेता काफी तेज़ी से अपने इलाके के मतदाताओं पर पकड़ बना रहे हैं और उन सवालों को उठा रहे हैं जिनसे देश का किसान, मजदूर और नौजवान चिंतित हैं। हालांकि चुनाव की हवा मतदान के 24 घंटे पहले भी पलट जाती है इसलिए कुछ कहा नहीं जा सकता।

70 के दशक में हुए जयप्रकाश आन्दोलन के बाद से किसी भी राजनैतिक दल ने आम मतदाताओं को लोकतंत्र के इस महापर्व के लिए प्रशिक्षित नहीं किया है। जबकि अगर ऐसा किया होता तो इन दलों को चुनाव के पहले मतदाताओं को खैरात बांटने और उनके सामने लम्बे-चौड़े झूठे वायदे करने की नौबत नहीं आती। हर दल का अपना एक समर्पित काडर होता। जबकि आज काडर के नाम पर पैसा देकर कार्यकर्ता जुटाए जाते हैं या वे लोग सक्रिय होते हैं जिन्हें सत्ता मिलने के बाद अवसरों की तलाश होती है। ऐसे किराये के कार्यकर्ताओं और विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव ही दल बदल का मुख्य कारण है। इससे राजनेताओं की और उनके दलों की साख तेजी से गिरी है। एक दृष्टि से इसे लोकतंत्र के पतन का प्रमाण माना जा सकता है। हालांकि दूसरी ओर ये मानने वालों की भी कमी नहीं है कि इन सब आंधियों को झेलने के बावजूद भारत का लोकतंत्र मजबूत हुआ है। उसके करोड़ों आम मतदाताओं ने बार-बार राजनैतिक परिपक्वता का परिचय दिया है। जब उसने बिना शोर मचाये अपने मत के जोर पर कई बार सत्ता परिवर्तन किये हैं।

मतदाता की राजनैतिक परिपक्वता का एक और प्रमाण ये है की अब निर्दलीय उम्मीदवारों का प्रभाव लगभग समाप्त हो चला है। 1951 के आम चुनावों में 6 निर्दलीय उम्मीदवार जीते थे जबकि 2019 के चुनाव में इनकी संख्या घटकर मात्र 0.11 रह गई। स्पष्ट है कि मतदाता ऐसे उम्मीदवारों के हाथ मजबूत नहीं करना चाहता जो अल्पमत की सरकारों से मोटी रकम ऐंठकर समर्थन देते हैं। मतदाताओं की अपेक्षा और विश्वास संगठित दलों और नेताओं के प्रति है यदि वे अपने कर्तव्य का सही पालन करें तो। इसलिए हमें निराश नहीं होना है। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हमारे परिवार और समाज में राजनीति के प्रति समझ बढ़े और हर मतदाता अपने मत का प्रयोग सोच-समझकर करे। कोई नेता या दल मतदाता को भेड़-बकरी समझकर हांकने की जुर्रत न करे।

क्या हम मानसिक संतुलन खोने लगे हैं?

नवीनतम आंकड़ों के अनुसार अब हमारे देश की जनसंख्या 1 अरब, 44 करोड़ तक पहुंच गई है। अब हम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का दर्जा भी पा चुके हैं। ऐसी स्थिति में हम अपने लोकतंत्र को किसी भी अराजकता की दहलीज पर नहीं ला सकते। जितना बड़ा देश, उतनी ही अधिक चुनौतियां, उतनी ही अधिक समस्याएं।

कभी-कभी डर लगता है, सोशल मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और डिजिटल-मीडिया की भीड़ में हम अपना मानसिक संतुलन खोने लगते हैं। राजनैतिक दलों के प्रवक्ताओं की भीड़, निरंतर आक्रामक व असभ्य होती हुई भाषा, 'फेक-न्यूज' के अम्बार और लगातार बढ़ती हुई अराजकता आने वाले समय में हिंसा, घृणा, असहिष्णुता व वहशियत की ओर धकेलने लगी है। वैसे भी हमारे अपने देश में हर भारतीय औसतन डेढ़ घंटा प्रतिदिन इंटरनेट खंगालता है। यह तथ्य भी चौंकाता है कि 50 प्रतिशत भारतीय युवा हर दिन औसतन तीन घंटे नेट पर या किसी वेबसाइट पर चिपके रहते हैं। चिंता की बात यह है कि इस डिजीटल दुनिया में हमारी स्वतंत्र और सार्थक सोच, कला, साहित्य, संस्कृति, विरासत, कल्पना शक्ति, संगीत आदि में दिलचस्पी घटती जा रही है। यह तथ्य भी कम खतरनाक नहीं कि लाखों की संख्या में बढ़ते यू-ट्यूबर्स और सोशल मीडिया एक्टिविटिज हमें लगातार ऐसी सामग्री व सूचनाएं परोस रहे हैं जिनका कई बार सच्चाई, तथ्यों व प्रामाणिकता से कोई वास्ता नहीं होता है। हमारे कान व हमारी आंखें लगातार झूठी सामग्री के अम्बारों में से गुज़र रही हैं और हम में भी जो एक्टिव, सोशल मीडिया-यूजर्स हैं अपने-अपने बेतुके, दिशाहीन, निरर्थक और भड़काऊ सामग्री फैंकने लगे हैं। सक्रिय यू-ट्यूबर्स चैनलों की संख्या हमारे अपने देश में 80 हजार से भी अधिक हो चली है और अपने-अपने चैनल के ग्राहक (सब्सक्राइबर) बढ़ाने के लिए चौंकाने वाली सामग्री परोसी जा रही है। अधिकांश सामग्री हमारी सोचने की शक्ति कुन्द करने लगी है और सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि इस अराजक होते माहौल पर कोई भी पूरी कानूनी रोक संभव नहीं है। हमारे देश में 46 करोड़ 20 लाख उपभोक्ता इस सामग्री का उपभोग करने पर विवश हैं और संयम की भाषा कमोबेश सभी पक्ष भूलने लगे हैं।

ऐसे माहौल में सकारात्मक सामाजिक बर्ताव, सामाजिक संबंध, संवेदनाएं, सहानुभूति आदि के लिए जगह ही नहीं बच पा रही। इसी अराजक होते हुए माहौल में लगभग दो हज़ार राजनैतिक पार्टियां कुकुरमुत्तों की तरह प्रकट हो चुकी हैं। इनमें छह बड़े राजनैतिक दल हैं जबकि क्षेत्रीय दलों की संख्या भी 50 से बढ़ गई है। सबके पास सोशल मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक चैनलों की अकूत सम्पदा है। हमारे देश में ड्राइविंग लाइसेंस के लिए तो टैस्ट लेने का प्रावधान है मगर लगातार अराजक होते हुए चैनलों, प्रवक्ताओं, यू-ट्यूबर्स, सोशल मीडिया पर सक्रिय लोगों के लिए न कोई 'टेस्ट' देना होता है, न ही कोई योग्यता दरकार है।

नवीनतम आंकड़ों के अनुसार अब हमारे देश की जनसंख्या 1 अरब, 44 करोड़ तक पहुंच गई है। अब हम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का दर्जा भी पा चुके हैं। ऐसी स्थिति में हम अपने लोकतंत्र को किसी भी अराजकता की दहलीज पर नहीं ला सकते। जितना बड़ा देश, उतनी ही अधिक चुनौतियां, उतनी ही अधिक समस्याएं। हमने अनेकता में एकता को भी अपना आधार माना है। देश में 114 मुख्य भाषाएं बोली जाती हैं। इनमें से केवल 22 भाषाएं ही संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल हैं। अब अन्य भाषाओं में सन्थाली (0.62 प्रतिशत), बोडो (0.25 प्रतिशत), मिताई, डोगरी, गोंडी आदि विशेष रूप से चर्चा में रहती हैं। कोंकणी, नेपाली भी भारतीय भाषा परिवार में शामिल है। देश की साहित्य अकादमी कोंकणी में भी पुरस्कार देती है और मेथिली में भी। मगर हरियाणा वालों की यह शिकायत भी वाजिब है कि प्रदेश में हरियाणवी में हर वर्ष लगभग 500 कृतियां रची जाती हैं, प्रकाशित होती हैं। इनमें गज़लें भी हैं, कविताएं भी और गद्य भी। मगर हरियाणवी अभी भी मान्यता की मोहताज है। ऐसी ही शिकायतें कुछ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को लेकर भी हैं।

एक और ज्वलंत पहलू आदिवासी-वर्गों को लेकर उठाया जाता है। जल-जंगल और ज़मीन से जुड़ी दर्जनों जनजातियां हैं, जिनमें व्यापक असंतोष फैला हुआ है। इनकी अपनी लोक संस्कृति है, अपना साहित्य है, अपनी धार्मिक आस्थाएं हैं। अपना पहनावा है, अपने खाद्य पदार्थ हैं, अपनी डिशिज हैं। विविधा भरे इस भारतीय समाज में एकरूपता लाना आसान नहीं है। इतना ही नहीं इन आदिवासियों के बीच इनका अपना 'सोशल मीडिया' भी सक्रिय रहता है।

डी गुकेश कैंडिडेट्स चेस टूर्नामेंट जीतने वाले सबसे युवा खिलाड़ी

17 साल की उम्र में जीता, विश्वनाथन आनंद के बाद टूर्नामेंट जीतने वाले दूसरे भारतीय

नई दिल्ली ● एजेंसी

भारत के 17 साल के ग्रैंडमास्टर डी गुकेश ने टोरंटो में कैंडिडेट्स शतरंज टूर्नामेंट जीतकर इतिहास रच दिया। वे वर्ल्ड खिताब के लिए सबसे कम उम्र में चुनौती देने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। अब वर्ल्ड चैंपियन खिताब के लिए उनकी भिड़ंत चीन के डिंग लिरेन से होगी। गुकेश से पहले 1984 में रूसी खिलाड़ी गैरी कास्परोव ने सबसे कम उम्र 22 साल में यह टूर्नामेंट जीता था।

वर्ल्ड चैंपियन खिताब के लिए चीन के डिंग लिरेन से भिड़ेंगे गुकेश

अब गुकेश वर्ल्ड चैंपियन खिताब के लिए इस साल के आखिर में चीन के डिंग लिरेन से भिड़ेंगे। हालांकि यह मुकाबला कब होगा और कहां खेला जाएगा, इसकी घोषणा नहीं की गई है।

गुकेश को टूर्नामेंट में 14 में से 9 अंक मिले

गुकेश ने टूर्नामेंट में 14 में से 9 अंक हासिल कर खिताब पर कब्जा जमाया। उन्होंने टूर्नामेंट के अपने आखिरी मुकाबले में अमेरिका के हिकारू नाकामुरा के खिलाफ ड्रॉ खेला। इससे उनके अंक 8.5 से बढ़ कर 9 हो गए। वहीं उन्होंने फ्रांस के फिरोजा अलीरेजा को हराकर अपने पॉइंट 8.5 कर लिए थे। अलीरेजा को हराने के साथ ही गुकेश ने टूर्नामेंट में नेपोमनियाच्ची, नाकामुरा और अमेरिका के फैबियानो कारूआना से हाफ अंक की बढ़त ले ली थी।

गुकेश यह टूर्नामेंट जीतने वाले दूसरे भारतीय

गुकेश यह टूर्नामेंट जीतने वाले दूसरे भारतीय हैं। उनसे पहले पांच बार के वर्ल्ड चैंपियन विश्वनाथन आनंद ने 2014 में यह टूर्नामेंट जीता था। तब वे 45 साल के थे।

गुकेश ने जीत के बाद कहा, बहुत खुशी हो रही है। मैं उस रोमांचक खेल (फैबियो कारुआना और इयान नेपोमनिआचची के बीच) को देख रहा था, फिर मैं अपने सहयोगी (ग्रिगोरी गैजेव्स्की) के साथ टहलने गया, मुझे लगता है कि इससे मदद मिली।%

एशियन गेम्स में सिल्वर जीतने वाले टीम के सदस्य

गुकेश ने पिछले साल चीन के हांग्जो एशियन गेम्स में सिल्वर मेडल जीता था। 2015 में गुकेश एशियाई स्कूल शतरंज चैंपियनशिप में अंडर-9 का खिताब जीतने के साथ कैंडिडेट मास्टर बने थे। गुकेश ने अब तक 5 गोल्ड एशियाई यूथ चैंपियनशिप जीती हैं। 2019 में वे भारत के सबसे युवा और वर्ल्ड के दूसरे सबसे युवा ग्रैंडमास्टर बने थे।

विश्वनाथन आनंद ने दी गुकेश को बधाई

गुकेश को यह टूर्नामेंट जीतने पर 88,500 यूरो (लगभग 78.5 लाख रुपए) का नकद पुरस्कार भी मिला। कैंडिडेट्स की कुल पुरस्कार राशि 5,00,000 यूरो थी। विश्वनाथन आनंद ने ट्विटर पर युवा खिलाड़ी को बधाई देते हुए लिखा, सबसे युवा चैलेंजर बनने के लिए डी गुकेश को बधाई। आपने जो हासिल किया है उस पर बहुत गर्व है। मुझे निजी तौर पर बहुत गर्व है कि आपने कैसे खेला और कठिन परिस्थितियों को संभाला। इस पल का आनंद लें।

इस तरह के मैचों में शांतचित्त रहना कठिन है : केकेआर कप्तान श्रेयस

कोलकाता नाइट राइडर्स के कप्तान श्रेयस अय्यर ने स्वीकार किया कि रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर के खिलाफ एक रन से मिली जीत जैसे करीबी मुकाबलों में शांतचित्त बने रहना कठिन होता है लेकिन टीम की जीत से उन्हें काफी इत्मीनान मिला। केकेआर ने छह विकेट पर 222 रन बनाए जिसके जवाब में आरसीबी मैच की आखिरी गेंद पर 221 रन पर आउट हो गई। श्रेयस ने मैच के बाद कहा कि इतने सारे जज्बात के बीच आप पूरी तरह से थक जाते हैं। शांतचित्त रहना कठिन होता है लेकिन मैं खुश हूं। हमें 2 अंक मिले और यही मायने रखता है। उन्होंने कहा कि दबाव का सामना करना बहुत कठिन होता है। मेरा मानना है कि हर किसी को जिम्मेदारी लेनी होती है। आंद्रे रसेल ने 20 गेंद में 27 रन बनाने के बाद तीन विकेट भी लिए। श्रेयस ने कहा कि रसेल ने मैच का पासा हमारी तरफ पलट दिया। टीम में इस तरह के तेवरों की जरूरत है। आखिरी ओवर में कर्ण शर्मा ने मिचेल स्टार्क को 3 छक्के लगाकर आरसीबी को लगभग जीत दिला ही दी थी लेकिन श्रेयस ने स्टार्क का बचाव किया। उन्होंने कहा कि यह मजेदार खेल है। 6 गेंद में 18 रन चाहिए हो तो गेंदबाज पर दबाव रहता है। एक छक्के से मैच की तस्वीर बदल जाती है। यह जरूरी था कि हम शांतचित्त रहे और बल्लेबाज को गलती करने पर मजबूर करें। आरसीबी की यह लगातार छठी हार थी।

पंजाब ने रिव्यू में गंवाए 2 विकेटः हरप्रीत भाटिया DRS के कारण ही बचे, मिलर ने छोड़ा कैच

नई दिल्ली ● एजेंसी

मुल्लांपुर इंडियन प्रीमियर लीग (IPL) के 17वें सीजन में गुजरात टाइटंस को चौथी जीत मिली। टीम ने पंजाब किंग्स को 3 विकेट से हरा दिया। पंजाब के हरप्रीत भाटिया DRS में बचे लेकिन 20वें ओवर की आखिरी बॉल पर रनआउट हो गए। पंजाब के 2 बैटर्स DRS के कारण आउट भी हुए। गुजरात के डेविड मिलर ने हरप्रीत बरार का कैच छोड़ा, वहीं राहुल तेवतिया ने चौका लगाकर टीम को जीत दिलाई।

पंजाब ने रिव्यू में 2 विकेट गंवाए

पंजाब किंग्स के 2 बैटर्स DRS के कारण आउट हो गए, पहले राइली रुसो रहे, वहीं दूसरे कप्तान सैम करन रहे। 7वें ओवर की आखिरी बॉल नूर अहमद ने लेग स्टंप पर गुड लेंथ फेंकी। बॉल रुसो के पैड्स पर लगी, गुजरात ने LBW की अपील की लेकिन अंपायर ने नॉटआउट दिया। गुजरात ने रिव्यू लिया और रुसो को 9 रन के स्कोर पर पवेलियन लौटना पड़ा। 8वें ओवर में फिर राशिद खान ने सैम करन के खिलाफ लेग स्टंप पर गुड लेंथ बॉल फेंकी। गुजरात ने फिर LBW की अपील की, लेकिन अंपायर ने नॉटआउट का फैसला सुनाया। टीम ने रिव्यू लिया और अब करन को 20 रन के स्कोर पर पवेलियन लौटना पड़ा।

DRS के कारण बचे हरप्रीत भाटिया

पंजाब के जहां 2 बैटर्स DRS के कारण आउट हुए, वहीं हरप्रीत भाटिया DRS के कारण ही बच गए। 17वें ओवर की पहली बॉल शाहरुख खान ने गुड लेंथ पर फेंकी, बॉल सीधे भाटिया के पैड्स पर लगी। गुजरात ने LBW की अपील की और अंपायर ने आउट का फैसला सुना दिया। इस बार पंजाब के बैटर भाटिया ने रिव्यू ले लिया, रिप्ले में दिखा कि बॉल लेग स्टंप को मिस करते हुए जा रही है। अंपायर ने अपना फैसला बदला और भाटिया 7 रन के स्कोर पर नॉटआउट रहे।

मार्क चैपमैन की तूफानी फिफ्टी, पाकिस्तान ने गंवाया तीसरा टी20

रावलपिंडी ● एजेंसी

रावलपिंडी के मैदान पर न्यूजीलैंड ने पाकिस्तान के खिलाफ खेले गए तीसरे टी20 मुकाबले को मार्क चैपमैन की तूफानी फिफ्टी की बदौलत 7 विकेट से जीत लिया। पाकिस्तान ने पहले खेलते हुए सैम आयुब के 32, कप्तान बाबर आजम के 37, रिजवान के 22, इरफान खान के 30 तो शादाब खान के 20 गेंदों पर 41 रन की बदौलत 178 रन बनाए थे। जवाब में खेलने उतरी न्यूजीलैंड को टिम रोबिन्सन और टिम सेफर्ट ने तेज शुरूआत दी। लेकिन इसके बाद मार्क चैपमैन ने 42 गेंदों पर 87 रन बनाकर 19वें ओवर में अपनी टीम को जीत दिल दी। इसी के साथ पांच मैचों की सीरीज में दोनों टीमें 1-1 की बराबरी पर आ गई है। सीरीज का पहला मैच बारिश के कारण रद्द हो गया था। मुकाबला जीतने के बाद न्यूजीलैंड के मार्क चैपमैन ने कहा कि यहां आकर हमेशा अच्छा लगा। श्रृंखला बराबर करके खुश हूं। पाकिस्तान के पास बेहतरीन आक्रमण है लेकिन उसका पीछा करना काफी मुश्किल था। यह हमारा शानदार गेंदबाजी प्रदर्शन था। कल हमने विकेट जल्दी-जल्दी खोए और इससे गेम धीमा हो गया। हमारे लिए 100 से अधिक रनों की साझेदारी करना बहुत अच्छा था। हम जानते हैं कि पाकिस्तान की डेथ बॉलिंग शानदार है, हम आज रात शीर्ष पर आने में कामयाब रहे। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने कहा कि दुर्भाग्य से हम 10 रन कम रह गए। मुझे लगता है कि शादाब ने अच्छी रिकवरी की और अच्छी साझेदारी बनाई। मुझे लगता है कि मेरे हिसाब से 180-190 बराबर स्कोर था। हमने स्थिति के मुताबिक खेलने की कोशिश की। शादाब ने अपनी योजनाओं को लागू किया और अपना स्वाभाविक खेल खेला। उन्होंने मांग के अनुरूप खेला। हमने पावरप्ले में अच्छी शुरुआत की। यदि आप कैच छोड़ते हैं तो इसका खामियाजा आपको भुगतना पड़ेगा।

धर्मशाला में होगा देश का पहला एसआईएस ग्रास हाइब्रिड पिच वाला स्टेडियम

शिमला ● एजेंसी

हिमाचल प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन क्रिकेट में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने में हमेशा सबसे आगे रहा है। राज्य में क्रिकेट के प्रबंधन निकाय एचपीसीए ने हाल ही में अपनी अभ्यास सुविधाओं में एसआईएसग्रास हाइब्रिड पिच टेक्नोलॉजी पेश करने के लिए एक रोमांचक पहल की है। यह कदम यह सुनिश्चित करेगा कि अभ्यास पिचें उच्चतम गुणवत्ता वाली हों क्योंकि पारंपरिक पिचें कठोर प्रशिक्षण कार्यक्रम नहीं झेल सकतीं और जल्दी ही खराब हो जाती हैं जिससे खिलाड़ियों के लिए अभ्यास के बेशकीमती अवसर सीमित हो जाते हैं। एसआईएसग्रास, नीदरलैंड स्थित एसआईएस पिचेज समूह की कंपनियों का अंग है और धर्मशाला के खूबसूरत एचपीसीए स्टेडियम में पहली बार हाइब्रिड पिच इंस्टॉलेशन में अपने क्रांतिकारी निवेश के साथ भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए तैयार है। यह अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी अधिक टिकाऊ, सुसंगत और उच्च प्रदर्शन वाली खेल की पिच प्रदान कर इस खेल के अनुभव में आमूल परिवर्तन लाएगी।

एसआईएसग्रास प्रौद्योगिकी खिलाड़ियों को सुरक्षा, स्थायित्व और शानदार खेलने की क्षमता का बेजोड़ संयोजन प्रदान करती है। शानदार एचपीसीए स्टेडियम अपनी तरह की पहले हाइब्रिड पिच इंस्टॉलेशन के लिए तैयार है। इस पिच के इंस्टॉलेशन के बारे में एचपीसीए के मानद अध्यक्ष, आर पी सिंह ने कहा, प्रशंसकों के बीच धर्मशाला स्टेडियम ऐसे स्टेडियम के रूप में उभर रहा है जिसकी मांग बढ़ रही है और यह अपने सुरम्य परिवेश तथा सुंदर माहौल के लिए प्रसिद्ध है और घरेलू, अंतरराष्ट्रीय तथा आईपीएल मैचों की मेज़बानी करता है। एचपीसीए ने क्रिकेट में लगातार उन्नत प्रौद्योगिकी को अपनाया है। उत्कृष्टता केंद्र में हमारी अत्याधुनिक इनडोर सुविधाओं से लेकर एलईडी लाइटिंग और कुशल जल निकासी के लिए एसआईएस एयर सिस्टम को लागू करने तक हम खिलाड़ियों और प्रशंसकों के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए समर्पित हैं। देश में एसआईएसग्रास की अभूतपूर्व हाइब्रिड पिच प्रौद्योगिकी का आगमन हमारे राष्ट्रीय क्रिकेट के लिए अभूतपूर्व क्षण का प्रतीक है। यह नवोन्मेषी दृष्टिकोण खेल को उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों तक ले जाने की हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। इंग्लैंड के पूर्व खिलाड़ी और एसआईएस के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट निदेशक,पॉल टेलर ने कहा, भारत के शानदार क्रिकेट परितंत्र में नई और बेहतर प्रौद्योगिकी को शामिल कर हमें उम्मीद है कि इसके विकास में उल्लेखनीय बढ़ोतरी होगी। धर्मशाला में हाइब्रिड पिच स्थापित करने के लिए यूनिवर्सल मशीन का उपयोग किया जा रहा है जिसे एसआईएसग्रास ने पहली बार 2017 में विकसित किया था।

एपल 3 साल में 5 लाख भारतीयों को देगा नौकरी

अभी 1.5 लाख लोग काम कर रहे, चीन से अपनी आधी सप्लाई चेन भारत शिफ्ट करेगी कंपनी

नई दिल्ली ● एजेंसी

आईफोन बनाने वाली कंपनी एपल अगले 3 साल में भारत में 5 लाख लोगों को नौकरी दे सकती है। ये नौकरियां वेंडर्स और कंपोनेंट्स सप्लायर्स के जरिए जनरेट होंगी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने न्यूज एजेंसी PTI को बताया, एपल भारत में अपॉइंटमेंट में तेजी ला रहा है।

उन्होंने बताया कि वर्तमान में एपल के वेंडर्स और सप्लायर्स भारत में 1.5 लाख लोगों को रोजगार देते हैं। इनमें एपल के दो मैन्युफैक्चरिंग प्लांट ऑपरेट करने वाली कंपनी टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स सबसे बड़ी जॉब जनरेटर है। हालांकि एपल की ओर से इस बारे में कोई बयान नहीं आया है।

चीन से सप्लाई चेन का आधा हिस्सा भारत शिफ्ट करने की प्लानिंग

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, एपल ने कोरोना महामारी के बाद से ही चीन पर अपनी निर्भरता कम करने की रणनीति अपनाई हुई है और भारत में निवेश कर रही है।

कंपनी की प्लानिंग अगले 3 साल में अपनी मौजूदा सप्लाई चेन का कम से कम आधा हिस्सा चीन से भारत ट्रांसफर करने की है। इसके तहत भारतीय सप्लायर्स पर जोर देना शुरू कर दिया है।

कंपनी का टारगेट अगले 4 से 5 साल में भारत में अपने प्रोडक्शन को 5 गुना से ज्यादा बढ़ाकर 40 बिलियन अमेरिकी डॉलर (करीब 3.32 लाख करोड़ रुपए) तक पहुंचाना है।

एपल का पूरी दुनिया में सबसे अधिक घरेलू वैल्यू एडिशन चीन में Apple के अलावा दुनिया की और भी कई कंपनियों ने इस रणनीति को अपनाया हुआ है, जिसे चीन प्लस वन पॉलिसी के नाम से जाना जाता है।

फिलहाल एपल का पूरी दुनिया में सबसे अधिक घरेलू वैल्यू एडिशन चीन में ही है, जो करीब 28% है। वहीं भारत में वैल्यू-एडिशन करीब 11-12% है, जिसके 15-18% तक जाने की उम्मीद है।

सामान्य मॉनसून से कृषि रसायन शेयर भी झूमेंगे, भारतीय कंपनियां निर्यातकों से बेहतर प्रदर्शन करेंगी

नई दिल्ली ● एजेंसी

नई दिल्लीः निजी मौसम अनुमान एजेंसी स्काईमेट और भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) ने इस साल भारत में सामान्य मॉनसून का अनुमान जताया है। बेहतर बारिश की उम्मीद में घरेलू कृ?षि रसायन या एग्री-इनपुट कंपनियों के लिए परिदृश्य सुधरने की संभावना है। ब्रोकरेज फर्मों का मानना है कि घरेलू कंपनियां वित्त वर्ष 2024 की मार्च तिमाही और वित्त वर्ष 2025 में निर्यातकों से बेहतर प्रदर्शन करेंगी। चीन से ज्यादा आयात, प्रा?प्तियों पर दबाव और ज्यादा स्टॉक होने से दिसंबर तिमाही में ?कृ?षि इनपुट के लिए मांग कमजोर रही थी। रबी सीजन में सामान्य से कम बारिश और जलाशयों में कम पानी की वजह से धारणा प्रभावित हुई थी। मार्च तिमाही में कुछ सुधार देखा जा सकता है।

नुवामा रिसर्च का मानना है कि घरेलू कृ?षि रसायन कंपनियां मार्च तिमाही में मजबूत वृद्धि दर्ज करेंगी जबकि उर्वरक और वै?श्विक कृ?षि रसायन कंपनियों का प्रदर्शन सुस्त रह सकता है। उर्वरक कंपनियों को स?ब्सिडी घटने से मार्जिन पर दबाव का सामना करना पड़ सकता है और वैश्विक कृषि रसायन कंपनियों को ज्यादा छूट और भंडार कम होने से दबाव से जूझना पड़ सकता है।

ब्रोकरेज के रोहन गुप्ता और रोहन ओहरी धानुका एग्रीटेक जैसी घरेलू कृषि इनपुट कंपनियों पर सकारात्मक बने हुए हैं। उन्होंने कोरोमंडल जैसी उर्वरक कंपनियों से परहेज करने का सुझाव दिया है। उन्होंने मार्जिन दबाव के कारण यूपीएल और शारदा क्रॉपकेप जैसी वै?श्विक कृ?षि रसायन कंपनियों पर नकारात्मक नजरिया अपनाया है। मार्जिन दबाव की वजह से वित्त वर्ष 2024 की चौथी तिमाही में इन कंपनियों को नुकसान और वित्त वर्ष 2025 के लिए आय डाउनग्रेड के जो?खिम का सामना करना पड़ सकता है।

इलारा ?सिक्योरिटीज का मानना है कि चौथी तिमाही घरेलू और वै?श्विक कंपनियों दोनों के लिए कमजोर रहेगी लेकिन वित्त वर्ष 2025 में घरेलू कंपनियों के लिए परिदृश्य अच्छा रहने की संभावना है। ब्रोकरेज के प्रशांत बियाणी और उज्वल वाडीघारे का कहना है, 'आस्ट्रेलिया के मौसम विज्ञान ब्यूरो के अनुसार अल नीनो समाप्त हो रहा है और इस मॉनसून में ला नीना शुरू होने की संभावना है। हमारा मानना है कि ला नीना घरेलू कृ?षि रसायनों के साथ उर्वरक कंपनियों के लिए सकारात्मक होगा। उनकी बिक्री वृद्धि होगी।'

चौथी तिमाही नरम रह सकती है लेकिन बेहतर मॉनसून और पोषण आधारित ज्यादा सबसिडी के कारण अगले वित्त वर्ष का पहला आधा हिस्सा एग्री इनपुट कंपनियों के लिए अच्छा रह सकता है।

Airtel ला रहा बेहतरीन ऑफर, भारतीय कंपनियों को झेलना पड़ सकता है भारी नुकसान

भारतीय टेलिकॉम सेक्टर में जियो से पहले Airtel के यूजर्स सबसे ज्यादा थे। आज के समय में एयरटेल के पास 37 करोड़ से ज्यादा यूजर्स मौजूद हैं। एयरटेल भारत में अपनी अच्छी सर्विस के लिए पहचाना जाता है। कंपनी अपने ग्राहकों के लिए तरह-तरह के किफायती प्लान्स ऑफर करती रहती है। एयरटेल के पास कई ऐसे प्लान्स भी हैं जिनमें कंपनी कई सारे फ्री ऑफर भी मुहैया कराती है। इस बीच एयरटेल अपने यूजर्स के लिए एक बड़ा ऑफर लेकर आ रहा है, जिससे बाकी कंपनियों को परेशानी झेलनी पड़ सकती है। अगर आप ओटीटी स्ट्रीमिंग का शौक रखते हैं तो हम आज आपको एयरटेल का एक सबसे दमदार प्लान बताने जा रहे हैं। कंपनी अपने यूजर्स को इस प्लान में नेटफ्लिक्स का फ्री एक्सेस दे रही है। आपको बता दें कि अगर आप नेटफिल्कस के लिए महीने के लिए सब्सक्रिप्शन लेते हैं।

चालू वित्त वर्ष में मानसून की उम्मीद से ग्रामीण क्षेत्र से रिकॉर्ड बिक्री की उम्मीदः Hyundai

नयी दिल्ली। हुंदै मोटर इंडिया को चालू वित्त वर्ष में भी अनुकूल मानसून की उम्मीद सहित विभिन्न कारकों के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में रिकॉर्ड बिक्री होने की उम्मीद है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह बात कही। देश की दूसरी सबसे बड़ी कार विनिर्माता क्रेटा और वेन्यू जैसे मॉडल बेचती है। हुंदै की बिक्री वृद्धि बीते वित्त वर्ष में शहरी केंद्रों में चार प्रतिशत रही तो वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में यह 11 प्रतिशत रही थी। हुंदै मोटर इंडिया के मुख्य परिचालन अधिकारी तरुण गर्ग ने पीटीआई-से कहा, हमें विश्वास है कि हमारी कुल बिक्री में ग्रामीण बाजारों का योगदान इस वित्त वर्ष में बढ़कर लगभग 20 प्रतिशत हो जाएगा। उन्होंने कहा कि कंपनी छोटे शहरों में अपनी उपस्थिति को और अधिक विस्तारित करने की योजना बना रहा है। गर्ग ने कहा कि वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी की कुल बिक्री में ग्रामीण बिक्री 19 प्रतिशत के सर्वकालिक उच्च स्तर पर रही थी। हुंदै मोटर इंडिया ने 2023-24 में अब तक की सर्वाधिक 7,77,876 वाहनों की बिक्री दर्ज की, जो 2022-23 से आठ प्रतिशत अधिक है। कंपनी ने बीते वित्त वर्ष में 6,14,721 वाहनों की बिक्री के साथ अब तक की सबसे अधिक घरेलू बिक्री भी दर्ज की।

हॉन्गकॉन्ग ने एवरेस्ट और MDH मसाले पर बैन लगायाः दोनों कंपनियों के करी मसालों में पेस्टिसाइड की मात्रा ज्यादा, इससे कैंसर का खतरा

नई दिल्ली हॉन्गकॉन्ग ने MDH प्राइवेट लिमिटेड और एवरेस्ट फूड प्रोडक्ट्स लिमिटेड के करी मसालों की सेल पर बैन लगा दिया है। दोनों कंपनियों के इन प्रोडक्ट्स में कार्सिनोजेनिक पेस्टिसाइड एथिलीन ऑक्साइड की ज्यादा मात्रा होने के कारण यह फैसला लिया गया। इन प्रोडक्ट्स में इस पेस्टिसाइड की ज्यादा मात्रा से कैंसर होने का खतरा है। हॉन्गकॉन्ग से पहले सिंगापुर के अधिकारियों ने भी इसी वजह के चलते एवरेस्ट के फिश करी मसाले को बाजार से वापस मंगाने का आदेश जारी किया था।

MDH ग्रुप के तीन और एवरेस्ट के एक मसाला मिक्स में पेस्टिसाइड

हॉन्गकॉन्ग के फूड सेफ्टी डिपार्टमेंट ने बयान जारी कर कहा कि स्ब्ष्ठ॥ ग्रुप के तीन मसाला मिक्स- मद्रास करी पाउडर, सांभर मसाला पाउडर और करी पाउडर में कार्सिनोजेनिक पेस्टिसाइड एथिलीन ऑक्साइड की मात्रा ज्यादा पाई गई। वहीं रूटीन सर्विलांस प्रोग्राम के तहत एवरेस्ट के फिश करी मसाला में भी यह पेस्टिसाइड पाया गया है। इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर ने एथिलीन ऑक्साइड को ग्रुप 1 कार्सिनोजेन के रूप में क्लासिफाई किया है। फूड रेगुलेशन के अनुसार, ह्यूमन कंजम्पशन के लिए पेस्टिसाइड वाले फूड सिर्फ तभी बेचे जा सकते हैं, जब फूड स्वास्थ्य के लिए खतरनाक या हानिकारक न हों।

वेंडर्स को सेल्स रोकने और प्रोडक्ट्स को हटाने का निर्देश

डिपार्टमेंट ने अपने स्टेटमेंट में कहा कि ष्टस्नस् ने वेंडर्स को इरेग्युलैरिटीज के बारे में सूचित किया और उन्हें सेल्स रोकने और इन प्रोडक्ट्स को हटाने का निर्देश दिया है। सेंटर फॉर फूड सेफ्टी (CFS) के निर्देशों के अनुसार, डिस्ट्रीब्यूटर्स और इम्पोर्टर्स ने प्रभावित प्रोडक्ट्स को वापस मंगाना शुरू कर दिया है।

शेयर बाजार में 200 अंक से ज्यादा की तेजीः निफ्टी में करीब 100 अंक की बढ़त, सेंसेक्स के 30 में से 25 शेयरों में तेजी 5 में गिरावट

मुंबई ● एजेंसी

शेयर बाजार में आज यानी सोमवार, 22 अप्रैल को तेजी देखने को मिल रही है। सेंसेक्स 229 अंक की तेजी के साथ 73,317 के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

वहीं, निफ्टी में भी 85 अंक से ज्यादा की तेजी देखने को मिल रही है। ये 22,232 के स्तर पर कारोबार कर रहा है। आज के कारोबार में सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 25 में तेजी और केवल 5 में गिरावट देखने को मिल रही है।

NSE के सभी सेक्टर में तेजी

हृस्श्व के सभी सेक्टोरल इंडेक्स में तेजी देखने को मिल रही है। सबसे ज्यादा क्क्र बैंक और निफ्टी रियल्टी में जहां 1.07% की तेजी है, वहीं, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स में 1.01% की तेजी है। इसके अलावा निफ्टी बैंक, ऑटो और फाइनेंशियल सर्विसेज जैसे सेक्टर्स में मामूली बढ़त देखने को मिल रही है।

शुक्रवार को बाजार में रही थी तेजी

पिछले हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन यानी शुक्रवार, 19 अप्रैल को शेयर बाजार करीब 600 अंक की तेजी के साथ बंद हुआ था। बाजार के शुरुआती कुछ घंटों में सेंसेक्स करीब 700 अंक तक नीचे जाने के बाद रिकवरी करते हुए 599 अंक बढ़कर 73,088 पर बंद हुआ था।

वहीं, निफ्टी में भी 151.15 अंक की तेजी रही, ये 22,147 के स्तर पर बंद हुआ था। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 22 में तेजी रही और सिर्फ 8 में गिरावट देखने को मिली। शुक्रवार के कारोबार में क्क्र बैंक, प्राइवेट बैंक और फाइनेंशियल सर्विसेज के शेयरों में सबसे ज्यादा तेजी देखने को मिली थी।

कोई भी काम हो, निराश नहीं होने दूंगा - भजनलाल शर्मा

मुख्यमंत्री ने सामाजिक संवाद कार्यक्रम में गुर्जर समाज के लोगों के साथ संवाद किया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

अजमेर। प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार को अजमेर दौरे पर रहे। यहाँ उन्होंने अजमेर के मेडिकल कॉलेज स्थित सभागार में आयोजित सामाजिक संवाद कार्यक्रम में गुर्जर समाज के लोगों के साथ संवाद किया। इससे पहले सीएम ने किशनगढ़ स्थित मार्बल एसोसिएशन में भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं की बैठक की। इसके बाद वे अजमेर पहुंचे और गुर्जर समाज के लोगों से संवाद कर गुर्जर समाज को साधने का प्रयास किया। सीएम शर्मा ने संवाद कार्यक्रम में कहाकि मेरे को रात को लेट बताया था कि अजमेर में कार्यक्रम रखा गया है। आप लोग इस देश के अर्थतंत्र को मजबूत करते, गौ पालक का काम करते हैं। मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूं कि आपकी और हमारी पार्टी की संस्कृति, विचार एक हैं। गुर्जर अपने पशु पालन को भी देखता है वो अन्न की पूर्ति करता है।

सीएम शर्मा ने कहा कि यह आपकी सरकार है, कोई भी काम होगा, किसी प्रकार का काम होगा, आपको निराशा नही हाथ लगने दूंगा। आने वाला समय 26 तारीख को लोकतंत्र का महापर्व है, आप सभी एक एक वोट को कमल के फूल पर दबाना है, बटन वहां दबे और आवाज दिल्ली तक पहुंचें। देश के, राजस्थान के विकास के लिए भाजपा को वोट दें, आप सभी ज्यादा से ज्यादा वोटों से भागीरथ चौधरी को जिताएं। सीएम शर्मा ने राजस्थान में 25 की 25 सीटे जीतने का दावा किया। इस मौके पर गृह राज्यमंत्री जवाहर बेढ़म, देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भड़ाना, दक्षिण विधायक अनीता भदेल, धरोहर प्राधिकरण अध्यक्ष धर्मेश जैन, महापौर ब्रजलता हाडा, उपमहापौर नीरज जैन, शहर जिला अध्यक्ष रमेश सोनी, पूर्ण महापौर धर्मेन्द्र गहलोत, जिला महामंत्री संपत सांखला, युवा मोर्चा देहात अध्यक्ष अर्जुन नलिया सहित अन्य भाजपा नेता मौजूद रहे।

जयपुर : आईपीएल मैच के पास नहीं मिलने पर हंगामा

खेल परिषद सचिव के दफ्तर के बाहर कर्मचारियों का प्रदर्शन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। आईपीएल-2024 के सोमवार को होने वाले मैच के पास को लेकर मारामारी चल रही है। पास नहीं मिलने पर खेल परिषद कर्मचारियों ने सचिव के दफ्तर के बाहर प्रदर्शन किया। कर्मचारियों ने सवाल उठाया कि आखिर पास कहां गए? जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में होने वाले अंतिम मैच के पास नहीं मिलने पर कर्मचारियों के प्रदर्शन का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। मैच के पास को लेकर सचिवालय से लेकर मंत्रालय तक भी मारामारी हो रही है। ग्राउंड के बाहर भी पास लेने वालों की कतार लगी है। वायरल वीडियो पर लोग टिप्पणी कर रहे हैं। इसमें लोग बोल रहे हैं कि आईपीएल मैच के पास ब्लैक हो रहे हैं। एक ट्विटर हैंडल से लिखा है कि सभी को पास चाहिए क्योंकि महंगाई बहुत है। मार्केट में पास खुलेआम बिक रहे हैं। जयपुर में आईपीएल मैच ड्रामा है। इस तरह की टिप्पणी की जा रही है।पास को लेकर सरकार और आयोजकों में भी कई बार खींचतान हो चुकी है।

जयपुर : स्विमिंग पूल में डूबने से युवक की मौत, पानी में उतरने पर फिसल गया था पैर

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। स्विमिंग पूल में डूबने से एक किशोर की मौत हो गई। जो दोस्तों के साथ नहाने के लिए स्विमिंग पूल पर गया था। पानी में उतरकर नहाते समय पैर फिसलने से डूब गया। एसएमएस हॉस्पिटल में इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मानसरोवर थाने में मृतक के चाचा ने लापरवाही से मौत का मामला दर्ज करवाया है। एएसआई राजकुमार ने बताया- हादसे में कीरो की ढाणी मुहाना निवासी कमल (15) की मौत हो गई। वह मुहाना मंडी में फल-सब्जी शॉप पर जॉब करता था। 18 अप्रैल को सुबह करीब 11 बजे कमल अपने दोस्त असलम, विकास व लक्की के साथ बाइक से पत्रकार कॉलोनी के पास एसआर स्विमिंग पूल गया था। स्विमिंग पूल में नहाने के लिए कमल उतरा। पानी में उतरकर नहाते समय पैर फिसलने से डूब गया। कुछ देर बाद दोस्तों ने उसे पानी में डूबते देखकर शोर मचाया। पूल कर्मचारियों की मदद से दोस्तों ने कमल को स्विमिंग पूल से बाहर निकाला। बेहोशी की हालत में उसे धनवंतरी हॉस्पिटल में लेकर गए। हालत गंभीर होने पर उसे एसएमएस हॉस्पिटल में भर्ती करवाया दिया। 20 अप्रैल को इलाज के दौरान कमल की मौत हो गई। मृतक के चाचा रतन मेहरा ने स्विमिंग पूल कर्मचारियों के खिलाफ लापरवाही से मौत का मामला दर्ज करवाया है।

राज्यपाल कलराज मिश्र ने मेहंदीपुर बालाजी की पूजा-अर्चना की

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र ने महाराष्ट्र के राज्यपाल रमेश बैस के साथ सोमवार को मेहंदीपुर बालाजी पहुंचकर वहां पूजा-अर्चना की। उन्होंने वहां सभी के सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की। राज्यपाल मिश्र ने इस दौरान कहा कि मेहंदीपुर बालाजी पावन तीर्थ स्थल है। हनुमान जी का यह पवित्र धाम आस्था और विश्वास से जुड़ा है। उन्होंने हनुमान जी का अभिषेक किया और सबके मंगल की कामना की।

सम्यक ग्रुप ने भक्तामर पाठ एवं सम्मान समारोह में भाग लिया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। रविवार 21 अप्रैल को भट्टारक जी की नसियां में दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन एवं सन्मति ग्रुप द्वारा आयोजित भक्तामर पाठ एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में सम्यक ग्रुप को एक मंडल आवंटित किया गया जिसमें अध्यक्ष इन्द्र कुमार जैन, सचिव नवल जैन, संरक्षक महावीर बिंदायका, संस्थापक अध्यक्ष महावीर बोहरा व आयोजन सचिव महेश काला ने रिद्धि मंत्रों पर दीप अर्चना कर धर्म लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर सम्यक ग्रुप द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित करने हेतु ग्रुप के रीजन अध्यक्ष राजेश बड़जात्या, सचिव निर्मल संघी, सन्मति ग्रुप संस्थापक अध्यक्ष राकेश गोदिका राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अतुल बिलाला व अन्य पदाधिकारियों द्वारा शील्ड देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर धर्म जागृति संस्थान के अध्यक्ष पदम जी बिलाला की भी गरिमामय उपस्थिति रही।

'पृथ्वी बचाओ' विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का अयोजन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। 22 अप्रैल को संपूर्ण विश्वभर में मनाया जाता है। इसी शृंखला में रविवार को शहर के पुरानी विधानसभा के सामने स्थितपृथ्वी दिवस मन्दिर श्री रामचंद्र जी में दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान शाखा जयपुर के तत्वावधान में पृथ्वी बचाओ के विषय पर जागरूकता कार्यक्रम का अयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ गुरु आराधना व भजन गायन के साथ हुआ। तदोपरांत विभिन्न प्रकार के गेम, एक्टिविटी आदि के माध्यम से उपस्थित भक्तों को पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, गुरू सेवा, सदाचार आदि महत्वपूर्ण विषयों को समझाया गया व इसके पालन का संकल्प करवाया गया। इस अवसर पर दिव्यगुरु आशुतोष महाराज की शिष्या साध्वी लोकेशा भारती ने बताया कि आज जिस ग्लोबल वार्मिंग, क्लाइमेट चेंज, असंतुलित पर्यावरण, प्रदूषण व इनसे उत्पन्न नाना प्रकार के रोग व्याधि से विश्व जूझ रही हैं उसका समाधान सिर्फ़ हमारे दृढ़ संकल्प और उसके अनुरूप कार्रवाई से होगा, किन्तु इस प्रकार की दृढ़ता को प्राप्त करने हेतु , कर्त्तव्यपरायण बनने हेतु सर्वप्रथम हमें स्वयं को जानना होगा और यह कार्य केवल ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही संभव हैं। उन्होंने बताया कि दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान द्वारा पर्यावरण संकट के समाधान हेतु संरक्षण कार्यक्रम चलाया का रहा है कार्यक्रम के अंतर्गत नुक्कड़-नाटक गीत- संगीत व भिन्न-भिन्न प्रकार की एक्टिविटी द्वारा लोगो को पर्यावरण के संरक्षण के महत्त्व को समझाया जता है और उन्हें संरक्षण हेतु प्रेरित लिया जाता है। इस दौरान कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में भक्त उपस्थित रहें। पृथ्वी बचाने के संकल्प के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

राजीविका की सैकड़ों महिलाओं ने गरबा खेलकर और रैली निकाल की मतदान की अपील

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

डूंगरपुर। लाल साड़ियों में सजी-धजी पारंपरिक गीतों पर गरबा खेलकर खुशियां मनाती और नाचती-गाती महिलाओं की मौजूदगी से सोमवार को लक्ष्मण मैदान लोकतंत्र के महापर्व के उल्लास से सराबोर हो उठा। लोकसभा आम चुनाव के तहत सप्तरंगी सप्ताह के पांचवें दिन वोट करूंगी, तभी तो बढ़ूंगी थीम पर मतदाता जागरूकता के लिए मानव श्रृंखला और महिला मार्च का आयोजन किया गया। लक्ष्मण मैदान से जिला कलक्ट्रेट तक सैकड़ों महिलाएं जब एक साथ हाथों में मतदाता जागरूकता के लिए संदेश लिखी तख्तियां और 26 अप्रैल को मतदान जरूर करने का संदेश देने निकलीं, तो पूरा शहर लोकतंत्र के रंग में रंग गया।

इससे पहले जिला निर्वाचन अधिकारी अंकित कुमार सिंह ने सभी को मतदाता जागरुकता की शपथ दिलवाई। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी कुलराज मीणा, जिला परिषद सीईओ मुकेश चौधरी, डीपीएम राजीविका मोतीलाल मीणा, जिला युवा अधिकारी प्रदीप कुमार, सीओ स्काउट सुनील सोनी सहित अन्य अधिकारी और बड़ी संख्या में शहरवासी उपस्थित रहे। जिला निर्वाचन अधिकारी अंकित कुमार सिंह ने लोकसभा चुनाव के तहत 26 अप्रैल को मतदान अवश्य करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि डूंगरपुर जिले के सभी मतदाता 26 अप्रैल को अधिक से अधिक संख्या में मतदान कर लोकतंत्र को मजबूत बनाएं और लोकतंत्र के महापर्व में भागीदारी निभाएं। मतदान केंद्रों पर सेल्फी पाइंट बनाए जाएंगे। प्रथम बार मतदान कर रहे मतदाताओं को मतदान स्थल पर ही मुख्य निर्वाचन अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित सर्टिफिकेट दिया जाएगा। सुबह 7 से 10 बजे तक हैप्पी आवर्स में मतदान करने वाले मतदाताओं से पौधरोपण करवाकर सम्मानित किया जाएगा।

आरएसएस ने निकाला जयपुर शहर में चौगान स्टेडियम से रामलीला मैदान तक पथ संचलन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा रविवार को जयपुर शहर में पंथ संचलन निकाला गया। गुणवत्ता पथ संचलन में गालव भाग के स्वयंसेवकों ने भाग लिया। संचलन शाम 5.45 बजे चौगान स्टेडियम से प्रारंभ होकर छोटी चौपड़, किशनपोल, न्यू गेट, त्रिपोलिया दरवाजा, बड़ी चौपड़, सांगानेरी दरवाजा होते हुए रामलीला मैदान पहुंचा। इस अवसर पर समाज की ओर से मार्ग में अनेकों स्थानों पर भारत माता के जयघोष के साथ पुष्पवर्षा की गई। रामलीला मैदान पर समापन कार्यक्रम में जयपुर प्रांत प्रचारक बाबूलाल ने कहाकि सामाजिक कुरूतियों एवं परतंत्रता के प्रतीक चिन्हों से मुक्त होने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा गुलामी के प्रतिक चिन्ह हमारे जीवन में रहने ही नहीं चाहिए। हम अलौकिक थे, हैं और रहेंगे। इस अवसर पर प्रांत प्रचारक ने एक विवाह समारोह का जिक्र करते हुए पर्यावरण संरक्षण पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि भगवान महावीर के दर्शन एवं राम के चरित्र की देश को महत्ती आवश्यकता है। उन्होंने भगवान महावीर के संदेशों को जीवन में उतारने का आव्हान किया। कार्यक्रम में मंचासीन अतिथियों में संघ चालक सहित सेना से सेवानिवृत बिग्रेडियर सुरेन्द्र अनिमेश त्रिपाठी भी उपस्थित रहे।

रूपवास में ट्रेन से गिरकर युवक की मौत

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

रूपवास। कस्बे के रेलवे स्टेशन से आगे बयाना की तरफ एक युवक ट्रेन से अचानक गिर गया। इस हादसे में युवक की मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर आरपीएफ चौकी फतेहपुर सीकरी इंचार्ज शिवनारायण यादव घटना स्थल पर पहुंचे। उन्होंने मृतक युवक के साथ जा रहे उसके साथी की जानकारी के आधार पर मृतक की शिनाख्त साजिद पुत्र सलमानी उम्र 21 वर्ष मुसलमान निवासी नान पारा जिला बहराइच उत्तर प्रदेश के रूप में हुई है।

एएसआई शिवनारायण यादव ने बताया कि सूचना मिली कि अवध एक्सप्रेस से एक युवक गिर गया है। जिससे युवक की मौके पर ही मौत हो गई है।

इसके बाद मौके पर पहुँच घटना की जानकारी लेकर मृतक के शव को जीआरपी हैड कांस्टेबल केशव सिंह चौकी इंचार्ज बयाना जीआरपी के सुपुर्द कर दिया। फिलहाल घटना की सूचना मृतक युवक के परिजनों को दे दी गई है। मृतक के परिजनों के आ जाने के बाद ही आगे की कार्यवाही होगी।

नगर निगम के मालवीय नगर जोन की ओर से 'क्लीन-अ-थोन' कार्यक्रम आयोजित

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। वर्ल्ड अर्थ डे के उपलक्ष में नगर निगम ग्रेटर के मालवीय नगर जोन की ओर से 'क्लीन-अ-थोन' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। अपेक्स सर्कल से आरटीओ चौराहा तक सफाई अभियान चलाकर लोगों ने श्रमदान किया। कार्यक्रम में शहर के स्कूल कॉलेज, निजी हॉस्पिटल, रनर्स ग्रुप आदि ने हिस्सा लिया।

अभियान के दौरान नगर निगम ग्रेटर जयपुर की आयुक्त कमिशनर रुक्मणी रीयार ने पुष्पामाई को ब्रांड एम्बेसेडर बनाया। साथ ही पांच कैंपेन प्रोग्राम लॉन्च कर लोगों को शहर को स्वच्छ रखने की शपथ दिलाई गई। रीयार ने कहा कि शहर को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने के लिए आमजन का सहयोग आवश्यक है। आमजन स्वच्छता की जिम्मेदारी समझें और निभाए। मालवीय नगर जोन की उपायुक्त अर्शदीप ब्रार ने कई अभियानों के बारे में जानकारी दी।

विश्व प्रथ्वी दिवस पर प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की दिलाई शपथ

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

जयपुर। नव जन जागृति मंच व अन्नपूर्णा नारी संगठन की ओर से विश्व पृथ्वी दिवस जागृति प्रांगण, उघोग नगर निवारू रोड, झोटवाडा में मनाया गया। इस दौरान पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। संगठन की पदाधिकारियों ने इस दौरान पक्षियों के लिए परिंडे भी लगाए गए। सभी सदस्यों को धरती प्रदूषण मुक्त रखने व पर्यावरण संरक्षण और दैनिक जीवन में प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर मंजू शर्मा, नमिता अग्रवाल, डॉ. सुरभि सिंह, डॉ. प्रभा शर्मा, गीत आर्य, गायत्री शर्मा, संजू टेलर उपस्थिति रही।

इच्छायें त्यागने से मिलेगा सुख

एसकेमंगल

मनुष्य का निष्फल अहंकार जितने मुख्य रूपों में व्यक्त होता है, उनमें काम, लोभ और क्रोध मुख्य हैं। काम, लोभ के समान ही है। केवल इसकें तृप्त होने की विधि भिन्न है। काम स्थूल शरीर के माध्यम से ही अपनी अभिव्यक्ति करता है। लोभ हृदय की अशांति की एक अवस्था है और वह अधिकार व सत्ता की लिप्सा से पैदा होता है। इच्छाओं की पूर्ति के लिए अधिकार और शक्ति की खोज की जाती है। इस प्रयत्न में मनुष्य आंशिक रूप से ही सफल हो पाता है और उसका यह आंशिक संतोष इच्छा की अग्नि को शांत करने के बजाय और बढ़ाता जाता है। इस कारण लोभ के लिए अपने सम्मुख स्थित विशाल क्षेत्र पर विजय पाना असंभव होता है और वह मनुष्य को लगातार असंतुष्ट बनाए रखता है। इससे क्रोध की उत्पत्ति होती है। क्रोध इच्छाओं के खंडित होने से उत्पन्न होता है। उसका लक्ष्य होता है, इच्छाओं के तृप्त होने के मार्ग की बाधाओं को दूर करना। इस प्रकार काम, लोभ और क्रोध की प्रवृत्तियों के द्वारा ही मनुष्य निराशा का अनुभव करता है और उसका निष्फल अहं काम, लोभ और क्रोध के द्वारा ही अधिक तृप्ति के साधनों की खोज करता है। इस प्रकार हमारी आत्मा की चेतना असीम निराशा के दुश्चक्र में फंस कर रह जाती है। काम, लोभ या क्रोध की पूर्ति न होने से निराशा उत्पन्न होती है। इन तीनों पतनकारी प्रवृत्तियों का विस्तार स्वार्थपरता के साथ ही होता है। इसलिए स्वार्थपरता ही वास्तव में हमारी समस्त निराशा और चिंताओं का मूल कारण है। पर इस प्रयत्न में वह अपने आपको ही पराजित करती है। वह इच्छाओं के द्वारा अपनी तृप्ति करना चाहती है। लेकिन परिणाम में उसे एक असंतोष ही मिलता है। इच्छाओं का त्याग ही सुख है। स्वार्थपरता का अनिवार्य परिणाम असंतोष और निराशा ही है, क्योंकि इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। सुख की समस्या का एकमात्र उपाय इच्छाओं का त्याग है। बाहरी दमन के कारण इच्छाओं पर पूर्ण विजय प्राप्त नहीं की जा सकती, वे ज्ञान के द्वारा ही जड़ से मिटाई जा सकती हैं।

श्री वैश्य चित्तोड़ा महिला जागृति मंच द्वारा कलशयात्रा से श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ

जगह-जगह हुआ स्वागत

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

कोटा । श्री वैश्य चित्तोड़ा महिला जागृति मंच कोटा द्वारा श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ आज कलश यात्रा से हुआ। श्री वैश्य चित्तोड़ा महिला जागृति मंच कोटा के तत्वावधान में बालाजी धाम आर के पुरम से भव्य कलश यात्रा चित्तोड़ा भवन के लिए रवाना हुई, कलश यात्रा को समाजसेवी डॉ. अमिता बिरला व भाजपा के वरिष्ठ नेता पंकज मेहता द्वारा भगवा झंडी दिखाकर प्रारम्भ किया गया। कलशयात्रा में सैकडों महिलाएं पारम्परिक परिवेश में भजनों पर नाचती गाती सिर पर कलश धारण कर चल रही थी। रास्ते में विभिन्न समाज व संगठनों द्वारा पुष्पवर्षा कर व स्वागत द्वार लगा कलशयात्रा का स्वागत किया। डॉ. अमिता बिरला ने सिर पर श्रीमद भागवत जी को धारण किया। मुख्य मंगल कलश भी धारण किए गए और ध्वज पताकाएं लहराती रही, कलश यात्रा पर ड्रोन द्वार पुष्पों की वर्षा की गई। श्री वैश्य चित्तोड़ा महिला जागृति मंच की अध्यक्षा कल्पना गुप्ता व सचिव भूमिका गुप्ता ने बताया की श्रीमद् भागवत कथा 22 अप्रैल को श्री रविशंकर उपाध्याय मथुरा वालो द्वारा प्रतिदिन आयोजित की जाएगी।

बूंदी में विश्वस्तरीय उत्कर्ष पंचकर्म चिकित्सा केंद्र बनने की सम्भावना बढी, राजस्थान सरकार ने मांगे प्रस्ताव

पंचकर्म चिकित्सा केंद्र के नए भवन को लेकर दोबारा प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजे

प्रस्ताव को मंजूरी मिलने के बाद केरल की तर्ज पर पंचकर्म चिकित्सा केंद्र में मरीजों को विश्व स्तरीय आवासीय सुविधा के साथ पंचकर्म चिकित्सा की सुविधा मिल सकेगी

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बूंदी । छोटीकाशी के नाम से प्रख्यात बूंदी में विश्वस्तरीय उत्कर्ष पंचकर्म विशिष्टता केंद्र स्थापित होने की अब दुबारा फिर से आस जगी है। दो साल पहले इसके लिए 52 करोड़ के प्रस्ताव तैयार कर केंद्र सरकार को भेजे गए, लेकिन कम बजट जारी होने की संभावनाओं के चलते मामला कागजों में ही सिमट कर रह गया। अब दुबारा इसके प्रस्ताव राज्य सरकार ने मांगे हैं।

उम्मीद है कि जल्द ही इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल जाएगी। प्रस्ताव को मंजूरी मिलने के बाद केरल की तर्ज पर पंचकर्म चिकित्सा केंद्र में मरीजों को विश्व स्तरीय आवासीय सुविधा के साथ पंचकर्म चिकित्सा की सुविधा मिल सकेगी।

लाइलाज बिमारी से निराश मरीजों के परिजनों में पंचकर्म चिकित्सा से जगी आस

अभी जिला आयुर्वेद चिकित्सालय बालचंदपाडा बूंदी में स्थानीय मरीजों के अलावा दूसरे जिलों, राज्यों से भी रोगी उपचार करवाने पहुंच रहे हैं। पिछले 4 वर्षों में ही आरोग्य समिति व भामाशाहों के सहयोग से संचालित केंद्र में पंचकर्म चिकित्सा पद्धति की वह सब सुविधाएं हैं जो राजस्थान के जिला आयुर्वेद चिकित्सालय में कही नहीं है यहां पर अब तक 11 राज्यों से 52 जिलों के 50 हजार से अधिक रोगी लाभान्वित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त यहां उत्कृष्ट सेवाओं के चलते मेडिकोट्यूरिज्म-हील इन इंडिया के तहत 26 देशों के 283 विदेशी रोगी भी अपना पंचकर्म उपचार करवा चुके हैं। अधिकांश बच्चों का देश के अग्रणी चिकित्सा संस्थानों में लगातार उपचार कराने के बावजूद कोई प्रभावी राहत नहीं मिलने से परिजन निराश थे, लेकिन आयुर्वेद के सिद्धांतों के अनुसार वृहण चिकित्सा, सर्वांग अभ्यंग स्वेदन, शष्ठिशालि पिंड स्वेदन, यापना बस्ति, मात्रा बस्ति, शिरोधारा, लेप, अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों-स्वर्णप्राशन औषधि से काफी राहत मरीजों को मिल रही है। 26 देशों के 283 विदेशी मरीज भी बूंदी में इलाज करवा चुके ।

अभी पुराने आयुर्वेद चिकित्सालय में किया जा रहा है पंचकर्म चिकित्सा पद्धति से इलाज

अभी बूंदी के एक पुराने भवन में मरीजों का पंचकर्म चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जा रहा है। बूंदी का पंचकर्म विशिष्टता केंद्र न जटिल, कष्टसाध्य बच्चों के जीवन में नई उम्मीद बनकर ह्ट उभर रहा है। राजकीय जिला आयुर्वेद अस्पताल में संचालित केंद्र अपनी प्रभावी पंचकर्म चिकित्सा और त्वरित राहत से देश ही नहीं, विदेशों में भी जाना जाता है। कष्टसाध्य, जन्मजात विकृति जन्य दुर्लभतम रोगों से पीड़ित बच्चों के जीवन में यह केंद्र आशा की नई किरण बन रहा है। विकृतिजन्य रोगों से पीड़ित बच्चों के अलावा पंचकर्म विशिष्टता केंद्र बूंदी में पंचकर्म चिकित्सा द्वारा मरीजों को राहत मिल रही है।

भाजपा की वाशिंग मशीन मे सरकारी नौकरियाँ साफ हो गई : मनोज दुबे

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

कोटा । अखिल भारतीय बेरोजगार मजदूर किसान संघर्ष समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज दुबे ने केंद्र सरकार पर हमला बोलते हुए कहा की 10 वर्षो मे भाजपा की वाशिंग मशीन मे सरकारी नौकरियाँ साफ हो गई। नए कारखाने लगाने के स्थान पर मोदी सरकार ने चुन चुन कर देश की नवरत्न सरकारी कम्पनियों को निजी हाथो मे सौंप कर देश के नौजवानों के सरकारी नौकरी के सपनो पर पानी फेर दिया। केंद्र सरकार रिक्त पदो को तेजी से समाप्त कर रही है। अगर केंद्र मे भाजपा की तीसरी बार सरकार बनी तो बची हुई सरकारी नौकरियाँ भी पूरी तरह से समाप्त हो जाएंगी क्योकि भाजपा सरकार बची हुई सरकारी कंपनियों को भी निजी हाथो मे सौंप देगी। मनोज दुबे ने कहा की मोदी सरकार ने देश से बेरोजगारी,महंगाई व भ्रष्टाचार पूरी तरह समाप्त करने का वायदा किया था।लेकिन भाजपा ने करोडो रोजगार समाप्त कर बेरोजगारी एव महंगाई बढाने का काम किया।देश की आम जनता पिछले 10 साल में बढती बेरोजगारी,कमरतोड़ महंगाई से तंग आ चुकी है। अमृतकाल में सभी जरूरी चीजें इतनी महंगी हो गई हैं कि घर का बजट बिगड़ गया है।÷जब बेरोजगारी,महंगाई रोकनी थी तब केंद्र की मोदी सरकार चंदा वसूलने का काम कर रही थी। भाजपा नेता दावा करते है की भ्रष्टाचारी बचेंगे नहीं, लेकिन भ्रष्टाचार बढ़ाने का काम कोई कर रहा तो बीजेपी ही कर रही हैं।

सजे धजे कब बुलबुल व स्काउट गाइड ने निकाली वोट बारात

ढोल की थाप पर नाचते , झूमते, नारे लगाते हुए दिया मतदान का संदेश

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

कोटा । स्वीप गतिविधियों के अंतर्गत सोमवार को सजे धजे कब बुलबुल व स्काउट गाइड की ओर से वोट बारात निकाली गई। इस दौरान ढोल की थाप पर नाचते, गाते और झूमते हुए स्वयंसेवकों ने मतदाता जागरूकता के नारे लगाते हुए अधिकाधिक मतदान का संदेश दिया। वोट यात्रा को प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर ममता चौधरी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। राजस्थान राज्य भारत स्काउट एवं गाइड स्थानीय संघ कोटा दक्षिण के ग्रुप राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आवासन मण्डल केशवपुरा, मां कल्याणी ओपन रेंजर टीम, चंद्रशेखर आजाद ओपन स्काउट ट्रूप, सरोजनी नायडू ओपन गाइड कंपनी के स्काउट, गाइड, रेंजर एवम् कब बुलबुल ने स्काउट गाइड प्रभारी व स्थानीय संघ कोटा दक्षिण के सचिव प्रकाश जायसवाल के नेतृत्व में वोट यात्रा विभिन्न मार्गों से गुजरी। जायसवाल ने बताया कि वोट बारात आवासन मंडल विद्यालय से रवाना होकर महावीर नगर विस्तार योजना, केशवपुरा सेक्टर 7, संतोषी नगर में पहुंची। इस दौरान अधिकतम मतदान का आग्रह किया। वोट बारात में साड़ी, लहंगा, चुन्नी, कुर्ता पजामा साफा व नए नए कपड़ों में सजे धजे कब बुलबुल एवम् स्काउट गाइड का उत्साह देखते ही बन रहा था। लोग वोट बारात को देखने के लिए कोई दरवाजों से आनंद ले रहे थे तो कोई छतों से अनूठी वोट बारात को देख रहे थे। इस अवसर पर विशिष्ठ अतिथि शक्ति सिंह, प्रवीण शर्मा, मीनाक्षी महावर, विद्यालय व्याख्याता सुमन गुप्ता, दीपिका मीणा, ममता आठोडिया, प्रमिला शर्मा, अनिता शर्मा , काजल महबूबानी आदि मौजूद रहे ।

सैक्टर मजिस्ट्रेट अपने-अपने क्षेत्रों में हुए रवाना, चुनाव समाप्ति तक मतदान केन्द्रों सहित अन्य व्यवस्थाओं का लेंगे जायजा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बून्दी । गामी 26 अप्रेल को लोकसभा आम चुनाव 2024 के द्वितीय चरण में होने वाले मतदान की तैयारी को लेकर सोमवार बून्दी जिले के सभी सैक्टर मजिस्ट्रेटो का बून्दी सीनीयर सैकण्डरी विद्यालय में प्रशिक्षण दिया गया। सोमवार से ही चुनाव समाप्ति तक सैक्टर मजिस्ट्रेट मतदान केन्द्रों की विजिट करेंगे। जिले में आयोजित प्रशिक्षण में जिला प्रशिक्षण अधिकारी दुर्गाशंकर मीणा ने सेक्टरों से कहा कि क्षेत्र में स्थित मतदान केंद्रों पर छाया, पानी, रोशनी सहित अन्य सुविधाओं का भी निरीक्षण करें। किसी प्रकार की कमी रहने पर उसे पूरा करवाए, साथ में आचार संहिता की पालना भी सुनिश्चित हो। मतदान शांतिपूर्वक संपन्न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

जिला स्तरीय ट्रेनर्स चन्द्रप्रकाश राठौर व कौशल जैन ने बताया कि सैक्टर मजिस्ट्रेट उनके सैक्टरों की महत्वपूर्ण कड़ी है। सैक्टर मजिस्ट्रेटों के पास कुछ अतिरिक्त ईवीएम मशीनें रहेगी जहां पर भी मशीनों में तकनीकी खामी होगी वहां तत्काल प्रभाव से मशीनों को बदलने का काम करेंगे। साथ ही उनके पास काला लिफाफा रहेगा जिसमें कई तरह की पर्चियां रहेगी। सैक्टर मजिस्ट्रेटो को मॉक पॉल प्रमाण-पत्र पर हस्ताक्षर करना है व विभिन्न प्रपत्रों को अपडेट रखना है। क्षेत्र में कानून व्यवस्था व मतदान केन्द्रों पर सुविधाओं की देखरेख का कार्य भी रहेगा। जिसमें मतदान केन्द्रों पर छाया, पानी, रोशनी, फर्नीचर व रेम्प आदि की व्यवस्था देखेंगे। क्षेत्र में किसी भी प्रकार का आचार संहिता का उल्लंघन नहीं हो रहा है, उस पर भी नजर रखेंगे। 48 घंटे पूर्व चुनाव प्रचार समाप्ति के बाद किसी प्रकार की राजनैतिक सभा व प्रचार प्रसार नहीं हो, वैसे मामले में नजर रखेंगे। प्रशिक्षण में सभी सेक्टरों को उनके दायित्व व कर्तव्य बताये। जहां पर किसी भी प्रकार की समस्या हो उच्चाधिकारियों को तुरन्त अवगत करावें। उन्हें वैब कास्टिंग के बारे में भी बताया।

तीनों विधानसभा क्षेत्रों में नियुक्त किये एरिया मजिस्ट्रेट

लोकसभा आम चुनाव 2024 के सफल संचालन के लिये तीन विधानसभा क्षेत्र में एरिया मजिस्ट्रेट नियुक्त किये। जिसमें हिण्डोली में मुख्य कार्यकारी अधिकारी दुर्गाशंकर मीणा, केशोरायपाटन में कैलाश गुर्जर एवं बून्दी में एचडी सिंह एरिया मजिस्ट्रेट का कार्य देंखेगे। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बून्दी में लोकसभा आम चुनाव 2024 की तैयारी को लेकर आमद-रवानगी, पार्टी कार्मिकों का प्रशिक्षण हुआ।

-प्रशिक्षण में बताया कि मतदान दल द्वारा यहां से रवाना होने से पहले उन्हें कौन-कौनसी सामग्री वितरित की जावेगी इस पर विस्तार से बताया। साथ में उच्च माध्यमिक विद्यालय बूंदी में बनने वाले काउन्टरों के बारे में भी बताया। तीनों विधानसभा क्षेत्र के आरओ के कार्मिकों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रशिक्षण में बताया कि मतदान टीम को सामग्री देने के लिये प्रत्येक विधानसभावार तीन - तीन काउन्टर बनायें जावेगे। वहीं सामग्री जमा कराने के लिए छः-छः काउन्टर होगें।

पृथ्वी दिवस पर नन्हे मुन्ने बच्चों ने चित्रों से पर्यावरण बचाओ का दिया संदेश

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

कोटा। विज्ञान नगर स्थित कोटा न्यू किड्स वर्ल्ड स्कूल के नन्हे मुन्ने बच्चों ने अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी दिवस के अवसर पर ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक अनेक बच्चों ने भाग लिया और अपने चित्र के माध्यम से पर्यावरण को बचाए ने का संदेश देने का प्रयास किया। शाला अध्यक्ष आरके शर्मा ने बताया कि नन्हें बालकों में प्रकृति प्रेम और पृथ्वी को बचाए रखने संबंधी इस प्रकार की रचनात्मक गतिविधियां बालकों में संस्कार को जन्म देती है पर्यावरण के प्रति सजग रहना और स्वच्छता का संदेश देते हुए उन्होंने बताया कि हमें प्रकृति के प्रति जागरूक रहना चाहिए तथा पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुंदर बनाए रखने में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भूमिका अदा करना चाहिए।

दस साल मीठी गोलिया बाटने के सिवाय कुछ नही किया : गुंजल

कोटा । कोटा बूंदी लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस उम्मीदवार प्रहलाद गुंजल ने सोमवार को बोराबास, बंधा, देवनारायण, डोलिया, गोपालपुरा, बोरखेड़ा में रोड शो व आम सभा कर जनसंपर्क किया। गुंजल ने कहा कि यह चुनाव मेरा नहीं है यह आपका चुनाव है। अब यह चुनाव बीजेपी कांग्रेस का नहीं अभिमान वर्सेस स्वाभिमान का चुनाव हो गया है। एक तरफ दस साल सत्ता के नशे में अहंकारी होकर जनता , कार्यकर्ता को अपना गुलाम समझने वाले लोग हैं तो वहीं दूसरी तरफ जनता व कार्यकर्ता के लिए अपना राजनीतिक अस्तित्व भी दाव पर लगा देने वाला आपका बेटा, आपका भाई है फैसला आपको करना है। उन्होंने कहा कि दस साल सांसद के साथ पांच साल लोकसभा अध्यक्ष रहे बिरला जी ने जनता से किये वादों को भुलाकर अपना व अपने परिवार का साम्राज्य बढ़ाने वालों के पास कोटा बूंदी संसदीय क्षेत्र में एक उपलब्धि नहीं है बताने को । गुंजल ने कहा कि बिरला जी कह रहे हैं कि गहलोत जी ने वन भूमि के डायवर्सन के पैसे नहीं दिए उन्हें डर था कि एयरपोर्ट की जमीन और पैसा दे दिया तो प्रधानमंत्री इसका शिलान्यास कर देंगे। मैं पूछना चाहता हूं बिरला जी एयरपोर्ट का वादा आपने 2014 में किया था और 2013 से 2018 तक राज्य व केंद्र में आपकी सरकार थी तब आपने व आपकी सरकारों ने क्या किया। बिरला जी कोटा बूंदी की जनता अब आपकी इन झूठी बातों में आने वाली नहीं है। गुंजल ने कहा कि जो 10 साल पैर पर पैर रखकर बैठे जनता व कार्यकर्ताओं से पैर छूआते रहे वो जमीन पर उतरकर काम करने की नसीहत दे रहे हैं।

आचार संहिता का खुला उल्लंघन

गौवंश ले जाने पर गौसेवकों ने कि सयुंक्त निदेशक पशुपालन विभाग रामलाल मीणा व अधिशाषी अभियंता नगर परिषद अरुणेश शर्मा के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बुंदी । गोपाल गौ सेवा संस्थान के गौ सेवकों ने थाना सिटी कोतवाली में परिवाद पेश कर रामलाल मीणा कार्यवाहक सयुक्त निदेशक पशु पालन विभाग बुंदी तथा अरुणेश शर्मा अधिशाषी अभियंता नगर परिषद बूंदी गौशाला संचालक पप्पूलाल मेघवाल व श्री जयनिवास गौशाला ठीकरदा के खिलाफ परिवाद पेश कार्यवाही की मांग की है। गोपाल गौसेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रहलाद मीणा ने बताया कि दिनांक 20.04.2024 को सुबह गौशाला संचालक पप्पू मेघवाल द्वारा अपने साथियों के साथ मिलकर शहर बूंदी से बिना किसी नियम कायदे, बिना किसी टेंडर के पशु चिकित्सालय बुंदी में उपचारित गंभीर घायल गोवंशों सहित शहर से करीब 100 गोवंशों को लाठियों को पीटते हुए दलेलपुरा रोड होते हुए, पैदल घेर कर ले जाकर ठीकरदा गौशाला में छोड़ दिए गए। प्रहलाद मीणा ने बताया कि जानकारी करने पर रामलाल मीणा कार्यवाहक सयुक्त निदेशक पशु पालन विभाग बुंदी तथा अरुणेश शर्मा अधिशाषी अभियंता नगर परिषद बूंदी के निर्देश पर ले जाना बताया जबकि चुनाव आचार संहिता होने से किसी प्रकार का टेंडर नहीं किया जा सकता परंतु उक्त अधिकारीयों व गौशाला संचालक पप्पू मेघवाल ने नियमों को ताक पर रखकर गाँवंशों को नगर परिषद क्षेत्र के बाहर ले गए। जबकि जिस गौशाला में ले जाकर गोवंश को छोड़ा गया वहां पूर्व में ही क्षमता से अधिक गोवंश मौजूद है जो पशु करूरता है। उपचारित गोवंश को भी इन लोगों ने मिली भगत कर नियम विरुद्ध तरीके से ठीकरदा जय निवास गणेश गौशाला में ले जाकर छोड़ दिया जिसके कारण उन गोवंश की जान जोखिम में आ चुकी है। क्षमता से अधिक गोवंश भरकर रखने से बीमार व कमजोर गौवंशी को पर्याप्त भौजन पानी नहीं मिल पाने से उनकी आये दिन विभिन्न गौशालाओं में अकाल मृत्यु हो रही है तथा नियमानुसार क्षमता से अधिक गोवंश रखना पशु करूरता है जो कानूनन अपराध है ।

गौसेवक गौपाल माहेश्वरी ने कहाँ कि नगर परिषद बूंदी को नंदीशाला अथवा गौशाला हेतु भूमि आवंटित है जिन पर आवश्यक व्यवस्था करवाई जाकर शहर बूंदी के गोवंशों को वहां शिफ्ट किया जाना चाहिए। जो जनहित में है। इस दोरान गौपाल माहेश्वरी लोकतंत्र गुर्जर ओमप्रकाश मेघवाल कौशल यादव भवानी शंकर कालूलाल मोजूद रहे।

कलश यात्रा में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, शिखर कलश की स्थापना आज

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

महेन्द्र अलबेला और तनु शर्मा बहाएंगे भजन सरिता, श्री मंशापूर्ण हनुमान मंदिर छावनी पर चार दिवसीय हनुमान जन्मोत्सव समारोह

कोटा। श्री मंशापूर्ण हनुमान मंदिर प्रबंध समिति, छावनी की ओर से आयोजित चार दिवसीय श्री हनुमान जन्मोत्सव समारोह के तहत सोमवार को श्री मंगलेश्वर महादेव मंदिर छावनी से कलश यात्रा निकाली गई। जो नगर निगम कॉलोनी मार्ग से होते हुए श्री मंशापूर्ण हनुमान मंदिर छावनी पर संपन्न हुई। इस दौरान महिलाएं सिर पर 1100 कलश धारण कर चल रहीं थीं। वहीं मधुर स्वर लहरियों पर युवक युवतियां थिरकते चल रहे थे। बैंड पर 'घूमा दे म्हारा बालाजी घूमर घूमर घोटो...'' सरीखे गीत गुंजायमान हो रहे थे। मार्ग को भगवा पताकाओं और तोरण द्वारों से सजाया गया था। विभिन्न स्थानों पर सामाजिक, धार्मिक और व्यापारिक संस्थाओं की ओर से पुष्पवर्षा से शोभायात्रा का स्वागत किया गया। इस दौरान भगवान बजरंग बली के जयकारों से परिसर गूंज उठा। श्री हनुमान जन्मोत्सव की पूर्व संध्या पर सुंदरकांड का पाठ भी किया गया। समिति के अध्यक्ष गजानंद जैन ने बताया कि मंगलवार को श्री हनुमान जन्मोत्सव पर प्रातः 9 बजे श्री मंशापूर्ण बालाजी का पंचामृत से महाअभिषेक किया जाएगा। इस दौरान प्रतिमा का स्वर्ण श्रंगार होगा तथा 5 पंडितों के द्वारा पूजन किया जाएगा। इसके बाद अपराह्न 1 बजे मंदिर के शिखर कलश की स्थापना की जाएगी। वहीं मंदिर परिसर में माता ब्रह्मचारिणी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा भी होगी। वहीं शाम को 125 दीपक से महाआरती होगी। इसके बाद रात्रि 8 बजे से भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। जिसमें भजन गायक महेन्द्र अलबेला तथा गायिका तनु शर्मा के द्वारा सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी। शोभायात्रा में अध्यक्ष गजानन्द जैन, सचिव जयप्रकाश तुसिया, उपाध्यक्ष नितेश सिंह चौहान कोषाध्यक्ष लोकेन्द्र यादव, व्यवस्थापक चन्द्रशेखर शाक्यवाल, तेजेन्द्र सिंह, नरेन्द्र तुसिया, गिरीश चौधरी, योगेन्द्र सिंह, कमल शाक्यवाल, सिमरनजीत सिंह समेत बड़ी संख्या में भक्त मौजूद रहे।

31 जोड़ों का निशुल्क सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन कल

समिति के अध्यक्ष गजानंद जैन ने बताया कि बुधवार को प्रातः 9 बजे से मंदिर प्रांगण छावनी पर सर्वजातीय निशुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। जिसमें 31 जोड़ो का विवाह संपन्न होगा। सभी जोड़ों की बैंडबाजे के साथ निकासी निकाली जाएगी। इसके बाद तोरण, वरमाला और कन्यादान की परंपरा का निर्वहन होगा। सामूहिक विवाह सम्मेलन में विभिन्न संस्थाएं और सर्व समाज के लोग कन्यादान करेंगे। उन्होंने बताया कि बुधवार को ही दोपहर 1 बजे से विशाल आम भंडारा आयोजित किया जाएगा। जिसमें 50 हजार से अधिक लोग प्रसादी ग्रहण करेंगे। विवाह सम्मेलन के मुख्य माता पिता की बोली मंगलवार को रात्रि 11 बजे मंदिर परिसर में आयोजित होगी।

सतरंगी सप्ताह के छठे दिन सजाई रंगोलियां, श्याणी बुआ ने महिला मार्च के साथ दिया मतदान का संदेश

बूंदी। आगामी लोकसभा चुनाव 2024 में मतदान के प्रति व्यापक जन चेतना के उद्देश्य से मनाए जा रहे सतरंगी सप्ताह के छठे दिन जिला निर्वाचन अधिकारी अक्षय गोदारा के निर्देशानुसार सोमवार को महिला एवं बाल विकास विभाग ने शहर के विभिन्न स्थानों पर रंगोली व महिला मार्च के माध्यम से अधिक से अधिक मतदान का संदेश दिया। ऑरेंज रंग की थीम और वोट करूंगी, तभी तो बढ़ूंगी स्लोगन के साथ महिलाओं ने लोकतंत्र के त्योहार में भागीदारी का आह्वान किया। जिला इलेक्शन आइकॉन डॉ सर्वेश तिवारी के नेतृत्व में श्याणी बुआ भी जागरूकता कार्यक्रम में शामिल हुई। बुआ ने मुख्य अतिथि के रूप में महिला मार्च को कलेक्टर परिसर से हरी झंडी दिखाकर रानी जी की बावड़ी और बुलबुल के चबूतरे के लिए रवाना किया तथा कैंपस एंबेसडर आरोही राठौर, सिद्धि नामा और अक्षरा गौतम के साथ महिला शक्ति का मनोबल बढ़ाया। बुआ ने इस अवसर पर महिलाओं को संबोधित करते हुए कहा कि मतदाता जागरूकता अभियान में हमारी भूमिका अहम है हमें इसे गंभीरता से निभाना है। महिला मतदान प्रतिशत बढ़ाना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है, हम सब मिलकर मतदान करें ।

कार्यालय नगरपालिका श्रीविजयनगर जिला अनूपगढ (राज.)

क्रमांकः 284-89 दिनांकः22.04.2024

आपति सूचना

श्रीमति सरोज देवी पत्नी श्री दुर्गा प्रसाद साकिन श्रीविजयनगर ने आवेदन पत्र के साथ वारिस नामा की फोटोप्रति सलंग्न कर विरासतन के आधार पर नामान्तरण चाहा है।

मुताबिक रिकार्ड भू.सं. 123-124 हरबन्स नगर साईज 22.6×41 श्री दुर्गाशंकर जोशी पुत्र श्री सेवा राम के नाम से दिनांक 30.11.2015 को नामान्तरण दर्ज रिकार्ड है।

मुताबिक मृत्यु प्रमाण पत्र की फोटोप्रति के अनुसार श्री दुर्गाशंकर जोशी पुत्र श्री सेवा राम मृत्यु दिनांक 23.12.2017 को हो गई।

मुताबिक वारीस नामा के अनुसार इनके परिवार के निम्न वारिस है -

(1) श्रीमति सरोज देवी पत्नी श्री दुर्गाशंकर
(2) श्री गणेश पुत्र श्री दुर्गाशंकर
(3) श्री गोविन्द पुत्र श्री दुर्गाशंकर
(4) सुनीता पुत्री श्री दुर्गाशंकर

उपरोक्त परिवार के कुल चार सदस्य है, प्रमाण पत्र के आधार पर विरासतन नामान्तरण चाहा है।

अतः भू.सं. 123-124 हरबन्स नगर साईज 22.6×41 का विरासतन के आधार पर नामान्तरण दर्ज करने में किसी भी व्यक्ति को कोई एतराज हो तो इस सूचना प्रकाशन के 7 दिवस में इस कार्यालय में प्रस्तुत कर देवें अन्यथा बाद मियाद गुजरने नामान्तरण दर्ज करने की कार्यवाही अमल में लाई जावेगी।

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका श्रीविजयनगर

आमजन की शिकायतों पर त्वरित संज्ञान लें जिम्मेदार विभाग - श्रीनिधि बीटी

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। जिला कलक्टर श्रीनिधि बी टी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। जिला कलक्टर ने सभी विभागों को लाईस पोर्टल पर लंबित मामलों के निस्तारण करने के निर्देश दिये। उन्होंने जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग को आमजन की पेयजल संबंधित विभिन्न शिकायतों पर त्वरित कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होंने नगर परिषद को शहर के तंग इलाकों में अग्निशमन सुविधाएं पहुंचाने हेतु छोटे वाहन इत्यादि के बारे में योजना बनाकर प्रबंध करने हेतु निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि नगर परिषद शहर में ड्रेनेज प्रबंधन हेतु सीवरेज की नियमित अंतराल पर सफाई करवाये। उन्होंने जिला रसद अधिकारी को रसोई गैस सिलेण्डरों की समय पर सेफ्टी ऑडिट कराये जाने हेतु आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होंने आमजन द्वारा प्राप्त शिकायतों को संपर्क पोर्टल पर समय पूर्वक अपलोड करायें। जिला कलक्टर ने सभी विभागों को गुणवत्तापूर्ण ढंग से आमजन की शिकायतों का निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया। जिला कलक्टर ने सभी विभागों को ई-फाइल पर कार्य में तीव्रता लाने एवं औसत फाईल निस्तारण समय को कम करने हेतु निर्देशित किया। उन्होंने सम्पर्क पोर्टल पर लंबित प्रकरणों एवं जन अभाव अभियोग के प्रकरणों का निस्तारण करने हेतु सभी संबंधित विभागों को निर्देशित किया। इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलक्टर ब्रह्मलाल जाट सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

» धौलपुर ... बैठक में अधिकारियों को निर्देशित करते जिला कलक्टर श्रीनिधि बीटी

» बाड़ी ... चिकित्सालय में इलाज के दौरान हमले में घायल हुआ युवक

बाड़ी : मृतक के परिजनों ने आरोपी के भतीजे से की बुरी तरह मारपीट

उप्र के खेरागढ़ में पति ने पत्नी के प्रेमी की गोली मारकर कर दी थी हत्या

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बाड़ी। उत्तर प्रदेश के खेरागढ़ में रविवार को दिन में बीच बाजार गोलीकांड हुआ था। जिसमें विवाहिता के चक्कर में उसके पति ने प्रेमी को गोली मारी थी। घटना में प्रेमी की मौके पर ही मौत हो गई थी। वहीं पति को भीड़ ने पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया था। उक्त मृतक प्रेमी और उसका पति दोनों बाड़ी कस्बे के कृष्णा कॉलोनी निवासी हैं। जो परिवार में चाचा-भतीजे हैं। ऐसे में घटना के बाद बाड़ी कस्बे की कृष्णा कॉलोनी स्थित आरोपी लक्ष्मण के घर पर मृतक कंचन के परिवारिजनों ने घटना के बाद रविवार की शाम हमला कर दिया। इस दौरान लक्ष्मण के घर पर तो कोई नहीं मिला,लेकिन दुकान पर बैठे लक्ष्मण के भतीजे अजय को आरोपियों ने घेर लिया और जानलेवा हमला कर दिया। घटना में घायल अजय को बाड़ी राजकीय सामान्य चिकित्सालय से जिला चिकित्सालय धौलपुर रेफर किया गया है, जहां उसका उपचार चल रहा है।

क्या है मामला

कस्बे की कृष्णा कॉलोनी निवासी रामहेत पुत्र भूरा कुशवाह ने बताया कि लक्ष्मण उसका सगा भाई है। उसकी शादी 8 वर्ष पहले मनिया ज्येरा का पुरा निवासी नीतू के साथ हुई थी। जिसके दो बच्चे भी है। कुछ दिनों से नीतू उनके ताऊ के लड़के रघुवर के बेटे 25 वर्षीय कंचन के संपर्क में आ गई और उससे प्रेम प्रसंग हो गया। उक्त मामले को लेकर कई बार घर में झगड़ा भी हुआ और पंचायत भी हुई, लेकिन नीतू नहीं मानी ऐसे में नीतू और कंचन करीब छह महीने पहले यहां से बच्चों को लेकर चले गए और खेरागढ़ में रह रहे थे। रविवार को लक्ष्मण ने अपनी पत्नी नीतू को फोन किया और अपनी तबीयत खराब बताई और एक बार बच्चों को देखने की बात कही। इस पर पत्नी ने उसे खेरागढ़ बुला लिया,जहां बाजार में जब वह पत्नी से मिला तो कंचन भी दिख गया। इसके बाद लक्ष्मण ने अपने भतीजे कंचन को गोली मार दी। जिसमें उसकी मौत हो गई। लक्ष्मण को खेरागढ़ पुलिस ने पकड़ लिया है।

गोलीकांड के बाद बाड़ी में हमला

उक्त झगड़ा और गोलीकांड की सूचना जब बाड़ी में मृतक कंचन के पिता रघुवर और उसके परिवारिजनों को मिली तो वे एकत्रित होकर लगभग एक दर्जन की संख्या में रामहेत के घर पहुंचे,लेकिन उस वक्त रामहेत का परिवार किसी शादी में गया हुआ था। ऐसे में घर पर कोई नहीं मिला, लेकिन रेलवे स्टेशन के पास दुकान पर रामहेत का लड़का अजय बैठा हुआ था। जिसको आरोपियों ने घेर लिया और लाठी,डंडो और सरियों से हमला कर दिया। जिसमें अजय बुरी तरह घायल हुआ है। जिसका उपचार जिला चिकित्सालय में चल रहा है।

पुलिस कर रही मामले की जांच

घटना को लेकर बाड़ी कोतवाली थाने के एसआई हरवीर सिंह ने बताया कि रविवार की शाम करीब 5 से 6 बजे के बीच में रेलवे स्टेशन के पास प्रेम प्रसंग के मामले में खेरागढ़ में हुए गोलीकांड के बाद मृतक कंचन के परिवार के लोगो ने आरोपी लक्ष्मण के बड़े भाई रामहेत के घर आकर उसके बेटे अजय पुत्र रामहेत कुशवाह पर हमला किया है। जिसका उपचार जिला चिकित्सालय में चल रहा है। घटना को लेकर घायल के परिजनों ने तहरीर दी है। जिस पर पुलिस ने मामला दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

» धौलपुर ... पृथ्वी दिवस मनाते न्यू रॉयल पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी

न्यू रॉयल पब्लिक स्कूल में मनाया पृथ्वी दिवस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। गुरुद्वारा रोड स्थित न्यू रॉयल पब्लिक स्कूल में विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया इस अवसर पर कोलाज मेकिंग व पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता से बच्चों ने धरती बचाओ जीवन बचाओ का संदेश दिया विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने संकल्प लिया कि कम से कम प्रत्येक वर्ष एक पौधा लगाकर उसकी सुरक्षा में देखभाल कर वृक्ष बनाएंगे अपने आसपास के तालाब नदी एवं अन्य जल स्त्रोतों को प्रदूषित नहीं करेंगे तथा इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित करेंगे अपने घर विद्यालय आसपास में वर्षा के जल संचय हेतु अपने परिवार के सदस्यों को प्रेरित करेंगे। बिजली का उपयोग आवश्यकता अनुसार करेंगे। अपने घर विद्यालय आस पड़ोस को स्वच्छ रखेंगे। प्लास्टिक पॉलिथीन का उपयोग बंद कर कपड़े कागज के थैली का उपयोग करेंगे। जीव जंतुओं में पशु पक्षियों के प्रति प्रेम भाव रखेंगे। समेत अन्य संकल्प शामिल है।छात्रों को सम्बोधित करते हुए संस्था के डायरेक्टर विनय जैन ने कहा कि पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है, जहां जीवन संभव है। परंतु आज के मानव ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए इसके संसाधनों का दुरुपयोग कर के नुकसान पर नुकसान किये जा रहा है। उन्होंने बताया कि 1969 में पहली बार फ्रांसिस्को के जॉन मैक्रोनाल नाम के शांति के समर्थक ने पर्यावरण दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा। जिसके बाद दुनिया के 192 देशों ने इस सुझाव को मानते हुए पृथ्वी दिवस मनाना शुरु किया। इस अवसर पर एक पैंटिग प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। जिसमें कनिष्ठ तथा वरिष्ठ विद्यार्थियों ने अपनी रूचि के अनुसार भाग लिया। स्कूल के शिक्षक मनीष कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए बताया कि यह दिवस पृथ्वी पर रहने वाले जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों को बचाने और दुनिया भर में पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ाने के उद्देश्य से पृथ्वी दिवस के रुप में मनाया जाता है। इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से लोगो तथा स्वय को जागरुक करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर समस्त शिक्षकगण व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

लालजीत कॉलोनी में दस महीने से पेयजल पाइप लाइन क्षतिग्रस्त लीकेज से गंदा पानी पीने को मजबूर

नागरिकों की शिकायत के बाद भी नहीं हो रहा समस्या का समाधान

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

बाड़ी। शहर की लालजीत कॉलोनी के नागरिकों ने सोमवार को जलदाय विभाग में एक्सईएन और जेईएन के नाम कार्यालय में ज्ञापन सौप,जल जीवन मिशन के तहत करीब दस महीने से क्षतिग्रस्त पड़ी पाइप लाइन को दुरुस्त कराने की मांग की है। शहर के सरमथुरा रोड स्थित लालजीत कॉलोनी के नागरिक हरिकिशन, केदार, बिरजू, बाबूलाल, मुकेश, रघुवीर, सोमेश, विनोद सहित तमाम लोगों ने एक ज्ञापन जलदाय विभाग के अधिशासी अभियंता और कनिष्क अभियंता को दिया है। जिसमे बताया है कि लालजीत कॉलोनी में पुरानी लाइनों को बदलकर नई लाइन डालने का कार्य 10 महीने पूर्व किया गया था। इस कार्य में विभाग की लापरवाही से जेसीबी द्वारा खुदाई के दौरान पुरानी पाइपलाइन क्षतिग्रस्त हो गई। जिसे ना तो समय पर मेंटेन किया ना ही नई पाइपलाइन डाली गई। जिसके चलते जलदाय विभाग की आपूर्ति के समय सुबह और शाम पाइप लाइन में जब पानी आता है तो वह सड़क के खरंजे में भरकर आसपास के खाली पड़े प्लाटों में भर रहा है साथ में कॉलोनी के घरों में उक्त पानी से सीलन आ रही है और लोग गंदा पानी पीने पर मजबूर हैं। इस मामले को लेकर 15 फरवरी को भी कॉलोनी के लोगों ने जलदाय विभाग के कार्यालय में आकर ज्ञापन दिया था और लिखित शिकायत की थी लेकिन उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। ऐसे में कॉलोनी के लोगों ने मांग की है कि उनकी समस्या का समाधान किया जाए।

चामण माता मंदिर पर भंडारा कार्यक्रम आयोजित

» धौलपुर ... चामण माता के मंदिर लगी भीड़

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। चामण माता मंदिर पर लगा लक्की मेला के साथ विशाल भंडारा रविवार को शेरगढ़ गांव में चामण माता मंदिर पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मेले का आयोजन किया। जहां पर सैकड़ों की संख्या में महिला एवं पुरुषों का माता रानी के दर्शन करने के लिए तांता लगा रहा, मंदिर महंत परमानंद शर्मा कुल्लो बाबा ने बताया कि जो भी भक्त सच्चे प्रेम एवं श्रद्धा के साथ यहां आकर माथा टेकते है उनकी माता रानी झोली भर्ती है एवं उनकी मनोकामना पूरी होती है, इस उपरांत बैंड बाजों के साथ करीब 21 झंडा ध्वजा एवं 7 घंटा श्रद्धालुओं ने चढ़ाएं एवं श्रद्धालुओं ने कनक दंड लगाकर लांगुरिया भेंट आदि गीत गाए गए। इस उपरांत लोगों ने अस्थाई दुकानें भी लगाई जिसमें चाट गोलगप्पे आइसक्रीम छोले नारियल बतासे एवं कॉस्मेटिक आदि की दुकानें लगाई गई। इस उपरांत भक्तों एवं श्रद्धालुओं के द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें खीर पूड़ी सब्जी रास्ता आदि को श्रद्धालुओं ने बड़े प्रेम से प्रसाद के रूप में पाया। इस मौके पर कमेटी अध्यक्ष हरिओम शर्मा, विनोद शर्मा संगठन मंत्री, सुनील दुबे, मीडिया प्रभारी सुखदेव कांकौलिया, राहुल गुर्जर महामंत्री, संजीव शर्मा महासचिव, वन विभाग अधिकारी जगदीश बघेल, कोषाध्यक्ष रघुवीर सिंह बघेल, गुलाब सिंह बघेल, राजू बघेल, बंगाली बघेल, नारायण सिंह बघेल कोठी धौलपुर, संतोषी बघेल, दिनेश बघेल, भोंदू बघेल, रामअवतार बघेल, मल्लू शर्मा, कप्तान बघेल, रामवीर बघेल, राकेश बघेल, राजवीर बघेल, कान्हा बघेल, दीपक शर्मा, योगेश बघेल सहित सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु एवं भक्तगण मौजूद रहे।

मोटे हनुमान मंदिर पर हनुमान जन्मोत्सव कार्यक्रम की तैयारियां शुरू

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। श्री मोटे हनुमान जी सेवा समिति संतर रोड धौलपुर द्वारा शहर के प्रमुख मंदिर पर हनुमान जयंती कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया जा रहा हैं, महंत भगवान दास ने बताया कि कार्यक्रम में श्री रामचरित मानस का पाठ किया जा चुका है मंदिर पर फूल बंगला झांकी की तैयारी की जा रही है आज सुबह 6 बजे से हनुमान जयंती मनाई जाएगी, सायं महा आरती का आयोजन किया जाएगा।

शादी समारोह के दौरान हलवाई का फिसला पैर, गर्म घी से भरी कढ़ाई गिरने से हादसा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

» बाड़ी ... घटना में घायल हलवाई अस्पताल में भर्ती

बाड़ी। शहर की राजपूत कॉलोनी में एक शादी समारोह के दौरान खाना बना रहे हलवाई का पैर फिसलने से दुर्घटना हुई है। जिसमें पूड़ी सेक रहे हलवाई का जब पर फैसला तो भट्टी से उबलते घी की कढ़ाई नीचे गिर गई। उक्त दुर्घटना में हलवाई का जहां एक पैर झुलस गया है। वहीं नीचे पूड़ी बेल रहा मजदूर बुरी तरह झुलसने से घायल हुआ है। घटना के बाद दोनों घायलों को अन्य लोगो द्वारा सामान्य अस्पताल में भर्ती कराया है। जहां उनका उपचार चल रहा है। जानकारी के अनुसार बाड़ी शहर के बारहमासी पीपल के पास राजपूत कॉलोनी में कोई शादी थी। जिसमें हलवाई का काम तिलुआ का अड्डा निवासी संजय पुत्र छोटेलाल कोली और पूड़ी बेलने का काम उसका पड़ोसी ओमप्रकाश पुत्र पूरन सिंह कोली कर रहे थे। इसका ठेका राम पुत्र दिनेश तमोली ठेकेदार ने लिया था। जिन्होंने उन्हें काम पर भेजा था। इस दौरान अचानक से संजय के पूड़ी सेकने के दौरान पैर फिसल गया और वह कढ़ाई पर आकर लगा। जिससे घी से भरी हुई कढ़ाई गिर गई। ऐसे में ओमप्रकाश के जहां एक पैर झुलस गया। वहीं नीचे बैठे संजय के शरीर पर घी गिरने से वह बुरी तरह झुलसा है। घटना के बाद अन्य स्टाफ और शादी समारोह के घर के लोगों ने दोनों घायल हलवाइयों को शहर के सामान्य अस्पताल पहुंचाया। जहां उनका उपचार चल रहा है।

शिक्षक कर्मचारियों के अवकाश स्वीकृति के अधिकार संस्था प्रधानों को दिए जाएं

राजस्थान पंचायती राज एवं माध्यमिक शिक्षक संघ ने कलक्टर को सौंपा ज्ञापन

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। राजस्थान पंचायती राज एवं माध्यमिक शिक्षक संघ के एक प्रतिनिधिमंडल ने प्रदेश महामंत्री राजेश शर्मा की अगुवाई में जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलक्टर श्रीनिधि बीटी से मुलाकात कर आचार संहिता के दौरान शिक्षक कर्मचारियों के आकस्मिक अवकाश स्वीकृत करने के अधिकार पूर्व की भांति संस्था प्रधान व कार्यालय अध्यक्षों को दिए जाने की मांग की है। संघ के जिला अध्यक्ष हरी सिंह गुर्जर ने बताया कि जिला कलक्टर को प्रेषित ज्ञापन में लिखा है कि लोकसभा चुनावों के मद्देनजर रखते हुए जिले के अधिकारी कर्मचारियों के अवकाश व मुख्यालय छोड़ने पर प्रतिबंध लगाया गया है और बिना उप खंड अधिकारी, जिला निर्वाचन अधिकारी की अनुमति के किसी भी अधिकारी कर्मचारी के अवकाश पर नहीं जाने की आदेश जारी किए गए थे।ज्ञापन में लिखा है कि करौली धौलपुर लोकसभा क्षेत्र में मतदान प्रथम चरण में संपन्न हो चुका है। ऐसे में शादी विवाह के मौसम में दूर दराज के स्कूलों कार्यालयों से अवकाश स्वीकृत कराने के लिए शिक्षक कर्मचारियों को अपने अपने उपखंड मुख्यालय आने-जाने में बेहद परेशानी उठानी पड़ती है। संघ ने जिला निर्वाचन अधिकारी से शिक्षक कर्मचारियों के आकस्मिक अवकाश स्वीकृत करने के अधिकार पहले की भांति संबंधित संस्था प्रधान व कार्यालय अध्यक्षों को दिए जाने की मांग की है। प्रतिनिधिमंडल में जिलामंत्री चंद्रशेखर शर्मा, आमोद श्रीवास्तव, दिनेश शर्मा,भानु प्रताप परमार, विनोद सारस्वत, रविंद्र कुमार, कुलदीप शर्मा सहित कई पदाधिकारी मौजूद रहे।

राजाखेड़ा में 30 अप्रैल को निकाली जाएगी शोभायात्रा

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

राजाखेड़ा। श्री हनुमान जयंती महोत्सव समिति के मीडिया प्रभारी रवीन्द्र सिंह चौहान एंड. द्वारा बताया गया कि इस बार श्री हनुमान जी का जन्मोत्सव विधि-विधान धूमधाम से उनके जन्मदिवस चैत्र शुक्ल पक्ष 15 को दिनांक 23/04/24 को हाट मैदान मैहतेकी के पावन धाम मंदिरपर मनाया जावेगा, जिसमें सुन्दर काण्डपाठ,हवन आदि संपादित किए जावेगा। उक्त धार्मिक आयोजन में सर्वसाधारण सादर आमंत्रित है श्री हनुमान जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में दिनांक 30/04/24 दिन मंगलवार को भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। जिसमें 3,तीन दर्जन झांकियां, 1 एक दर्जन बैंड वाजे, 3 तीन कीर्तन मंडलीया? भाग लेंगी जिसमें राजस्थान उत्तर प्रदेश के प्रख्यात बैण्ड, ढोल नगाड़े, आकर्षक झांकियां, एवं कलाकारों द्वारा भारतीय सनातन संस्कृति मनमोहक प्रस्तुतियां देखने को मिलेंगी।आप सबकी उपस्थित कार्यक्रम को नई उर्जा एवं सौंदर्य प्रदान करेंगी, हनुमान जयंती महोत्सव कमेटी समाचार पत्र के माध्यम से सभी महानुभावों से आग्रह करती है के 30 अप्रैल को राजाखेड़ा पधारकर भव्य शोभा यात्रा में शामिल होकर के शोभा यात्रा मैं निकल जा रही झांकियां के दर्शन कर पुण्य का लाभ प्राप्त करें।

धौलपुर में हनुमान जयंती की शोभायात्रा 27 को निकाली जायेगी

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

धौलपुर। धौलपुर में श्री हनुमान जी की भव्य विशाल शोभा यात्रा 27 अप्रैल को निकलेगी। कमेटी अध्यक्ष नेता प्रतिपक्ष पार्षद कुक्कू शर्मा ने बताया की धौलपुर के हनुमान जी का विशाल ऐतिहासिक मेला 100 वर्ष से अधिक पुराना है।शोभा यात्रा को हर वर्ष भव्य निकाला जाता है हर्ष वर्ष की भांति इस वर्ष भी हनुमान जी की विशाल शोभा यात्रा भव्य निकाली जाएगी। मेला संयोजक कपिल अग्रवाल, शुभम कटारा ने बताया की शोभा यात्रा मैं मेरठ, मैनपुरी, आगरा धौलपुर, मुरैना के 10 बैंड एवं नासिक के ढोलो की धुन रहेगी तथा वृंदावन एटा, मैनपुरी आगरा, ग्वालियर, धौलपुर एवम केरल की 50 झांकियां शोभायात्रा का आकर्षण का केंद्र रहेंगी एवं मैनपुरी इटावा एटा के रोड शो मेले की शोभा को बढ़ाएंगे। इस दौरान भोला गुप्ता, नितिन बंसल, सौरव अग्रवाल, बबरी हुंडावल, तुषार, मनोज आदि उपस्थित थे।

वनस्पति विज्ञान स्नातक प्रथम वर्ष सेमेस्टर प्रथम की प्रायोगिक परीक्षा कल से

धौलपुर। राजकीय महाविद्यालय धौलपुर के विज्ञान स्नातक प्रथम वर्ष सेमेस्टर प्रथम के परीक्षार्थियों की वनस्पति शास्त्र की प्रायोगिक परीक्षा 24 अप्रैल 2024 बुधवार से महाविद्यालय में आयोजित होंगी।संबंधित परीक्षार्थी प्रायोगिक परीक्षा के बैच एवं समय सारिणी हेतु वनस्पति विज्ञान विभाग में आवश्यक रूप से संपर्क करें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक - चन्द्रप्रकाश शिवहरे के लिए आकाशदीप प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, सेक्टर 11 अग्रवाल फार्म, जयपुर (राज.) राजस्थान से मुद्रित एवं जी-१, गंगासागर अपार्टमेंट, बी-192, गंगासागर कॉलोनी, आम्रपाली मेन रोड, वैशाली नगर जयपुर (राज.) से प्रकाशित आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2013/48948
प्रधान सम्पादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे मोबा. 9425126060 । स्थानीय संपादक गौतम गोस्वामी मोबा. 9772455444, प्रबंध संपादक बेनी प्रकाश खोरानिया मोबा. 9549977995 : पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए स्थानीय सम्पादक जिम्मेवार। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर न्यायालय होगा।